झील के उस पार

"आज तुम देख सकती तो..." समीर के इस कथन पर नीलू धीरे से बोली—"अच्छा ही हुआ जो मुझे रोशनी नहीं मिली, वरना आपकी हमदर्दी खो देती !" इसपर भाव-विभोर होकर समीर ने कहा—"लेकिन उसके बजाय तुम्हें प्यार मिल जाता नीलू !..." सुनकर नीलू के कानों में शहनाई के स्वर गूंजने लगे । लाज से उसका सिर झुक गया...

अनोखी परिस्थितियों पर लिखा, आपके प्रिय लेखक गुलशन नन्दा का यह नया उपन्यास मनुष्य की लालसाओं के अत्यन्त रंगबिरंगे चित्र प्रस्तुत करता है ।

हमारे समाज का बहुरंगी चित्र
आपके प्रिय लेखक की लेखनी से
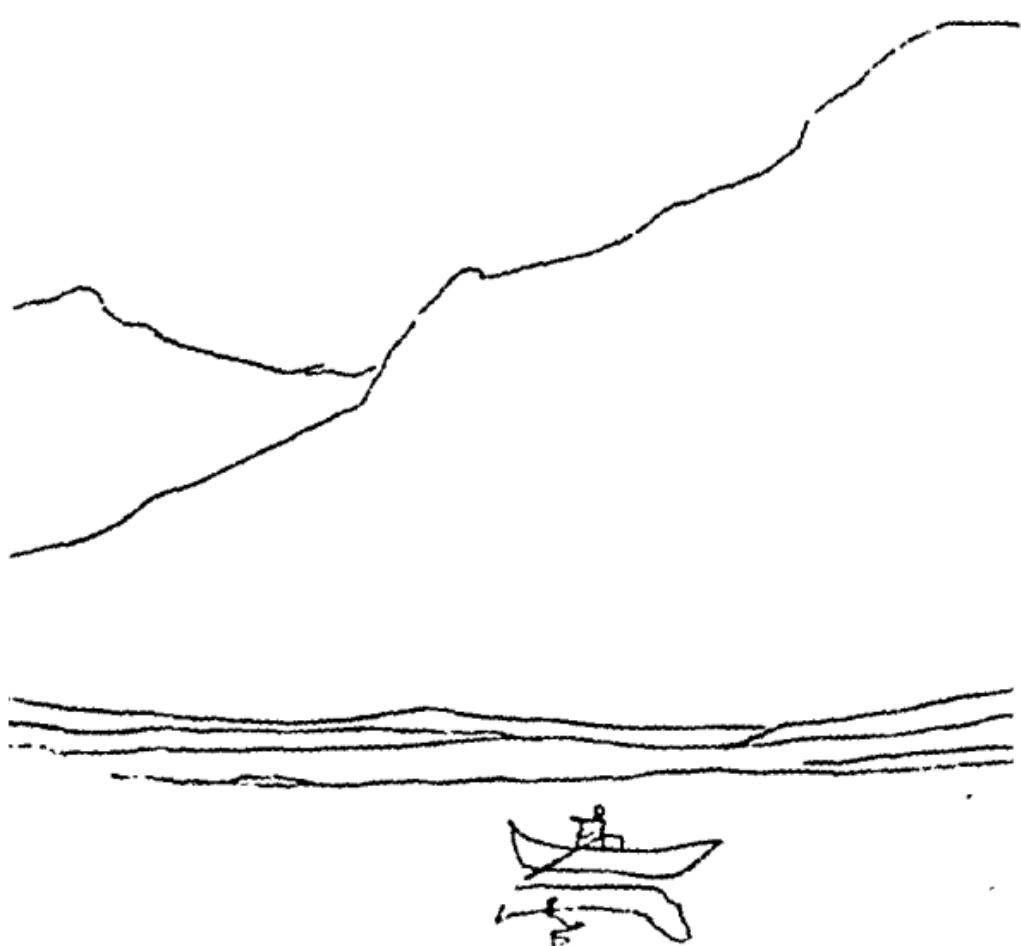
हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटिड
जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२

झील के उस पार

गुलशन नन्दा

JHEEL KE US PAAR

NOVEL

GULSHAN NANDA

मूल्य : तीन रुपये

लेखक की ओर से दो शब्द

प्रिय पाठक बन्धु,

यह मेरा सौभाग्य है कि आप सबके सहयोग एवं विश्वास के कारण मेरा नाम आज भारत के एक छोर से दूसरे छोर तक, बल्कि विदेशों में बसने वाले हिन्दी पाठकों में भी, प्रिय है। यह भी आपके सहयोग एवं स्नेह का फल है कि पिछले वर्ष प्रकाशित मेरे उपन्यास 'चिनगारी' की छः मास में तीन लाख से भी अधिक प्रतियां बिकीं और इस प्रकार इस उपन्यास को आज तक के सभी हिन्दी उपन्यासों में सर्वाधिक बिकने वाली पुस्तक होने का गर्व प्राप्त हुआ। अब यह नया उपन्यास 'झील के उस पार' आपके हाथों में है। मुझे आशा है कि इसे भी आप अपनी आशाओं के अनुकूल पाएंगे।

किन्तु इतनी अधिक लोकप्रियता कभी-कभी परेशानी का कारण भी बन जाती है। तीन-चार वर्षों तक मेरे नाम से प्रकाशित जाली उपन्यासों ने मेरे मन को अशान्त बनाए रखा। केन्द्रीय गुप्तचर विभाग, पाठकों एवं विक्रेताओं के अमूल्य सहयोग ने मुझे अब जाकर इस अशान्ति से मुक्ति दिलाई है।

अब एक नया लाछन इस लोकप्रियता के कारण मुझपर लगाया जा रहा है। मेरे उपन्यासों के बारे में कुछ तथाकथित आलोचक तथा लेखक यह भ्रम फैला रहे हैं कि मेरी लोकप्रियता अश्लील एवं सेक्स से भरपूर उपन्यास लिखने से हुई है। यह एक अजीब बात है कि मेरे उन उपन्यासों में भी, जिनमें रोमांस न के बराबर है साहित्यकारों को अश्लीलता दिखाई देती है। सम्भव है, मेरी कुछ प्रारम्भिक रचनाओं में, जो मैंने विद्यार्थी-जीवन में लिखी थीं, रोमांस का अंश कुछ अधिक हो, किन्तु बाद में लिखे गए मेरे अधिकतर उपन्यासों के सम्बन्ध में इस प्रकार का आरोप उचित नहीं। ऐसा प्रतीत होता है, जैसे उन्होंने मेरे उपन्यास पढ़े बिना इस प्रकार के छींटे कसे हैं।

जब तक मुझे अपने पाठकों का स्नेह एवं विश्वास प्राप्त है, इस प्रकार के लाछन मुझे निरुत्साह नहीं कर सकते। फिर भी मेरे आलोचकों से मेरा निवेदन है कि यदि वे मेरे उपन्यास पढ़कर स्वस्थ आलोचना करें तो मेरे लिए वह पथ-प्रदर्शक हो सकती है। लोक-

प्रियता के कारण यह अनुमान लगा लेना कि उपन्यास अश्लील होगा—सरासर अन्याय है, जिसके बारे में मैं इतना कह सकता हूं कि कोई भी पुस्तक लाखों की संख्या में तभी बिक सकती है यदि वह हर घर में खुलेआम पढ़ी जा सके। अश्लील पुस्तक न मां बेटी के सामने पढ़ सकती है, न पिता पुत्र के सामने। मुझे संतोष और प्रसन्नता है कि मेरी रचनाएं परिवार के सभी सदस्य एक-दूसरे से छुपाए बिना पढ़ते हैं।

अब तक मेरी निम्नलिखित ३१ पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, जिनके नाम लगभग उसी क्रम से दिए जा रहे हैं, जिस क्रम से उनका प्रकाशन हुआ—

१. घाट का पत्थर
२. जलती चट्टान
३. गेलार्ड
४. सूखे पेड़ सब्ज़ पत्ते
५. काली घटा
६. नीलकण्ठ
७. राख और अंगारे
८. माधवी
९. पत्थर के होंठ
१०. एक नदी दो पाट
११. डरपोक
१२. मैं अकेली
१३. गुनाहों के फूल
१४. तीन इक्के
१५. सितारों से आगे
१६. देवछाया
१७. अंधेरे चिराग
१८. नीलकमल
१९. टूटे पंख
२०. शीशे की दीवार
२१. सांझ की वेला
२२. सिसकते साज़
२३. कांच की चूड़ियां
२४. कलंकिनी
२५. मैली चांदनी
२६. सांवली रात
२७. कटी पतंग
२८. गली-कूचे (संपादित कहानियां)
२९. प्यासा सावन
३०. चिनगारी
३१. झील के उस पार

मैं पाठकों से अनुरोध करूंगा कि वे मेरे इस नवीनतम उपन्यास को पढ़कर सदा की तरह मुझे अपने विचार लिखें। साथ ही मैं उनके भरपूर स्नेह के लिए आभार प्रदर्शित करता हूं।

७, शीश महल, ५-ए, पाली हिल्ज़,
बांद्रा, बम्बई—५०
१५-२-१९७१

आपका
गुलशन नन्दा

◆

झील के उस पार

शेरू ने सुबह की तेज और सर्द हवा से बचने के लिए जैसे ही अपने झोपड़े की खिड़की को बन्द करना चाहा वैसे ही वह ठिठक-कर रुक गया। राजमहल का मुख्य द्वार, जो पिछले सात बरसों से बन्द था, आज खुला हुआ था। वह यह देखकर असमंजस में पड़ गया। उसने अपने चेहरे को गरम मफलर में अच्छी तरह ढाप लिया और शीघ्रता से बाहर निकल आया।

वह सीधा राजमहल के मुख्य द्वार तक चला आया। फिर धीरे-धीरे कदम उठाता हुआ वह महल की उस ऊपरी मंजिल तक पहुंच गया, जो हवाघर के नाम से प्रसिद्ध थी। उसके किवाड़ खुले देखकर वह आश्चर्यचकित खड़ा रह गया। उसने अपनी सांस रोक ली और चुपके-चुपके अन्दर की ओर झांकने लगा। अन्दर एक अजनबी को देखकर वह आश्चर्य से वहीं जड़वत् हो गया। वह व्यक्ति पिछवाड़े की खिड़की से शायद उस झील को देख रहा था, जो उस महल की सुन्दरता मे चार चांद लगाए हुई थी।

अधेड़ अवस्था का वह व्यक्ति होंठों मे पाइप दबाए हल्के-हल्के कश खींच रहा था। पाइप का धुआं उड़ते ही खिड़की के बाहर छाई धुंध में विलीन हो रहा था। शेरू ने अपनी कमर में बंधी तेज़ कटारी को उंगलियों से टटोला और अजनबी को घूरकर देखने लगा।

अजनवी ने अंग्रेजी ढंग के कपड़े पहन रखे थे और यह देखकर शेरू सोच में पड़ गया था कि इस समय राजमहल में कौन आ सकता है।

"क्या सोच रहे हो, शेरसिंह ?" अजनवी ने शेरू की ओर विना देखे ही कहा।

अजनवी के मुंह से अपना नाम सुनकर शेरू उछल पड़ा और हड़वड़ाकर तेजी से पूछ उठा—"कौन हो तुम ?"

अजनवी ने पलटकर देखा।

शेरू की दृष्टि जैसे ही उस अजनवी के चेहरे पर पड़ी, वह एकदम वोल उठा—"मालिक, आप ?"

"हां, मैं।" अजनवी ने कहा—"अपने मालिक को इतनी जल्दी भूल गए, शेरसिंह ?"

"नहीं तो, सरकार !" शेरसिंह ने उत्तर दिया—"वास्तव में आपको छः-सात वरस के वाद अचानक ही देखा···।"

"तो पहचान न सके···है न ?"

"जी, सरकार!" शेरसिंह ने नम्रता से कहा—"आप कुछ वदले-वदले-से दिखाई दे रहे हैं।"

"हां, शेरसिंह, जीवन रग न वदले तो एक जगह ठहर जाता है, ठीक इस झील की तरह, जो वरसों से चुपचाप पहाड़ों की गोद में लेटी आराम कर रही है···एक ऐसी नींद सो रही है, जो कभी नहीं टूटेगी···!" कहकर वह चुप हो गया और एक लम्वी जमुहाई लेकर पाइप के कश खींचने लगा।

अपने मालिक की यह कविता शेरू के पल्ले न पड़ी। इसके पूर्व कि वह कोई दूसरी दार्शनिक वात कहे और शेरू को वगलें झांकनी पड़ें, शेरू पूछ उठा—"कव आए, सरकार ?"

"रात को।"

"मुझे खवर कर दी होती···।"

"तुम्हें नींद में वेखवर देखकर जगाना उचित न समझा।"

"यह तो आपका अधिकार है, सरकार," शेरू ने तनिक झुककर

कहा—"आखिर पगार किस बात की पाता हूं !"
"लेकिन मैं किसी गरीब की नींद हराम करके नमकहलाली का अधिकार नहीं चाहता···।"
शेरू ने दृष्टि उठाकर देखा। उसके मालिक के होठों पर एक हल्की-सी मुस्कराहट उभर आई थी, जो पलभर में ही विलीन हो गई। शेरू झट से दूसरा सवाल पूछ उठा—"माजी कैसी हैं ?"
"अपनी जागीर देखने की चाह में जी रही हैं···।"
यह कहकर वह घूमा और बुझे हुए पाइप को सुलगाने लगा।
शेरू ने अपने मालिक के दिल में छिपे दर्द को अनुभव करने का प्रयत्न किया और चुपचाप पलटकर जाने लगा। मालिक की आवाज ने फिर उसके पैर बांध दिए—"कहां चल दिए ?"
"बाज़ार···आपके लिए नाश्ते का प्रबंध जो करना है···।"
"रहने दो, शेरसिंह, अब तो इस चारदीवारी में दम घुटता है। जीने का सामान क्या करेंगे···।"
शेरू रुक गया और मालिक की ओर देखकर उसने कुछ कहना चाहा। शेरू की हिचकिचाहट को अनुभव करके वह उसके निकट चला आया और बोला—"कुछ कहना चाहते हो ?"
"हां, मालिक···बस्ती के लोग चर्चा करने लगे हैं इस हवेली को···।"
"चर्चा गलत नहीं है, शेरसिंह," वह बोला—"हमने इस हवेली को बेचने का निर्णय कर लिया है।"
"ऐसा मत सोचिए, सरकार," शेरू तुरन्त कह उठा—"पुरखों की इस निशानी से ही तो इस घराने का नाम चलता है···यह मिट गई तो···।"
"तो क्या होगा ?"
"तो···तो···।"
"कुछ नहीं होगा, शेरसिंह ! ···संसार के झंझावातों ने न जाने कितनी स्मृतियां, कितनी हवेलियां, कितने नाम और चिह्न मिटा

डाले, लेकिन सांसारिक व्यापार में कोई अंतर नहीं आया…कोई बाधा नहीं पड़ी…कितनी ही बड़ी-बड़ी हस्तियां बलिदान हो गईं, और…उनकी परछाइयां तक शेष न रहीं…।"

"नहीं, मालिक, ऐसा न कहिए…यह सब कुछ मिट जाता है, लेकिन जीवन इन्हीं यादों के सहारे सांस लेता है…भूली-बिसरी कहानियों को गले लगाने की चाह रखता है…।"

"शेरसिंह!" अचानक ही सरकार गरज उठे और शेरसिंह कांपकर रह गया। उसने आदर से सिर झुका लिया और सरकार तेजी से बाहर चले गए।

शेरू ने एक गहरी सांस ली और खिड़की के पास चला आया। दूर-दूर तक धुंध छाई हुई थी। उसने ऐसा अनुभव किया जैसे उसके मालिक का जीवन भी धुंध में लिपटा हुआ है, सामने धुंध में लिपटी हुई पहाड़ियों की तरह…सूरज की किरणों से वंचित अंधकार में डूबा हुआ…

समीर आज पूरे सात बरस बाद कंगन घाटी में आया था। उसका अनुमान गलत न था। पिछले सात बरसों में कुछ भी तो न बदला था। वही धुंध से ढकी पहाड़ियां, वही नीरव और निर्जन रास्ते, वही शांत झील, वही टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडियां, जो दूर जाकर एक ही स्थान पर मिल जाती थीं।

वह धुंध की श्वेत चादर को चीरता हुआ उस झील की ओर बढ़ता जा रहा था, जिसकी स्मृतियों के साथ उसका जीवन जुड़ा हुआ था। आज भी उसे ऐसा अनुभव हुआ जैसे इस घाटी की रानी झील के किनारे बैठी एक ऐसा गीत छेड़े हुए है, जिससे समस्त घाटी गूंज रही है। एक विचित्र आकर्षण से उसके पैर झील की ओर बढ़ रहे थे।

सूरज की किरणों ने जैसे ही झील की सतह को छुआ वैसे ही धुंध के बादल छंटने शुरू हो गए। श्वेत धुआं वातावरण में मिलकर अपना अस्तित्व खोने लगा। धुंध के विलीन होते ही गीत भी बंद

हो गया और वातावरण मे नीरवता व्याप्त हो गई। चीड़ के ऊंचे पेड धुंध से नहाए शात खडे थे। भीगे हुए पत्ते सूरज की किरणों से चमक रहे थे। सामने ही वह श्यामल चट्टान थी, जिसके आचल से झील का पानी बार-बार टकरा रहा था।

समीर झील के किनारे गुमसुम खड़ा उस चट्टान पर दृष्टि जमाए हुए था, जो जीवन के अनेक बरस बीत जाने पर भी उसी तरह पानी के वेग का सामना कर रही थी। उसे वह दिन याद आ गया जब पहली बार उसने घाटी की रानी को उस चट्टान पर बैठे हुए देखा था। उसके दिल मे इस कल्पना से एक हूक-सी उठी और उसने अपनी आखें बद कर ली। उसका दिमाग साय-साय कर रहा था, उसका दिल जैसे किसीने मुट्ठी मे भीच लिया था। अचानक उसने अपने चेहरे को दोनों हाथो मे छिपा लिया और उस ओर से मुह मोड लिया।

तभी उसके कानों में एक आवाज़ गूजी—जैसे किसीने झील के शात पानी मे कंकड फेंक दिया हो। इसके साथ ही वातावरण में हंसी का एक फव्वारा फूट पड़ा। एक मधुर झंकार से समीर का हृदय आन्दोलित हो उठा। उसने घबराकर उधर देखा तो सामने चट्टान पर नीलू बैठी थी। वह आज भी पहले की तरह आटे की छोटी-छोटी गोलिया झील मे फेंककर मछलियो को खिला रही थी और आनदित हो रही थी। जब मछलिया उन गोलियों को खाने के लिए एकसाथ उछलती तब ऐसा लगता जैसे शांत झील मे चांदी के कई छोटे-छोटे झरने एकसाथ फूट रहे हो।

समीर धीरे-धीरे खिसकता हुआ उस चट्टान के निकट पहुच गया और जैसे ही उसने नीलू की ओर अपना हाथ बढाया वैसे ही उसकी कल्पना बिखर गई। वहा उस समय कोई भी न था—थी तो केवल नीलू की स्मृति, जो पलक झपकते ही विलीन हो गई। किन्तु वह उस कल्पना को—स्मृतियो के उस सुन्दर सपने को इस तरह तोड़ना न चाहता था। वह सपनो के उस स्वर्ग मे लौट जाना

उसने युवती से उसी तरह आटे की गोलियां झील में फेंकने के कहा और जल्दी-जल्दी उस सुन्दर दृश्य को अपने रंगों में ने लगा। आज उसकी उंगलियां ईज़ल पर बड़ी फुर्ती और ाई से चल रही थीं। और उसे ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे अपने जीवन की श्रेष्ठतम रचना निर्मित करने जा रहा हो। त्र बनाते समय वह उससे बातें करता जाता ताकि उसका मन व न जाए।

"क्या नाम है तुम्हारा?"

"नीलू।"

"कहां रहती हो तुम?"

"झील के उस पार···बस्ती में···।"

"इतनी दूर अकेली चली आती हो···?"

"हां, बाबू।" वह बोली—"हर सुबह सूरज का गोला जब ऊपर उठता है तब सारी घाटी उससे प्रकाशित हो जाती है और चारों ओर सोना-सा बिखर जाता है। और, एक जादू-सा मुझे यहां खींच लाता है।"

"सच?"

"हां, प्रकृति की यही छटा मुझे बहुत आकर्षित करती है···।"

"बस्ती में भी अकेली ही रहती हो?"

"नहीं बाबू···मां है, बापू है और···और···।"

"और कौन?"

"और बस्ती वाले हैं।"

"ओह! ···अच्छा तो तुम्हारे बापू क्या करते हैं?"

"दो घोड़ों के मालिक हैं मेरे बापू···दूर पहाड़ी की उस बर्फीली चोटी पर शिवजी का मंदिर है ना···।"

"है तो···।" समीर ने एक सरसरी दृष्टि पहाड़ी पर डालते हुए कहा।

"वहीं जाता है मेरा बापू यात्रियों को लेकर···।"

"ओह, समझ गया !"

वह फिर तेज़ी से ब्रुश चलाने लगा। बातों ही बातों में वह उससे इस प्रकार घुल-मिल गई जैसे वह उसे बरसों से जानती हो। समीर अचानक चुप हो गया तो वह पूछ बैठी—"क्यों बाबू, मेरी बातें अच्छी नहीं लगीं ?"

"नहीं, ऐसी बात नहीं···।" वह जल्दी से बोला।

"तो चुप क्यों हो गए ?"

"ओह, मैं तनिक खो गया था···!"

"कहां ?"

"तुम्हारी सुन्दर छवि मे···।"

यह सुनकर नीलू कुछ सोच मे पड़ गई और अचानक ही पूछ बैठी—"बन गया मेरा चित्र ?"

"नही, अभी अधूरा है···।"

"तो, बाकी कल बना लेना···मुझे अब देर हो रही है।"

"नहीं, नीलू, थोड़ी देर और रुक जाओ···चित्र अधूरा रह गया तो शायद फिर न बन सके !"

"क्यों ?"

"चित्र तो बार-बार बन जाते हैं, किन्तु उसमे जीवन एक ही बार डाला जाता है···।"

नीलू लजा गई और पलकें झुकाकर मछलियों की ओर आकर्षित हो गई। समीर भी जल्दी-जल्दी ब्रुश चलाने लगा। किन्तु यह मौन नीलू को खलने लगा। वह समझ नही पा रही थी कि उस अजनबी से वह इतनी प्रभावित क्यों हुई जा रही थी। वह चाहती थी कि समीर उससे बस बोलता ही रहे।

"तुमने अपना नाम तो बताया ही नही···!" अचानक ही उसने मौन भंग करते हुए प्रश्न किया।

"समीर···समीर राय।"

"कहां रहते हो ?"

"सौंदर्य की खोज में भटकता रहता हूं···जहां मिल गया, अपने रंगों में उतार लेता हूं।"

समीर ने चित्र को समाप्त किया और एक गहरी दृष्टि से उसे जांचा। फिर पलटकर उन आकुल आंखों की ओर देखा, जो अपना चित्र देखने के लिए व्याकुल-सी हो रही थीं।

"लो, बन गया···।" समीर ने चित्र पर ब्रुश से आखिरी टच देते हुए कहा और चित्र को थामे हुए उसके पास चला आया।

नीलू मुड़कर उखड़ी हुई दृष्टि से चित्र को देखने लगी। समीर मुसकराया और बोला—"नीलू, तुमने आज तक अपने-आपको दर्पण में देखा होगा···आज इन रंगों में देखो···कितनी खूबसूरत हो तुम!"

"सच! कहां है वह चित्र?"

"तुम्हारे सामने···यह देखो···।"

नीलू ने चित्र को अपने हाथों में ले लिया और गौर से देखने लगी। तभी समीर ने अनुभव किया कि अचानक ही उसकी आंखों में निराशा की परछाई उभर आई है। एकाएक नीलू के हाथ कंप-कंपाए और होंठों पर एक थरथराहट-सी पैदा हुई। उसके हाथों से चित्र छूट गया और वह ज़ोर से चिल्ला उठी—"नहीं, बाबू, नहीं···।"

"क्या हुआ, नीलू?" समीर ने घबराकर पूछा।

"मैं यह चित्र नहीं देख सकती···।"

समीर ने झपटकर चित्र को उठा लिया और आश्चर्य से बोला—"क्यों, लेकिन क्यों···?"

"मैं अंधी हूं···मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा···।"

"नहीं!" समीर चिल्ला पड़ा। फिर गौर से उन खूबसूरत आंखों को देखा, जो वास्तव में पथराई-सी लग रही थीं। वह इस सत्य को स्वीकार न कर पा रहा था।

नीलू ने उसकी ओर पीठ [illegible] तो वह [illegible] उसके सामने

श्राया और बोला—"नहीं, नील्, यह झूठ है···तुम अंधी नहीं हो··· भगवान एक भोलीभाली लड़की से इतना भयंकर मजाक नहीं कर सकता!"

"यह सच है, बाबू···मैं अंधी हूं···।"

"लेकिन अभी तो तुम इस घाटी की सुन्दरता, सूरज की सुनहरी किरणों और तैरती मछलियों के खेल-कूद का वर्णन कर रही थीं···।"

"वे तो मन की आखें हैं, जो सब कुछ देख लेती हैं···जानते हो बाबू, जब तुमने चित्र बनाने के लिए मुझसे पूछा तब मेरे मन ने क्या देखा···?"

"क्या ?"

"यही कि तुम शहरी हो और दिल के अच्छे हो···तभी तो मैं इनकार न कर सकी।"

नील्‌ की बातों में छिपी पीड़ा को लक्ष्य करते ही समीर तड़प उठा। उसका हृदय उस लाचार और भोली बाला के लिए हाहाकार कर उठा, किन्तु इस अजनबी लड़की का दर्द बांटने का उसे क्या अधिकार है, वह सोचने लगा। नील्‌ तेज़ी से मुड़कर एक पगडंडी पर हो ली। समीर उसे चीड़ के पेड़ों के बीच से जाते देखता रहा। वह शीघ्रता से झील के उस पार अपनी बस्ती की ओर जा रही थी। वह उसे रोकना चाहकर भी न रोक सका; और दूर पगडंडी पर जब वह अदृश्य हो गई तब समीर ने जेब से रूमाल निकालकर अपनी भीगी आखों पर रख लिया। फिर वह बड़ी देर तक गुमसुम खड़ा कुछ सोचता रहा। ईश्वर भी कितना निर्दयी है, जो सब कुछ देकर भी कुछ छीन लेता है। अचानक ही समीर ने एक लम्बी सांस ली और उसके कदम उस पगडंडी की ओर मुड़ गए। थोड़ी दूर पर वह फूल पड़ा हुआ था, जो उसने नील्‌ के बालों में लगाया था। उसने झुककर वह फूल उठा लिया और आकाश के बदलते हुए रंगों को देखने लगा।···फिर जैसे ही उसने वह फूल अपने होंठों से लगाया, नील्‌ की भोली सूरत उसकी आखों के सामने घूम गई!

२

दिनभर की आउटिंग के बाद समीर घर लौटा तो उसके दिल में एक अजीब-सी खुशी थी। उस चित्र को अपने रंगों में ढालकर उसकी बेचैनियां न जाने मस्तिष्क के किन अंधेरे कोनों में डूब चुकी थीं। कल्पनाओं में यदि किसीकी परछाईं थी तो बस नीलू की। न जाने वह भोलाभाला चेहरा चुपचाप उसके खयालों में कैसे आ बसा था।

इसी धुन में वह मुख्य द्वार को लांघता हुआ ऊपरी मंज़िल की ओर जाने लगा। उसके कदम अचानक किसी स्वर को सुनकर रुक गए। उसने पलटकर दाएं-बाएं देखा तो एक लड़की को अंगीठी के समीप बैठे और सर्दी से बचने के लिए हाथ तापते हुए पाया। समीर के कदमों की आहट को सुनकर, लड़की चौंकी और पलटकर देखने लगी।

"जुगनू!" समीर के होंठों से अनायास ही निकला और वह वहीं रुक गया।

जुगनू ने अपनी कुर्सी छोड़ दी और तेज़ी से बढ़कर समीर का स्वागत किया। समीर को देखकर उसका चेहरा खुशी से खिल उठा।

"तुम कब आईं, जुगनू?" समीर ने प्रश्न किया।

"दोपहर के प्लेन से।"

"मांजी और दीवानजी कहां हैं?"

"किसी काम से बस्ती के मुखिया से मिलने गए हैं।"

"ओह! कहो, यात्रा कैसी रही?"

"एकदम बोर!"

"तो क्यों ?"

"कोई अपना साथी जो न था..."

"मुझ जैसी आदत डाल लो ना...अकेलापन अपना लो...।"

"कौन कहता है तुम अकेले हो...!"

"तो क्या...!"

"हर समय कोई न कोई कल्पना संग जो रहती है तुम्हारे... यानी तुम्हारी ड्रॉंगी...।"

"तुम्हारा विचार असंगत नहीं, जुगनू...इस बार की कल्पना ही अनूठी है। ऐसा चित्र बना है कि कालेज की प्रदर्शनी में धूम मच जाएगी।"

"वह तो मैं जानती थी... इतनी रमणीक घाटी और सुन्दर वातावरण को देखते ही तुम अनूठी कल्पना करने लगोगे...।"

"इरादा तो यही था, जुगनू, किन्तु ऐसा न हो सका।"

"क्यों ?"

"याद है तुमने एक बार कहा था...जीवन की गहराई जितनी पोर्ट्रेट में उजागर हो सकती है उतनी प्रकृति के दृश्यों में नहीं...।"

"हां, तो...।"

"इस बार मैंने एक मानवीय रूप को चित्रित किया है।"

"कौन है वह ?"

"एक पहाड़ी युवती।"

"कहां मिली ?"

"झील के उस पार।"

"मुझे नहीं दिखाओगे वह चित्र...!"

"ऊहूं, अभी नहीं...चित्र अधूरा है।" समीर ने कहा—"पूरा होते ही पहले तुम्हारी राय जानना चाहूंगा।"

"प्लीज...दिखाइए ना...।" कहते हुए जुगनू ने उसके हाथों से चित्र छीनना चाहा। समीर के इनकार पर उसने और ज़िद की, परन्तु चित्र देखने में वह सफल न हो सकी। जुगनू अपनी इस अस-

कल्पना पर झुंझला उठी और अपने कमरे की ओर चली गई। समीर ने उसे रोकना चाहा, किन्तु वह न रुकी।

उसी समय दरवाज़े पर आहट हुई और समीर ने पलटकर देखा। मां और दीवानजी लौट आए थे। उसने चित्र को सोफे पर रख दिया और लपककर मां के पैरों की ओर झुक गया। इससे पूर्व कि मां उसके बारे में कोई प्रश्न करे, वह बोला—"कहां थीं मां तुम ?"

"बस्ती में मुखिया से मिलने गई थी।"

"वहां जाने की क्या आवश्यकता थी···मुखिया को यहीं बुलवा लिया होता···?"

"वह बीमार था। सोचा, देख भी आऊं और प्रताप के नये कारनामे भी उसके कानों तक पहुंचा आऊं।"

"क्या किया है प्रताप ने ?"

"जंगल वाली जमीन को खाली करने से इनकार कर दिया है।"

"लेकिन अदालत तो अपना निर्णय दे चुकी है···।"

"वह किसी अदालत या कानून की परवा नहीं करता···गुण्डा-गर्दी से काम लेना चाहता है।" मां के बजाय दीवानजी बोल पड़े।

"तब तो यही अच्छा होगा, हम भूल जाएं कि वह ज़मीन हमारी है···।"

"यह तू क्या कह रहा है !" मां ने चमककर कहा।

"कानून की बात नहीं, मां, मैं रीति-रिवाजों की बात कर रहा हूं। वह बुरा सही, लेकिन है तो मेरा भाई···।"

"मेरी सौत का बेटा···हमारा दुश्मन···तू उसे भाई कहता है !"

"आपकी सौत का नहीं, मेरे पिताजी का कहिए···आख़िर उनकी रगों में भी तो वही खून दौड़ रहा है, जो मेरी रगों में है···।"

"लेकिन यह मत भूल कि वह अपने जीते-जी उस दुष्ट को जायदाद से बेदखल कर गए थे।"

"मैं जानता हूं, मां।" "और, यह भी जानता हूं कि चार बरस तक प्रताप ने हमें मुकदमेबाजी में चैन नहीं लेने दिया।"

"इसपर तू उसे दया का पात्र समझता है?"

"नहीं, दया के लिए नहीं···जो भूल उसने की है, मैं दोहराना नहीं चाहता। भाई से शत्रुता करके मैं खुद अपनी निगाहों में गिरना नहीं चाहता।" समीर ने निर्णयात्मक ढंग से कहा और मां तथा दीवानजी का उत्तर सुने बिना ही ऊपरी मंजिल की सीढ़ियों की ओर बढ़ गया।

दीवानजी और मां ठगे-से उसे जाता देखते रहे। मां अपने बेटे की उदारता और सद्‌भावना से क्षणभर के लिए प्रभावित हो उठीं। फिर दीवानजी से बोलीं—"अब आप ही बताइए, मैं कैसे मनाऊं उसे! यह तो बुराई को भी बुराई नहीं समझता। डरती हूं···जो कुछ इतनी कठिनाई से पाया है, इसकी उदारता से खो न बैठूं।"

"घबराइए नहीं, रानी मां, कलाकार का हृदय है···धीरे-धीरे एक जमींदार का दिल बन जाएगा।"

"यह असम्भव है, दीवानजी, मैं समीर को अच्छी तरह जानती हूं।"

"समय और उत्तरदायित्व का बोझ रंग लाए बिना नहीं रहता, रानी मां।"

"वह समय कब आएगा?"

"बहुत जल्दी। एक बात कहूं?"

"हूं···।"

"एक अच्छी-सी दुल्हन ढूंढ लीजिए···कुंवरजी के सोचने का ढंग ही बदल जाएगा।"

"लेकिन ऐसी लड़की···ऐसी लड़की का मिलना आसान नहीं, जो इस घराने की बहू कहला सके!"

"कोई मुश्किल नहीं, खोजने से क्या नहीं मिलता!"

रानी मां ने दीवानजी की आंखों में चमक देखी तो उनके

गम्भीर चेहरे पर हल्की-सी एक मुसकराहट उभर आई। उन्होंने इस बारे में अधिक बातें करना उचित न समझा और चुपचाप अपने कमरे की ओर बढ़ गईं।

दीवानजी रानी मां के दिल की गहराई को समझने का प्रयत्न कर रहे थे। कुछ क्षणों तक वह चुपचाप खड़े सोचते रहे। अचानक उन्होंने स्टडी-रूम के दरवाज़े पर खड़ी अपनी बेटी जुगनू को देखा। और वह समझ गए कि जुगनू ने उनकी बातें सुन ली हैं। वह उनके निकट आई तो वह बोले—"समीर से भेंट हुई क्या ?"

"हां, डैडी।"

दीवानजी ने फिर उससे कुछ न कहा और सामने आरामकुर्सी पर बैठकर सुस्ताने लगे। जुगनू ने झुककर अंगीठी के अंगारों को सलाख से कुरेदा। आग के शोले पलभर के लिए भड़क उठे। उसने फिर पिता की ओर दृष्टि उठाई और उनके चेहरे के बदलते रंग देखकर पूछ बैठी—"क्या सोच रहे हैं, डैडी ?"

"यही, बेटी···इस राजमहल की सेवा करते हुए जीवन के तीस बरस व्यतीत हो गए···जीवन कितना छोटा है···तीस बरस का यह लम्बा समय, लगता है पलक झपकते ही व्यतीत हो गया···।"

"इसीलिए तो कहती हूं, अब आराम करना चाहिए आपको। इस उमर में भी दिन-रात काम करते रहे तो जीवन और छोटा हो जाएगा।"

दीवानजी ने दृष्टि उठाकर बेटी की आंखों की चमक को देखा। वह जीवन के सत्य को कितनी आसानी से पिता के सामने कह गई!

"सॉरी, डैडी," जुगनू खुद ही अपनी बात पर झेंपकर बोली—"रियली, आई ऐम वेरी सॉरी···।"

"नहीं, जुगनू, सत्य कहने में क्या डर! बुढ़ापा एक ऐसा ऊबड़-खाबड़ रास्ता है, जिससे हर आदमी बचकर चलना चाहता है।"

जुगनू ने पिता के हृदय की पीड़ा को अनुभव किया और उनके

गले में बांहें डालती हुई बोली—"एक बात कहूं, डैडी ?"
"कहो।"
"आप बुरा तो नहीं मानेंगे ?"
"बिलकुल नहीं।"
"मेरी सहेली शांता है ना···।"
"हां, तो···?"
"वह एअर-हॉस्टेस बन गई है···आठ सौ रुपये का स्टार्ट मिला है उसको···।"
"तो···?" वह अपनी बेटी के विचारों को भांपते हुए बोले।
"क्यों न मैं भी एप्लाई कर दूं ? शांता के भाई की काफी पहुंच है···।"
दीवानजी बेटी की बात सुनकर चौंक गए। उन्होंने गर्दन उठाकर उसकी आंखों में झांका। जुगनू डर गई। उसे अनुभव हुआ, जैसे उसके डैडी को उसकी यह बात पसंद न आई हो।
"क्या देख रहे हैं, डैडी ?" उसने पिता की तेज़ निगाहों से बचने का प्रयत्न करते हुए पूछा।
"देख रहा हूं, मेरी बेटी की उड़ान कहां तक है···।"
"बादलों तक···आठ सौ से हज़ार रुपयों तक···।"
"लेकिन जानती है, बाप ने बेटी के लिए क्या सपने देखे हैं ?"
जुगनू के होंठ कुछ पूछने के लिए थरथराए, किन्तु आवाज़ न निकली और वह प्रश्नात्मक दृष्टि से पिता की ओर देखने लगी। दीवानजी ने होंठों पर मुसकराहट लाते हुए कहा—"सोचता हूं, तुम्हें इस राजमहल की बहू बना दूं।"
"नहीं, यह मुमकिन नहीं।" वह हड़बड़ा उठी।
"क्यों नहीं ?"
"हम कहां, वह कहां···धरती और आकाश का अन्तर है···।"
"आकाश धरती की ओर ही झुकता है, बेटी !"
"लेकिन रानी मां कभी न मानेंगी, डैडी।"

र "उनको मनाना मेरा काम है···बात तो समीर का दिल टटो-
लने की है···।"

"कहीं वह बुरा न मान जाएं!"

"वह तुम्हारी हर जिद का बुरा मानता है, फिर भी उसे तुम्हारा साथ पसन्द है।"

जुगनू ने अपने पिता के शब्दों को दिमाग में तौला तो उसे यह एक वास्तविकता लगी।

दीवानजी उसे चुप देखकर बोले—"यह अवसर हाथ से नहीं जाना चाहिए। अपने विचारों को पक्का कर लो···वह एक कलाकार है तो क्या तुम उसकी प्रेरणा नहीं बन सकतीं? क्या कमी है तुममें?" दीवानजी यह कहकर चले गए, लेकिन उनके शब्द जुगनू के मस्तिष्क में बार-बार गूंजने लगे। आज उसके डैडी ने जैसे उसे उस पगडंडी पर चलने के लिए संकेत किया था, जो बहारों की मंज़िल की ओर जाती थी। उसने अंगीठी के बुझते हुए अंगारों को एक बार फिर कुरेदा और वे हवा से एक बार फिर भड़के उठे। ठीक उसी तरह उसके हृदय में भी आशाओं के शोले भड़क उठे। कुछ सोचकर वह चुपचाप उस जीने की ओर हो ली, जो हवामहल की ओर जाता था।

दबे पांवों से जब वह समीर के कमरे में घुसी तब वह स्नानगृह में था। शावर से गिरते पानी के स्वर के साथ ही उसके गुनगुनाने की आवाज आ रही थी। इस धुन में जुगनू को एक गुदगुदाहट-सी छिपी अनुभव हुई। तभी उसकी दृष्टि उस चित्र पर पड़ी, जो दीवार के सहारे उल्टा रखा हुआ था। चित्र देखने की इच्छा को वह दबा न सकी और उसकी ओर बढ़ी। जैसे ही उसने चित्र को उठाना चाहा, समीर के शब्द उसे याद आ गए—'ऊंहुं, अभी नहीं···चित्र अधूरा है। पूरा होते ही पहले तुम्हारी राय जानना चाहूंगा।' वह चित्र उठाते-उठाते झिझक गई। असमंजस में पड़ी वह अपनी इच्छा दबाने का प्रयास करने लगी, किन्तु उसकी व्यग्रता इतनी

तीव्र थी कि कांपती उंगलियों से वह चित्र उठाए बिना न रह सकी। वह उसे उजाले में ले आई और जैसे ही उसकी दृष्टि उस चित्र पर पड़ी, उसके मस्तिष्क को एक झटका-सा लगा। चित्र वाली पहाड़ी युवती अत्यंत सुन्दर थी…ऐसी सुन्दरता, जिसमें भोलापन भी था और अछूतापन भी। उसने अनुभव किया कि उसके सपनों का महल अचानक ही धराशायी हो गया है। सुन्दरता और कला का यह अपूर्व समन्वय उसने समीर के रंगों में पहली बार देखा था। तभी एक आहट ने उसे चौंका दिया। वह जैसे ही मुड़ी, समीर को अपनी ओर आग्नेय दृष्टि से घूरते हुए देखकर डर गई।

"यह चित्र तुमने क्यों देखा?" उसने कड़ककर पूछा।

"तुमने जिज्ञासा जो इतनी बढ़ा दी थी उस पहाड़ी युवती के बारे में।"

"यह तुमने अच्छा नहीं किया, जुगनू।"

"तो, लो, कान पकड़ लिए। आगे ऐसी भूल नहीं होगी।" जुगनू ने विनयपूर्वक कहा—"बस, अब तो मुस्करा दो…।"

जुगनू की इस बात पर वह सचमुच मुस्करा दिया। पहले वह हर बात पर बहस करने लग जाती थी, किन्तु आज वह आसानी से अपनी पराजय स्वीकार कर रही थी और कान पकड़ रही थी। उसके इस परिवर्तन पर समीर को आश्चर्य तो बहुत हुआ, लेकिन उसने बात आगे न बढ़ाने की दृष्टि से कहा—"अच्छा बताओ, कैसा लगा?"

"चित्र या मुखड़ा?"

"मुखड़ा…।"

"बहुत सुन्दर…ऐसा प्रतीत होता है जैसे यह कोई वास्तविकता न होकर कल्पना है…।"

"किन्तु यह वास्तविकता ही है, जुगनू। उसका सौंदर्य तो शायद मेरे रंगों में पूरी तरह से नहीं उतर सका…।"

"सच!"

"हूं···।" समीर ने उसके निकट आते हुए कहा।

"यह चित्र देखकर तो मेरा जी भी चाहता है कि मैं तुम्हारा मॉडल बन जाऊं और तुम दिन-रात अपने रंगों में मुझे उतारते रहो।"

"लेकिन यह सम्भव नहीं।"

"वह क्यों ?" कहते-कहते जुगनू की आवाज़ भर्रा गई—"मेरे चेहरे में वैसा आकर्षण नहीं ?"

"यह बात नहीं।" समीर ने उत्तर दिया—"वास्तव में घर की वस्तुओं को मैं प्रदर्शनी में रखना पसंद नहीं करता।"

समीर के इस कथन में उसे अपनत्व-सा अनुभव हुआ और उसका हृदय झूम उठा। उसके मन में एक गुदगुदी-सी हुई, किन्तु उसने अपनी भावनाओं को प्रकट न होने दिया। वह दुबारा उस चित्र को देखने लगी जैसे उसकी सुंदरता को आंखों की गहराइयों में उतार लेना चाहती हो।

"एक बात कहूं···बुरा तो न मानोगे ?" वह अचानक कह उठी।

"कह डालो···।"

"तुमने इस पहाड़ी सौंदर्य को अपने रंगों में तो खूब उतार लिया, किन्तु आंखों में वह आकर्षण पैदा न कर सके, जो···।"

"हूं···।"

"यह लुभावना दृश्य, यह सुंदर झील और यह सम्पूर्ण सौंदर्य की प्रतिमा··· सब कुछ ठीक है, परन्तु इस चित्र में आंखों की पुतलियां पथराई हुई हैं, जैसे इनमें प्राण न हों···।"

"वैरी गुड, मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तुम्हारे अंदर आर्ट को परखने की गहरी सूझबूझ है···इस चित्र का जब मैं शीर्षक रखूंगा तब तुम्हें अपने प्रश्न का उत्तर अपने-आप मिल जाएगा।"

"शीर्षक क्या रखेंगे ?"

"दि ब्लाइंड गर्ल···।"

"तो क्या यह···?"

"हां, जुगनू, यह युवती अंधी है।"

"ओह!" जुगनू के हृदय को एक धक्का-सा लगा, किन्तु मन के किसी कोने में आशा की एक हल्की-सी किरण भी फूट पड़ी। उसे एक अजीब-सा संतोष हुआ···यह जानकर कि जो चित्र उसके जीवन में अंधेरा जाल बिछा सकता था, स्वयं उसका ही संसार अंधेरा है।

समीर ने चित्र को फिर से ईज़ल पर जमा दिया। वह उसे हर दृष्टिकोण से देखने लगा। प्रदर्शनी में रखने के पहले वह उसकी हर कमी दूर कर देना चाहता था। तभी उसने देखा कि जुगनू गुनगुनाती हुई कमरे से बाहर जा रही है।

"कहां चली?" समीर ने पुकारकर पूछा।

"तुम्हारे लिए एक कप कॉफी लाने···दिनभर की थकान दूर हो जाएगी।"

जुगनू एक मनमोहक मुसकान लुटाती हुई चली गई और समीर उसके इस व्यवहार से ग्राश्चर्यचकित रह गया। आज वह बिलकुल बदली हुई दिखाई दे रही थी। कुछ क्षणों तक समीर उस दरवाजे की ओर देखता रहा, जिससे वह बाहर गई थी। फिर वह उन विचारों को झटककर रंगों की दुनिया में लौट आया और अपने चित्रों को संवारने में व्यस्त हो गया।

कमरे की मद्धिम रोशनी को बढ़ाने के लिए उसने टेबललैम्प जला दिया। सिगरेट सुलगाकर होंठों से लगाया और उस खिड़की के समीप जा खड़ा हुआ, जहां से वह झील स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही थी।

आकाश में चंदा उग आया था। नीली झील की सतह अब चांदनी में धीरे-धीरे दूधिया होती जा रही थी। पहाड़ी के उस आंचल में झील के उस पार बस्ती की टिमटिमाती बत्तियां, जो अब तक उस पानी में झिलमिला रही थीं, चंदा के प्रकाश में मद्धिम होती जा

रही थीं।

दूर उस बस्ती में किसीने दिलरुबा पर एक सुन्दर पहाड़ी गीत छेड़ रखा था, जिसका स्वर उसके कानों से टकरा रहा था और वह उस मधुर स्वर को सुनकर आनंदित हो रहा था। उसे अनुभव हो रहा था जैसे वह धुन उसके मस्तिष्क को शांति प्रदान कर रही हो!

३

त्रुम्नी के एक छोटे-से मकान में नील्लू बैठी दिलरुवा बजा रही थी। यह वाद्य उसके हृदय को शांति प्रदान कर रहा था। घुंघराले बालों से आधा ढका उसका चेहरा भावोद्रेक से कुछ इस प्रकार दमक रहा था जैसे दिलरुवा बजाकर वह सारी दुनिया की बहारों को अपने दिल में समोए ले रही हो। अपनी धुन में खोई वह इस बात से बेखबर थी कि झील की दूसरी ओर कोई और भी इस गीत को ध्यानपूर्वक सुन रहा है।

यह दिलरुवा नील्लू की अकेली जिन्दगी का साथी था। जब कभी वह एकान्त और जीवन की घुटन से ऊब जाती तब वह इस दिलरुवा को लेकर बैठ जाती और वातावरण गीतों से गूंज उठता। पहले यह दिलरुवा उसके बापू का साथी था, लेकिन जब से उसकी मां परलोक सिधारी तभी से उसके बापू ने दिलरुवा बजाना छोड़ दिया था। वह भी बापू के सामने कभी इन तारों को न छेड़ती थी, क्योंकि उसे पता था कि इन तारों का सम्बन्ध बापू के दिल से है।

आज वह अकेली ही थी। बापू सुबह से यात्रियों को लेकर शिव मंदिर गया हुआ था। सौतेली मां पुलवा पास के गांव में मेला देखने को गई थी। आज उसने अपने-आपको घर की चारदीवारी में स्वतन्त्र पाया तो दिलरुवा लेकर बैठ गई। एकाएक उसकी उंगलियां उसके तारों में उलझकर रह गईं। सौतेली मां के आने की आहट उसने पहचान ली थी। वह मेला देखकर कुछ पहले ही लौट आई थी। नील्लू एकदम घबरा उठी। दिलरुवा के स्वर से पुलवा को बहुत चिढ़ थी। वह धीरे-धीरे नील्लू की ओर बढ़ी। फिर पैर से

ल्की-सी ठोकर मारते हुए बोली—"क्या हो रहा है, मेरी
?"
"कुछ नहीं, मां।" उसने दिलरुबा को अपने पीछे छिपाने का
फल प्रयत्न किया।
फुलवा ने झपटकर उससे वह दिलरुबा छीन लिया और कमरे
एक कोने में फेंक दिया। नीलू सिसककर रह गई। इससे पहले
क वह कुछ कहती, फुलवा ने कड़कती हुई आवाज में कहा—
कितनी बार कहा है, कम्बख्त···मां का शौक मत मनाया कर!
तेरा बापू पहले ही दिल का मरीज है···इसे सुनेगा तो समय से
पहले ही इस दुनिया से उठ जाएगा।"

"मां!" उसने तड़पकर कुछ कहना चाहा और धरती से
उठने लगी तो फुलवा ने कसकर एक लात मारी और चिल्लाई—
"बक-बक मत कर! चल, उठकर खाना परोस···थक गई मैं तो।
चल, जल्दी कर, कामचोर कहीं की!"

यह कहकर वह दूसरे कमरे में चली गई। नीलू का दिल
अपनी बेबसी पर रो उठा, किन्तु वह उफ तक न कर सकी और
चुपचाप चूल्हे के निकट चली गई। उसने जल्दी-जल्दी आग सुल-
गाई और भात गरम करने लगी। फिर थाली सजाकर मां की
राह देखने लगी।

फुलवा ने अपना रेशमी लिबास उतारा और मेले से खरीदी
हुई वस्तुएं सावधानी से संदूक में बन्द कर दीं। वह बार-बार
अपनी सूरत दर्पण में देख रही थी। नीले रंग के मोटे-मोटे मोतियों
का हार उसके गले की शोभा बना हुआ था। उसे अपना यौवन
निखरा हुआ दिखाई दिया। गदराया बदन, गेहुंआ रंग, काजल
से चमकती आंखें···माथे पर लटक आई लट को उसने ऊपर कर
दिया।

तभी उसे दर्पण में नीलू के बापू की परछाईं दिखाई दी। उसके
दिल की धुकधुकाहट गोलाबारूद के धमाकों की तरह एकदम तु

गई। उसने पलटकर दीवार पर लटकी उस तसवीर को देखा, जो उसके बूढ़े खूसट पति की थी। उस तसवीर को देखते ही उसने अनुभव किया जैसे उसके मांसल शरीर में अचानक झुर्रियां पड़ गई हों···उसके यौवन को दीमक लग गई हो···वह उस दिन को कोसने लगी जब नील्लू के बाप ने उसे पांच सौ रुपये की बोली देकर खरीद लिया था। वह इस विचार के आते ही मौन उठी। गुस्से से उसने बूढ़े की तसवीर को उलटा कर दिया। जैसे ही पलटी, उसे नील्लू की आवाज़ सुनाई दी—"खाना रख दिया है, मां।" नील्लू दरवाज़े पर खड़ी थी।

"अच्छा, अच्छा, सुन लिया।" यह कहती हुई वह आंधी-तूफान की तरह आगे बढ़ी और चारपाई खींचकर बैठ गई। नील्लू ने लपककर एक पुरानी मेज़ उसके सामने रख दी और उसपर खाने की थाली रखकर पानी लाने को जाने लगी। फुलवा ने जैसे ही कौर मुंह में रखा, उसका स्वाद खराब हो गया और वह चिल्लाकर बोली—"अरी मुरदार, यह खाना बनाया है तूने···न नमक, न मिर्च···।"

"कम पड़ गया होगा, मां!"

"तो, ला और···खड़ी-खड़ी दीदे क्या फाड़ रही है···कभी नमक इतना डाल देती है कि खाना ज़हर हो जाता है और कभी डालती ही नहीं···।"

नील्लू ने पानी का लोटा वहीं छोड़ दिया और लपककर नमकदानी उठा लाई। कांपते हाथों से उसने नमकदानी मां के सामने रखी। फुलवा ने गुस्से से नमक-मिर्च की चुटकी ली और दाल-भात में मिलाकर खाने लगी। दूसरा कौर चला ही था कि जीभ कट गई। गुस्से और जल्दबाज़ी में उसने नमक कुछ अधिक ही उड़ेल लिया था। अपनी भूल को तो उसने समझा नहीं, किन्तु नील्लू को झटककर अलग कर दिया। नील्लू लड़खड़ाई और नमक-[illegible] की थाली में आ गिरी।

इससे पहले कि वह झुककर नमकदानी उठा लेती, फुलवा ने तमककर उसके गाल पर एक चांटा जड़ दिया और चिल्लाते हुए खाने की थाली धरती पर पटक दी। फिर गालियों का एक फव्वारा उसके मुंह से निकल पड़ा। मोटी-मोटी भद्दी गालियां हथौड़ों की तरह नीलू के मस्तिष्क पर चोटें करने लगीं। तभी उसे अपने बापू की आवाज सुनाई दी और इस आवाज़ को सुनकर उसकी मां की गालियों को भी ब्रेक लग गया। नीलू शीघ्रता से धरती पर बैठ गई और बिखरे भात को समेटकर थाली में डालने लगी। रसीला ने बेटी पर एक नज़र डाली। नीलू की ज्योतिहीन आंखों में छिपे आंसू उसके दिल के दर्द को न छिपा सके। फिर रसीला ने फुलवा की ओर देखा, जो गुस्से में भरी पानी से अपना मुंह साफ कर रही थी।

"क्या हुआ फुलवा?" रसीला ने समीप आते हुए पूछा।

"अपनी लाड़ली से पूछ···खाने को रोज जहर कर देती है···।"

"वह खाना जहर कर देती है या तूने उसका जीवन जहर कर दिया है!"

"हां, हां, मैं तो हूं ही ज़हरीली नागिन···सौतेली मां जो ठहरी···असली होती तो सीधी कर देती···इतनी बड़ी हो गई, लेकिन अभी तक खाना पकाना नहीं आया!"

"तूने कभी पकाना सिखाया है?"

"पकाना तो तब सिखाती जब उसे सीखने की फुरसत होती··· तम्बूरा बजाने से ही उसे कब फुरसत है···!"

"तुझे क्यों दुःख होता है उसे सुनकर?"

"दुःख हो मेरी जूती को···तार बजा-बजाकर यह अपने यारों को बुलाती है···किसी मुस्टंडे की निगाहों में आ गई तो फिर मुझे मत कोसना।"

रसीला उसकी बात सुनकर क्रोध में भर उठा और मारने को उसकी ओर बढ़ा। नीलू बापू के क्रोध से डर गई और आगे बढ़-

कर उसे रोकती हुई बोली—"रहने दो बापू, भूल तो मेरी ही थी। मां के सामने खाना परोसने गई तो नमकदानी हाथ से फिसल गई।"

"तू सदा यही कहेगी, लाचार जो है···बेबस न होती तो बापू का घर छोड़कर अब तक कहीं और चली गई होती···अपने बापू को कभी माफ न करती, जिसने बुढ़ापे में तेरी मां को भूलकर एक ज़हरीली नागिन को घर में बसा लिया है···।"

"नहीं, बापू, मां के लिए ऐसा न कहो।"

"अरी जा!" फुलवा कड़ककर बोली—"बड़ी आई मां का पक्ष लेने वाली···शराबी बूढ़ा और अंधी जवानी···हु···पता नहीं वह कौन-सी मनहूस घड़ी थी, जब मैं इस घर में आई!"

फुलवा ने घृणा से धरती पर थूका और पैर पटकती हुई अपने कमरे में चली गई। इससे पहले कि रसीला उसे रोके, उसने ज़ोर से दरवाज़ा बन्द कर लिया। रसीला ने आगे बढ़कर एक-दो बार किवाड़ खटखटाया, लेकिन कोई उत्तर न पाकर बेटी की ओर बढ़ा और उसे सहारा देकर चूल्हे तक ले आया और बोला—"भूल जा उसे···खा ले जो खाना है।"

"बापू···तुम···?"

"मुझे भूख नहीं है।" उसने कहा और बाहर जाने लगा।

नीलू ने ज़िद की, किन्तु वह हाथ छुड़ाकर बाहर चला गया। इस घटना के बाद नीलू का जी भी खाने को न हुआ और वह भी खाना सरकाकर एक ओर लुढ़क गई।

नीलू के जीवन का यह पहलू उसके सपनों के संसार से बिलकुल भिन्न था। कभी-कभी तो वह इस घुटन से इतनी परेशान हो उठती कि अपना जीवन समाप्त करने का निर्णय कर लेती··· ऐसे जीवन का क्या लाभ, जो दूसरों पर बोझ हो! वह यह सोचती किन्तु अपने बापू का खयाल आते ही अपना इरादा बदल देती। बापू का उसके अलावा इस संसार में और था ही कौन!

रात आधी व्यतीत हो गई, किन्तु नीलू की आंखों से नींद कोसों दूर थी। वह धरती पर लेटी करवटें बदल रही थी और अपने बापू की राह देख रही थी, लेकिन उसके आने की उसे कम ही आशा थी। वह अच्छी तरह जानती थी कि उसका बापू घोड़ों के छप्पर तले शराब पीकर अपनी पीड़ा भूल जाने का प्रयत्न कर रहा होगा। खाली पेट वह यह जहर पी-पीकर न जाने किस जनम का बदला अपने-आपसे ले रहा था। वह लाचार थी और अपने बापू को यह जहर पीने से न रोक सकती थी। जो रोक सकती थी, वह किवाड़ बन्द किए आराम से अंदर सो रही थी। जीवन की इस मजबूरी पर नीलू तो केवल आंसू बहा सकती थी। वह इसी उलझन में सोने का प्रयत्न करने लगी।

किसी आहट ने फुलवा को नींद से चौंका दिया। उसने मुंह पर से लिहाफ हटाया और करवट लेकर इधर-उधर ताका। कमरे के बन्द किवाड़ों पर उसकी दृष्टि ठहरी तो उसे ऐसा अनुभव हुआ जैसे रमीला दरवाजा खटखटाकर अंदर आने के लिए निवेदन कर रहा है। वह क्रोध में दांत पीसने लगी। दुबारा खट-खट हुई तो उसने अनुभव किया कि आवाज दरवाजे की ओर से नहीं, बल्कि गली में खुलने वाली खिड़की की ओर से आ रही है। वह लपककर उस खिड़की की ओर चली गई। वह उस आहट को तुरन्त पहचान गई और उसके दिल में एक गुदगुदी-सी होने लगी। उसने जल्दी से खिड़की को खोलना चाहा, लेकिन कांपते हाथों ने साथ न दिया। दुनिया के डर ने उसके पैर वहीं बांध दिए।

"फुलवा !" किसीने फुसफुसाकर उसे पुकारा। उसने चोर निगाहों से अंधेरे में इधर-उधर देखा और खिड़की के छेद के पास मुंह ले जाकर डरी-डरी आवाज में बोली—"जा, हरिया, इस समय चला जा।"

"नहीं, फुलवा, किवाड़ खोल···देख तो, क्या लाया हूं मैं

तेरे लिए।"

फुलवा ने एक क्षण कुछ सोचा और फिर जल्दी में खिड़की खोल दी। हरिया खिड़की के निकट आ गया और व्याकुल होकर बोला—"कितनी देर कर दी तूने मेरी आवाज़ सुनने में।"

"बोल, क्या लाया है तू मेरे लिए?"

हरिया ने उसे अपनी लाल-लाल आंखों से देखा और जेब से चांदी की पायजेब निकालकर उसकी आंखों के सामने लहरा दी। उस पायजेब की चमक देखकर फुलवा की आंखों की चमक भी बढ़ गई। उसने हाथ बढ़ाकर वह पायजेब लेनी चाही, लेकिन हरिया ने अपना हाथ पीछे कर लिया और बोला—"ऊंहू, यों नहीं···।"

"तो कैसे?"

"बाहर चली आ।"

"नहीं, नहीं, नीलू का बाप घर में मौजूद है···।"

"लेकिन तेरे साथ तो नहीं है···।" हरिया ने कहा—"बाहर छप्पर के नीचे बैठा दारू पी-पीकर निढाल हो रहा है। आ, जल्दी आ जा···।"

"नहीं, हरिया, लोकलाज से तो डरो···मैं अब पराई हूं।"

"लेकिन लोकलाज के पहरेदार तो सब गहरी नींद सो रहे हैं। इस सरदी में आधी रात बीते कोई भी तो नहीं, जो हमारे प्यार में बाधा डाल सके···।"

"भरी बिरादरी में जब मेरी नीलामी हुई तब तू कहां मर गया था?"

"अरी, वह तो दस-पचास के फेर में मार खा गया वरना इस बुड्ढे की क्या मजाल थी जो तुझे छीन ले जाता···।"

"नहीं, हरिया, नहीं···यह पाप है।" यह कहकर उसने खिड़की बन्द करनी चाही तो हरिया ने लपककर उसकी कलाई पकड़ ली और उसकी आंखों में झांकते हुए बोला—"तुझे मेरी कसम है, फुलवा, जो इस समय बाहर न आए···मेले में तो मुझे देखकर तू

छिप गई, लेकिन यहां तो दुनिया वालों का डर नहीं है"'मैं कहता हूं, क्यों अपनी जवानी को दीमक लगा रही है"'तेरी कसम, अभी तू बाहर न आई तो मैं झील में जाकर डूब मरूंगा।"

फुलवा ने उसकी आंखों में झांका तो उसे वहां प्यार की लौ जलती दिखाई दी। उन आंखों में पीड़ा, प्यार और विनय की तड़प थी। फुलवा को अपने बदन में एक झुरझुरी-सी अनुभव हुई। उसने दांतों से अपने होंठ काटते हुए बाहर आने के लिए हां कह दी। हरिया ने तुरन्त उसका हाथ छोड़ दिया और फुलवा ने अंदर से खिड़की बन्द कर ली।

खूंटी पर टंगे दुपट्टे को उतारकर गले में लपेटती हुई फुलवा दबे पांव दरवाजे की ओर बढ़ी। उस समय वह अपने अंदर इतना साहस अनुभव कर रही थी जैसे लोकलाज के सारे बन्धन तोड़कर वह हरिया की बांहों में समा जाएगी। वह अपने खोए हुए प्यार को गले से लगाने के लिए व्यग्र हो उठी। धीरे-धीरे कदम उठाती हुई वह दरवाजे तक पहुंची और किवाड़ खोलकर दूसरे कमरे में पहुंच गई।

भयभीत दृष्टि से उसने पलटकर नीलू की ओर देखा, जो धरती पर गठरी बनी सरदी से सिकुड़ी जा रही थी। नीलू उसकी आहट से हिली तक नहीं तो वह समझ गई कि नीलू सो रही है, फिर भी यह जांच करने के लिए उसने उसके बदन को कम्बल से ढक दिया और क्षणभर के लिए वहीं खड़ी हो गई। नीलू अब भी न हिली-डुली तो उसने संतोष की सांस ली और धीरे-धीरे बाहर की ओर चल दी।

उसने जैसे ही बाहर जाने के लिए किवाड़ खोले, एक फुसफुसी चीख उसके गले में दबकर रह गई। शराब के नशे में धुत रसीला सामने खड़ा उसे घूर रहा था। आधी रात को उसे कहीं जाते देख, रसीला की आंखों में संदेह की परछाईं उभर आई—
"कहां जा रही हो इस वक्त?"

"कही नही···बस तुम्हे मनाने जा रही थी···मुझे माफ कर दो···।" फुलवा ने अपने पति की आखो मे उभरी संदेह की परछाई को भांपकर झट से बात बनाई।

"ओहो, इतनी जल्दी तरस आ गया मुझपर !"

"और क्या करूं ! तुम्हें तो कभी मेरी जवानी पर तरस न आया···मैं कैसे रहम न खाऊं तुम्हारे बुढापे पर···चलो, अदर चलो···।"

रसीला ने जब फुलवा की मस्त आंखों मे शराब छलकती देखी तब नशे मे उसे ऐसा अनुभव हुआ जैसे शराब से भरे तालाब में किसीने उसे डुबो दिया हो। उसका क्रोध तुरन्त दूर हो गया और वह उसकी आखो की मस्ती मे खो गया। उसने अपना सिर फुलवा के कंधे से टिका दिया और वह उसे सहारा दिए अदर ले आई।

आज के पूर्व रसीला ने अपनी पत्नी के यौवन से परिपूर्ण शरीर की गरमी को इतने निकट अनुभव न किया था। उसे बार-बार फुलवा के कहे हुए व्यंग्यात्मक शब्द ज़हरीले नाग की तरह डसने लगे—'और क्या करूं ! तुम्हें तो कभी मेरी जवानी पर तरस न आया ···मैं कैसे रहम न खाऊं तुम्हारे बुढापे पर···।'

फुलवा ने अपने अल्हड हाव-भावों से बूढे पति की उमगो को भडका दिया था। उसने आज अपनी इच्छाओं का गला घोट डाला था। उसका तरुण और सुडौल प्रेमी बाहर उसकी प्रतीक्षा कर रहा था, किन्तु वह यहा इस बूढे खूसट के नखरे सहन कर रही थी। एक बार तो उसका जी चाहा कि रसीला को परे ढकेलकर बाहर चली जाए, किन्तु तभी उसने कुछ सोचकर अपने होठ रसीला के होठो पर रख दिए। शराब के एक भभके से उसका जी मिचलाया, फिर भी वह रसीला की पकड मे जकडी रही। धीरे-धीरे रसीला उसे बाहो मे और कसता गया। फुलवा को लगा जैसे उसकी बूढी बाहो मे बिजली-सी भर गई है और शायद रसीला ने उसकी जवानी पर रहम खाने का फैसला कर लिया है।

फिर अचानक फुलवा ने खिड़की की ओर देखा तो कांप उठी। किवाड़ों की भिरी में से हरिया उन्हें देख रहा था। उसने अनुभव किया जैसे हरिया की आंखों से घृणा और क्रोध की चिनगारियां निकल रही हैं। किन्तु वह लाचार थी ! उसका प्रेमी विरह की आग में बाहर जल रहा था और वह यहां अपने संसार में उलझी हुई दुर्भाग्य को कोस रही थी। वह दुबारा खिड़की की ओर देखने का साहस न कर सकी। उसने लपककर अपना दुपट्टा खिड़की के पास बंधी हुई रस्सी पर डाल दिया और इस तरह यह परदा उसके प्यार और कर्तव्य के बीच एक दीवार-सा बन गया !

४

एक पुराने पेड़ के सहारे बैठा रसीला चिलम के कश लगा रहा था। उसी पेड़ के तने से उसके दोनों घोड़े बंधे हुए थे—एक सफेद और दूसरा काला। ये घोड़े ही उसकी आय का एकमात्र साधन थे। हर सुबह वह इसी तरह इस पेड़ की छाया में आकर बैठ जाता और ग्राहकों की प्रतीक्षा करने लगता। यात्री आते और इन घोड़ों को दिनभर के लिए किराये पर ले लेते। कभी-कभी यह धंधा ठप्प हो जाता और तब मकान गिरवी रख दिया जाता। जीवन की इच्छाएं गिरवी रख दी जातीं। फुलवा ने तो कई बार उसे सलाह दी कि घोड़े बेचकर वह शहर चला जाए और वहां अपना भाग्य आजमाए; किन्तु वह इस जोड़ी से इतना प्यार करता था कि उसे अपने से अलग न कर सकता था। उसने ये घोड़े चौधरी रजीत के तबेले से नीलामी में खरीदे थे। लेकिन वह यह जानता था कि उसे ये घोड़े अपने से अलग करने ही पड़ेंगे—नीलू के ब्याह के दिन। फिर नीलू का ध्यान आते ही उसके दिल में एक हूक-सी उठती और घाटी की सरसराती हवाएं उसके कानों में कुछ कहती-सी गुजर जातीं—'यह झूठ है। नीलू का ब्याह कभी नहीं होगा। वह अंधी है।'

"शिवमंदिर चलोगे, बाबा?" यह सुनते ही उसके विचारों की शृंखला टूट गई। उसने गर्दन घुमाकर देखा। एक नौजवान जोड़ा उसके पीछे खड़ा था।

"क्यों नहीं, सरकार···!" कहते हुए उसने जल्दी-जल्दी चिलम के दो-चार कश लिए और फिर चिलम को पेड़ के खोखे में रखकर

ला—"कब चलना होगा बाबू ?"
"अभी, इसी समय !" समीर ने उत्तर दिया।
रसीला खुशी-खुशी घोड़ों के आगे से घास उठाकर बोरे में भरने लगा। फिर उसने फुर्ती से उनकी पीठ पर ज़ीन कस दी। समीर और जुगनू निकट आकर घोड़ों की पीठ थपथपाने लगे। जुगनू ने अपने लिए काला घोड़ा पसन्द किया।
"क्या लोगे आने-जाने का ?" समीर ने सफेद घोड़े की गर्दन पर हाथ फेरते हुए प्रश्न किया।
"जो आप उचित समझें...।"
"यह बात नहीं। पहले किराया ठहरा लो, बाद मे झगड़ा हो, यह हमें पसंद नहीं !"
"वाह बाबू ! कैसी बातें करते हो...कौन-से हजार-पांच सौ का सौदा है, जो आप डर गए ! मैंने जबान दी है, जो चाहो दे देना।"
समीर और जुगनू ने मुसकराकर एक-दूसरे की ओर देखा। रसीला ने उनकी मुसकराहट को भांपा और अपनी बेटी नीलू को खाना लाने के लिए पुकारने लगा।
"अभी आता है खाना, चाचा"

"तनिक सभल के, चीकू···।" बुड्ढे ने चिल्लाकर कहा और फिर समीर की ओर देखते हुए बोला—"यह नीलू है, मेरी बेटी··· आखो से देख नही सकती बेचारी···उसके साथ चीकू है···अपने पडोसी का बच्चा···।"

यह सुनते ही जुगनू को एक सदमा-सा लगा। उसे यह समझने मे देर न लगी कि यह वही लडकी है, जिसका चित्र समीर ने प्रदर्शनी के लिए तैयार किया है। नीलू के सौंदर्य ने जुगनू को प्रभावित तो किया, किन्तु प्रकृति के इस मजाक से उसे आघात भी पहुचा।

"यही वह नीलू है।" समीर ने जुगनू के कान मे धीरे से कहा।

"देखते ही समझ गई···मैं तो सोच भी न सकती थी कि जगल का यह फूल इतना अलौकिक होगा।"

"तभी तो भगवान ने इस घाटी मे शहर वालों की दृष्टि से दूर रख दिया है···।"

"कही तुम्हारी दृष्टि तो···?"

अभी जुगनू अपना वाक्य पूरा भी न कर पाई थी कि नीलू चीकू का सहारा लिए वहा आ पहुंची। उसने पेड से लटकते थैले मे बापू का खाना डाल दिया और बोली—"कब आओगे, बापू ?"

"शाम तक···अधेरा होने से पहले ही···।"

नीलू ने समीर और जुगनू की ओर देखने का प्रयत्न किया। उनकी बातो से वह उन्हें पहचान गई और उसके होंठों पर एक मुसकान उभर आई। फिर वह अपने बापू से बोली—"ये दोनों ही जाएगे ?"

"हां बेटी···दोनो···।"

वह सरकती हुई घोडो के निकट पहुंच गई। उसी समय चीकू ने गुलाब के दो फूल टहनी से तोड़कर नीलू के हाथ मे थमा दिए। नीलू अब समीर और जुगनू की ओर बढी।

"लो बाबू, एक अपने कोट मे टाक लो और दूसरा मेमसाहब के जूड़े मे। उसने समीर की ओर फूल बढाते हुए कहा

"हां, बाबू, ले लो···सुबह ही सुबह जो कोई मेरी बोहनी
नीलू उसे ये फूल देती है···।" रसीला ने समीर को झिझकते हुए
कर कहा।

समीर ने आगे बढ़कर फूल उसके हाथ से ले लिए। नीलू की
गलियां ज्यों ही उसके हाथ से टकराईं, एक बिजली-सी उसके
रीर में दौड़ गई। उधर नीलू के चेहरे की गुलाबी आभा और बढ़
ई। समीर अभी इसी असमंजस में था कि वह उसे कैसे बताए कि
वही पिछले दिन उसका चित्र बना चुका है कि तभी जुगनू ने बटुए
से दस रुपये का एक नोट निकालकर नीलू के हाथ में थमा दिया।
नीलू उसे उंगलियों से टटोलते हुए बोली—"यह क्या ?"

"हमारे यहां भी रिवाज है नीलू, कि जो हमें सुबह दुआ दे, उसे
हम खाली हाथ नहीं जाने देते।" समीर जल्दी से बोल पड़ा।

नीलू समीर का स्वर सुनकर चौंक उठी। अभी वह कुछ सोच
रही थी कि रसीला कह उठा—"ले लो, बेटी यह तो बख्शिश है
बड़े लोगों की···आशीर्वाद है हमारे लिए···।"

समीर की उपस्थिति अनुभव करते ही वह लजा-सी गई।
उसके कांपते हाथों से वह नोट गिर गया। चीकू ने लपककर उसे
उठा लिया।

जुगनू को वहां अधिक समय तक ठहरना अच्छा न लगा। "चलो
बाबा, देर हो रही है।" उसने रसीला से कहा और समीर की ओर
देखने लगी। फिर वह जैसे ही अपने घोड़े की ओर बढ़ी, समीर ने
नीलू के पास से गुजरते हुए फुसफुसाकर कहा—"नीलू···!"

"बाबू···!" उसके थरथराते होंठों से निकला।

तभी रसीला घोड़े की लगाम पकड़े समीर के पास आ गया औ
उसे घोड़ा थमाते हुए नीलू से बोला—"अरी, छिपा ले इस नोट क
···उस चुड़ैल ने देख लिया तो अभी छीन लेगी···।"

नीलू ने अपने कांपते हाथों से वह नोट चीकू से ले लिय
फिर वह चुपचाप खड़ी घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनती रही,

धीरे-धीरे दूर होती जा रही थी। वह अभी अपने विचारों में ही डूबी हुई थी कि चीकू का स्वर सुनकर चौंक पड़ी—"यों खड़ी क्या सोच रही है, नीलू ?"

"कुछ नही···।" वह एकदम कह उठी। फिर तनिक रुककर उसने पूछा—"एक बात तो बताओ, चीकू !"

"क्या ?"

"वह लड़की, जो बाबू के संग थी···देखने में कैसी है ?"

"एकदम गोरी-चिट्टी···बड़ी ही सुन्दर···वह तो कोई मेमसाहब लगती है···और हां, साहब की जोरू मेमसाहब नहीं होगी तो क्या तेरी तरह होगी !"

यह सुनकर वह हंस पड़ी; किन्तु तभी चीकू की इस बात से उसके दिल मे एक टीस-सी जाग उठी और उसकी हंसी थम गई। वह उस नोट को अपनी उंगलियों में जोर-जोर से मसलने लगी। चीकू की समझ में उसका यह व्यवहार नहीं आया तो वह चुपचाप घोड़ों की लीद जमा करने लगा और फिर एक टोकरी में भरकर दूर एक गड्ढे में फेंक आया।

नीलू ने अचानक उसका कंधा झकझोरा और बोली—"मेरे संग मेला देखने चलोगे ?"

"हां, हां···लेकिन अभी तो एक महीना पड़ा है बैसाखी के मेले में···!"

"तो क्या हुआ···महीना तो पलक झपकते ही बीत जाएगा···।" नीलू उमंग के साथ बोली—"जानते हो, चीकू, मैं इस दस के नोट का क्या करूंगी ?"

"क्या करोगी ?"

"डट के मेला देखूंगी···ढेर सारी चीजें खरीदूंगी···झुमके, बिंदिया, मोतियों का हार, सुनहरी चूड़ियां और···।"

"बस-बस···कुछ पैसे बचाकर रख···मैं भी तो कुछ खरीदूंगा···।"

चीकू की भोली बातों को सुनकर वह एक बार फिर खिल-
खिलाकर हंस पड़ी। तभी उसकी हंसी एक चीख में बदल गई।
किसीने वह नोट उसके हाथ से झटक लिया। वह समझ गई कि
ऐसा काम कौन कर सकता है।

"अरी कम्बख्त, चुड़ैल···घर में चूल्हा नहीं जला और तुझे
खेलने की सूझ रही है···बुड्ढा राशन के पैसे नहीं दे गया और तू
झुमके-बिंदिया के सपने देखने लगी···!" फुलवा ने कड़ककर
कहा।

"लेकिन चाची···" चीकू ने नीलू की हिमायत की—"ये तो
बख्शिश में मिले हैं नीलू को···।"

"तू चुप रह नीच···बड़ा आया हिमायती बनकर···।" फुलवा
ने चीकू को भी फटकार दिया और हाथ में थमे बर्तन धरती पर
पटक दिए। एक डेगची नीलू के पांव पर गिरी और वह पांव पकड़कर
बैठ गई। फुलवा ने उसकी ओर लापरवाही से देखा और बोली—
"चल, टसुए न बहा, मुरदार···जल्दी से बर्तन धो डाल···इन्हें क्या
तेरा बाप आकर धोएगा!" इतना कहकर वह कूल्हे मटकाती हुई
मकान की ओर चल दी।

नीलू ने बर्तन समेटे और इन्हें उठाकर झील की ओर चल पड़ी।
चीकू, जो अब तक गुस्से में दांत पीस रहा था, अब लपककर नीलू
की मदद को दौड़ पड़ा।

"तेरी मां बड़ी ज़ालिम है!" चीकू ने बर्तन साफ करते हुए कहा।

"नहीं, चीकू, मां को ऐसा नहीं कहते···।"

"रहने दे बस···जानती है, मैं तेरी जगह होता तो क्या करता?"

"क्या करता?"

"घर छोड़कर भाग जाता और शहर में किसीसे ब्याह रचा
लेता···।"

"पगले, यह इतना आसान थोड़े ही है···फिर मुझ अंधी से
भला कौन ब्याह करेगा?" उसने जल्दी-जल्दी बर्तनों पर मिट्टी

मलते हुए कहा।

"हां, यह भी सच है···अंधी से कौन ब्याह करेगा···लेकिन नीलू, आज मैं बड़ा होता तो मैं तुझसे ब्याह रचा लेता···।"

यह सुनकर नीलू का दुखी मन क्षणभर के लिए पुलक उठा। चीकू का साथ उसके दिनभर के दुःख को कम कर देता था। वह थोडी देर चुप रही, फिर अचानक कह उठी—"चीकू, अपने ब्याह का तो दुख नहीं मुझे, दुःख तो केवल इस बात का है···।"

"किस बात का?"

"जब तू बड़ा होकर मेरे लिए भाभी लाएगा तब मैं उसे कैसे देख सकूंगी···।"

चीकू ने नीलू की ओर देखा तो पाया कि उसकी पलकों से दो आंसू टपककर गालों पर आ रुके थे। इस मासूम उमर में भी वह उसके हृदय की पीड़ा को समझ गया।

फुलवा फुंकारें मारती हुई जैसे ही घर में घुसी वैसे ही ठिठककर खड़ी रह गई। हरिया अपनी दुकान सजाए आंगन में बैठा था। उसे देखकर फुलवा का कलेजा धड़क उठा। फुलवा को देखकर हरिया के होंठों पर एक भद्दी मुस्कराहट उभर आई और वह बोला—"क्यों फुलवा, बोहनी न कराओगी अपने हरिया की सवेरे ही सवेरे?"

"तुम्हें यहां नहीं आना चाहिए था, हरिया!" वह दबे स्वर में बोली।

"क्या करता···तू वादा करके पलट जो गई।"

"वह बुड्ढा जो कमरे में आ घुसा था···।"

"कोई बात नहीं···कब तक जिएगा वह···हम भी इन्तज़ार में जीना जानते हैं;··जब तक तू लाचार है, तब तक हम भी तेरी गलों की फेरी लगाकर जी लेंगे···बोहनी तू करा दे, मेरी जान, दिन अच्छा निकल जाएगा···।"

"तू दे दे, जो जी में आए···।"

"ये झुमके लाया हूं चांदी के तेरे लिए···दस का नोट नकद लूंगा!"

"अरे जा मुए, मुझसे भी दाम लेगा!"

"प्यार अपनी जगह है, फुलवा···व्यापार अपनी जगह···।"

"चल हट, बड़ा आया व्यापारी बनकर!" कहकर फुलवा ने उसके हाथ से झुमके छीन लिए। हरिया ने झपटकर उसकी कलाई पकड़ ली। फुलवा आज उसका साहस देखकर घबरा-सी गई। उसने अपनी कलाई हरिया के हाथ से छुड़ाने का प्रयत्न किया। तभी नील्लू ने आंगन में कदम रखा। पकड़-धकड़ का शोर सुनकर वह तनिक ठिठकी। हरिया ने उसे देखते ही फुलवा की कलाई छोड़ दी। फुलवा संभलकर बोली—"न, भई न, तू ज्यादा दाम मांग रहा है···हमें नहीं लेना···कोई और घर देख···।"

"माल जो असली है···दाम तो ज्यादा होंगे ही। लेना हो तो लो, नहीं तो मैं चला।"

दोनों ही नील्लू की ओर घबराए-से देख रहे थे। उनके दिल का चोर उस अंधी लड़की की उपस्थिति से भयभीत था। जैसे ही वह हाथों में बर्तन उठाए अन्दर गई, फुलवा ने दबे स्वर में हरिया से चले जाने को कहा।

"यही है नील्लू?" हरिया ने पूछा।

"हां। आंखों से तो अंधी है, पर आहट से पहचान लेती है।"

"इसकी आंखों पर न जा, फुलवा···मेरे पास यह नगीना हो तो फेरी लगाना छोड़ दूं···नकली जेवर बेचना बन्द कर दूं···।"

"अरे, वह मुरदार किस काम की है! न खुद जीती है और न किसी और को जीने देती है! मेरे सीने पर तो एक बोझ बन गई है···किसीके पल्ले भी तो नहीं बांधी जा सकती···!"

"तेरा नसीब चौखट पर खड़ा है और तू उसे अन्दर ही नहीं आने देती···।"

"क्या बक रहा है?"

"वक नही रहा, व्यापार की बात कर रहा हू इस समय ! असली मोने के ज़ेवरो से लाद दूगा तेरा बदन !" हरिया ने यह कहकर इधर-उधर देखा और फिर अपना मुह फुलवा के कान के पास ले जाकर खुसर-फुसर शुरू कर दी। फुलवा के चेहरे का रग बदलने लगा। उसकी आखे आश्चर्य से फैल गई।

"नही, हरिया, नही···इसके बापू को पता चल गया तो मेरी जान ले लेगा !" यह कहते हुए वह अचानक हरिया से दूर हो गई।

"उसे पता ही कैसे चलेगा ?" हरिया ने समझाते हुए कहा—"भला बेटी यह बात बाप से कैसे कहेगी !"

"लेकिन···।"

"तू बस समझदारी से काम ले।" हरिया ने आगे कहा—"उसे मुट्ठी मे करना तेरा काम है। तू उसे दुतकारने के बजाय प्यार करने लग···।"

हरिया की बात सुनकर फुलवा सोच मे पड गई। फिर उसने झुमके खरीद लिए। पैसो की बात पर हरिया बोला—"रहने दे अब ये नखरे ! इकट्ठा ही हिसाब कर लूगा !"

वह चला गया तो फुलवा ने बाहर का दरवाजा बन्द कर लिया। उसका दिमाग हरिया की बातो मे उलझ गया। वह उसकी बताई योजना पर विचार करने लगी। फिर वह कुछ सोचकर दबे पाव उस कमरे मे जा पहुची, जहा नीलू बैठी हुई चूल्हा सुलगाने का प्रयत्न कर रही थी।

गीली लकड़िया कठिनाई से आग पकड़ रही थी। फूक मारते-मारते नीलू की आखो से पानी बह निकला था। मा के कदमो की आहट सुनकर उसने पीछे की ओर गर्दन घुमाई। फिर वह एकदम निश्चल हो गई और हर दिन की तरह गालियो की प्रतीक्षा करने लगी।

"अरी, क्यो बेहाल हो रही है···ये गीली लक [illegible] तरह नहीं जलेंगी···ठहर, मैं थोड़ा-सा मिट्टी का तेल डा[illegible]

मां के इस अप्रत्याशित परिवर्तन को लक्ष्य करके नीलू आश्चर्य-चकित रह गई। फुलवा ने लालटेन में से थोड़ा-सा तेल निकालकर लकड़ियों पर डाला और दियासलाई दिखा दी। लकड़ियां भक से जल उठीं। फिर फुलवा ने केतली पानी से भरकर खुद ही चूल्हे पर चढ़ा दी। चकित-सी नीलू केवल इतना ही कह सकी—"मां!"

"हां, हां, मैं तेरी मां हूं, कोई डायन नहीं...जो रात-दिन तेरी जान की आफत बनी रहूं...मैं भी जानती हूं तेरे दुःखों को...।"

"नहीं मां, मुझे तो कोई दुःख नहीं...।"

"तू दुःखों को सहना जानती है।" उसने कहा और अपनी साड़ी के आंचल से नीलू के चेहरे पर झलक आए पसीने को पोंछती हुई धीरे से बोली—"मैं जानती हूं, तेरी उमर खेलने-कूदने की है...दुःख सहने की नहीं...लेकिन क्या करूं, तेरे बापू से झगड़ के तुझपर बरस पड़ती हूं...!"

नीलू उसके प्यार-भरे व्यवहार से पिघल गई। वह तो इस प्यार के लिए कब से लालायित थी। उसके दिल में हर्ष के अनार फूट पड़े और उसने अपना सिर मां के कंधे पर रख दिया।

"जानती है, यह क्या है?" फुलवा ने उसकी आंखों के सामने झुमकों को लहराते हुए पूछा।

"ऊंहूं...।"

"चांदी के झुमके हैं...तेरे लिए...।"

"मेरे लिए?"

"और नहीं तो क्या मेरे लिए...मैं क्या अब इस उमर में झुमके पहनूंगी!"

"मां!"

हर्ष के आवेग से नीलू की आंखें भर आईं और वह मां से लिपट गई। उसके आंचल में मुंह छिपाकर वह सिसकियां लेने लगी। फुलवा उसकी पीठ पर स्नेह से हाथ फेरते हुए बोली—"तूने अभी तक मां की कानी ज़बान सुनी है, गोरा दिल नहीं देखा उसका!"

नीलू केवल सिसकियां भरती रही। फुलवा ने उसका चेहरा ऊपर उठाया और अपने आंचल से उसके आंसू पोंछते हुए बोली—"नीलू, मेरी बेटी, मैंने तेरे दुःखों को समाप्त करने का फैसला कर लिया है...अब तेरा ब्याह कर दूंगी...।"

"लेकिन मां, मुझ अंधी के संग कौन ब्याह करेगा ?" वह मां की बात सुनते ही प्रश्न कर उठी।

"वह नौजवान जो तुझे देखते ही पागल हो गया है," फुलवा ने बात बनाई—"आज ही हरिया के हाथों उसके माता-पिता ने संदेश भेजा है।"

"क्या ?"

"एक बार घर वाले तुझे देख लेना चाहते हैं...।"

"लेकिन मां, वे लोग अपने घर में एक अंधी बहू को कैसे रखेंगे ?"

"दुलार-प्यार से...धन-दौलत, जमीन-जायदाद, नौकर-चाकर क्या नहीं है उनके पास...बस एक सरस्वती जैसी बहू की तलाश थी उन्हें, सो मिल गई !"

"तो लड़के में जरूर कोई कमी होगी, मां !"

"वह कैसे ?"

"धन-दौलत और इतनी जमीन-जायदाद होते हुए वह एक अंधी लड़की से कैसे ब्याह कर लेगा ?"

नीलू के प्रश्न ने फुलवा को असमंजस में डाल दिया। क्षणभर चुप रहकर वह बोली—"क्या दूर की सूझती है मेरी लाडो को लेकिन वह ऐसा नहीं...मेरा भी देखा-भाला है...तेरी सुन्दरता पर मर मिटा है...तुझको क्या पता कि तू कितनी सुन्दर है !"

नीलू ने फुलवा से फिर कुछ कहना चाहा, लेकिन फुलवा ने अपनी होशियारी और झूठे प्रेम-प्रदर्शन से उसे मना ही लिया। दोनों ने मिलकर नाश्ता बनाया और फुलवा ने बड़े प्यार से उसे नाश्ता कराया। फिर उसके नहाने के लिए गरम पानी गुसलखाने में रख दिया।

"ले यह अंगरेजी साबुन तेरे लिए मेले से लाई थी···खूब मल-मलकर नहाना, सारा बदन महक उठेगा···।" कहते हुए फुलवा ने अंग्रेजी साबुन की टिकिया नीलू के हाथों में थमा दी।

फिर जब नीलू नहाकर बाहर निकली तब फुलवा ने अपनी रेशमी साड़ी भी उसकी ओर बढ़ा दी। आज एकसाथ मां की इतनी कृपा देखकर नीलू का कलेजा धड़कने लगा। लेकिन वह चुपचाप उसका कहना मानती रही।

सज-धजकर जब वह तैयार हो गई तब फुलवा ने उसके गुलाबी गाल पर काजल का टीका लगाते हुए कहा—"मेरी बन्नो को किसी वैरी की नजर न लग जाए आज!"

"मां!" नीलू ने झिझककर कुछ कहने का प्रयत्न किया।

"हां, हां, बोल···रुक क्यों गई···?"

"मां, वे लोग मुझे पसंद कर लेंगे?"

"काश! तू आज खुद को आईने में देख पाती! आज तू किसी राजकुमारी से कम नहीं लग रही···तेरी मां जीवित होती तो यह देखकर कितनी खुश होती कि उसकी बेटी किसी धनी घराने की बहू बनने जा रही है।" फुलवा यह कहकर अपनी आंखों में बनावटी आंसू भर लाई और उसने आगे बढ़कर नीलू को गले से लगा लिया।

फुलवा के गले से लगकर नीलू ने अपने-आपको उड़ता-सा अनुभव किया। उसे लगा जैसे उसकी मां लौट आई और वह उसकी ममता से नहा उठी है!

५

"क्यों हरिया, अभी तक नहीं आई तुम्हारी फुलझड़ी?" प्रताप ने शराब का एक लम्बा घूंट हलक में उंडेलते हुए हरिया से पूछा। हरिया बार-बार खिड़की के बाहर झांककर अपनी बेचैनी पर काबू पाने का प्रयत्न कर रहा था। उसने थोड़ा सोचकर उत्तर दिया—"आती ही होगी, हुजूर! कितनी मुश्किल से तो मनाया है उसको उसकी मा ने!"

"लेकिन उसकी मा को मनाने में तो तुम्हें समय न लगा होगा, हरिया!"

वह प्रताप की बात सुनकर शरमा गया और अपने कुर्ते के बटन दांतों से काटता हुआ खिसियानी हंसी हंसकर बोला—"जवानी में फुलवा भी कयामत थी सरकार!"

"और वह नीलू?" प्रताप ने ललककर पूछा।

"अजी वह तो एक कली है···अधखिली···कोमलता की मूरत···!" हरिया ने उत्तर दिया—"यों तो आपकी सेवा बरसों से करता आ रहा हूं हुजूर, लेकिन ऐसी कली पहली ही बार आपके दामन में टांक रहा हूं।"

हरिया की बात से प्रताप खिल उठा। उसने जल्दी से दूसरा घूंट गले से उतारा। उसे यों लगा जैसे हरिया के शब्दों ने उसके कान में अमृत टपका दिया हो।

बस्ती से दूर पहाड़ी के आंचल में स्थित एक छोटे-से डाकबंगले में उसे आज उस बहार की प्रतीक्षा थी, जिसके आने से आज उसका शुष्क जीवन रसपूर्ण होने वाला था।

"लो, वह आ गई।" हरिया का स्वर सुनकर प्रताप की आंखों में एक चमक पैदा हो गई। उसने जाम अलग हटा दिया और दृष्टि उठाकर बाहर के दरवाज़े की ओर देखने लगा, जिसके पट हरिया ने एक झटके से खोल दिए थे।

नीलू की सूरत देखते ही प्रताप को यों लगा जैसे उसके अंधेरे आंगन में चन्द्रमा उतर आया हो। चांदनी की तरह शीतल, पवन की तरह अल्हड़ सौंदर्य की वह प्रतिमा खूबसूरत कपड़ों में एक राजकुमारी लग रही थी। सौतेली मां ने बेटी को सहारा दिया और गहरी दृष्टि से प्रताप को देखा। प्रताप ने उसे ज़ीने की ओर जाने का संकेत किया, जो ऊपर वाले कमरे की ओर जाता था। फुलवा बेटी का हाथ पकड़े उस ओर हो ली।

जब नीलू उस ज़ीने को पार करती हुई ऊपर वाले कमरे की ओर जा रही थी तब उसके गोरे-गोरे खूबसूरत पैरों में बंधी पायज़ेब की झनकार वातावरण में एक संगीत पैदा कर रही थी।

पायज़ेब की झनकार सुनकर प्रताप का दिल झूम-झूम उठा और वह हरिया के कंधे पर हाथ मारते हुए बोला—"जवाब नहीं तेरा! क्या कली तोड़कर लाया है जवानी के बगीचे से!"

"लेकिन हुज़ूर, जल्दबाज़ी से काम न लीजिएगा! ऐसी कलियां एकदम मसलने के लिए नहीं होतीं, बल्कि दिल के कोने में छिपाकर रखी जाती हैं।"

ऊपर वाले कमरे में नीलू फुलवा के कहने से एक कुर्सी पर बैठ गई। वह घबराहट से पसीना-पसीना हो रही थी। उसका दिल न जाने क्यों भय के मारे तेज़ी से धड़क रहा था। वह मां के कहने से यहां तक आने का साहस तो कर बैठी थी, लेकिन इस समय उसे ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे वह दूल्हे के आने से पहले ही घबराकर बेहोश हो जाएगी। फुलवा ने उसकी दशा को भांपा और अपने आंचल से उसके माथे पर झलक आए पसीने को पोंछा। नीलू ने उसकी कलाई थाम ली और बोली—"मां, मुझे डर लग रहा

है!"

"क्यों, क्या बात है, नीलू?"

"यह कैसा घर है, मां, जहां किसीकी आवाज सुनाई नहीं देती!"

"अरी, यह ऊपर की मंजिल है···वे सब लोग नीचे रहते हैं!"

"कौन?"

"तेरी सास, तेरी ननद और वह···।"

"क्या नाम है उनका?"

"यह तो मैं भूल ही गई···तू यहां बैठी रह, मैं अभी उन लोगों से मिलकर आई।"

फुलवा ने जैसे ही उठना चाहा, नीलू ने उसकी कलाई पकड़ ली और बोली—"नहीं, मां, तुम न जाओ···मुझे डर लग रहा है···।"

"पगली कहीं की! मेरे होते हुए तुझे किस बात का डर! वे लोग तुझे खा थोड़े ही जाएंगे। बस, देखेंगे ही तो अपनी बहू को।" उसने बेटी से अलग होते हुए कहा और फिर तनिक रुककर बोली—"हां, देख कोई बदतमीज़ी न कर बैठना। वह लड़का कोई बात करे तो ज़रा सलीके से जवाब देना।"

फुलवा तेज़ी से नीचे उतर गई। नीलू असहाय और लाचार बनी उस नई दुनिया में बैठी रही। उसका हृदय तेज़ी से धड़क रहा था और वह सहमी तथा घबराई-सी आने वाले क्षणों की प्रतीक्षा करने लगी। उसे उस अंधकार में आशा की किरणों की तलाश थी।

फुलवा ने जैसे ही प्रताप का सामना किया, उसने उसके हाथ में सौ-सौ के तीन नोट थमा दिए। फुलवा ने लालच-भरी दृष्टि से उन नोटों को देखा और हंसते हुए बोली—"बस, सरकार!"

"बड़ी लालची हो तुम, फुलवा!" कहकर प्रताप ने उसके गाल पर चुटकी भर ली।

"अपना कलेजा तश्तरी में रखकर आपके सामने जो पेश कर

ा है !"

प्रताप की बेचैनी ने उससे बहस करने की शक्ति छीन ली। लवा की भूखी नजरों को भांपते हुए उसने सौ का एक और नोट सके हाथ में थमा दिया। फुलवा ने कुछ और फैलना चाहा तो रिया ने उसे अपनी ओर खींच लिया और बोला—"अब रहने भी दे। मैंने सब समझा दिया है। सरकार खुश हो गए तो दुनिया बदल जाएगी तेरी।" कहकर वह उसे ज़बर्दस्ती खींचता हुआ बाहर ले गया।

प्रताप ने उनके जाते ही दरवाज़ा बन्द कर लिया। फिर पलट-कर डाकबंगले के मौन को भांपा। वातावरण एकदम नीरव था। उसने जलती हुई सिगरेट फर्श पर फेंककर पांव से मसल दी और बिल्लौरी गिलास में एक डबल पैग डाला। अब उसके कदम धीरे-धीरे उस जीने की ओर बढ़ रहे थे, जहां बहारें उसकी प्रतीक्षा कर रही थीं।

नीलू ने प्रताप के कदमों की आहट सुनी तो झट से संभलकर बैठ गई। उसके हृदय की धड़कन कुछ क्षणों के लिए रुक-सी गई। वह अभी तक आने वाले कदमों की आहट पहचानने का प्रयत्न कर रही थी कि एक मोटी आवाज़ ने उसके कानों के परदों को झिंझोड़ दिया और वह संभलकर बैठ गई। कोई उससे कह रहा था—"तुम इतनी सुन्दर हो, यह मैं सोच भी न सकता था!" वह चुप रही और लाज से सिमटकर गठरी बन गई। पैरों की आहट कुछ और निकट आ गई। प्रताप ने जानते हुए भी उससे प्रश्न कर दिया—"क्या नाम है तुम्हारा?"

"नीलू।" थरथराते होंठ कह उठे।

"खुद भी सुन्दर, नाम भी सुन्दर···जानती हो जब पहली बार मैंने तुम्हें झील के पार वाली बस्ती में देखा तब क्या अनुभव किया?"

प्रयत्न करने पर भी वह कोई उत्तर न दे सकी। प्रताप

होंठों पर मुसकराहट लाते हुए कहा—"भगवान ने तुम्हें किसी राजकुमार के लिए इस धरती पर भेजा है।"

"लेकिन मैं तो···मैं तो···।"

"देख नहीं सकती हो तो क्या हुआ!" प्रताप उसके और निकट आते हुए कह उठा।

यह सुनकर नीलू झेंप गई। प्रताप ने अपनी नशे में चूर आंखों से सौन्दर्य और यौवन की इस प्रतिमा को समीप से देखा। श्वेत साड़ी और चांदी के झुमकों से सुसज्जित वह नवयुवती उसे एक प्रलय के समान प्रतीत हुई। उसकी ज्योतिहीन आंखों में एक अनोखा आकर्षण था, जो उसके भोलेपन और सौन्दर्य में चार चांद लगा रहा था। आज पहली बार उसकी पाशविक प्रवृत्ति भी किसी नवयुवती की पवित्रता को नष्ट करने से पहले सहम उठी। वह उसे देखकर ही अपनी नज़रों की प्यास बुझाने लगा।

"मां कहां है?" वह झिझककर बोली।

"नीचे तुम्हारी सास के साथ बैठी चाय पी रही है।"

"वह कब आएगी?"

"जब तुम चाहो···बुलाऊं! मेरा साथ तुम्हें अच्छा नहीं लग रहा है···?"

"नहीं, ऐसी बात नहीं···।"

"तो इजाजत दो अपने पास बैठने की···।"

नीलू उसकी बात पर चुप रही और उसने अनुभव किया कि वह उसके बिलकुल पास आ बैठा है। उसकी घबराहट बढ़ गई, लेकिन मां की बात याद करके वह चुप रही। वह उस आदमी को समझने का प्रयत्न कर रही थी, जिसके हाथों में उसका जीवन सौंपा जा रहा था। प्रताप ने उसके अल्हड़ यौवन का ताप अनुभव किया और उसकी दृष्टि उसके गदराए बदन पर बार-बार फिस-लने लगी। वह दबे स्वर में पूछ बैठा—"क्यों, क्या सोचा तुमने?"

"जी, किस बारे में?"

दिया है !"

प्रताप की बेचैनी ने उससे बहस करने की शक्ति छीन ली। फुलवा की भूखी नजरों को भांपते हुए उसने सौ का एक और नोट उसके हाथ में थमा दिया। फुलवा ने कुछ और फैलना चाहा तो हरिया ने उसे अपनी ओर खींच लिया और बोला—"अब रहने भी दे। मैंने सब समझा दिया है। सरकार खुश हो गए तो दुनिया बदल जाएगी तेरी।" कहकर वह उसे जबर्दस्ती खींचता हुआ बाहर ले गया।

प्रताप ने उनके जाते ही दरवाज़ा बन्द कर लिया। फिर पलट-कर डाकबंगले के मौन को भांपा। वातावरण एकदम नीरव था। उसने जलती हुई सिगरेट फर्श पर फेंककर पांव से मसल दी और बिल्लौरी गिलास में एक डबल पैग डाला। अब उसके कदम धीरे-धीरे उस जीने की ओर बढ़ रहे थे, जहां बहारें उसकी प्रतीक्षा कर रही थीं।

नीलू ने प्रताप के कदमों की आहट सुनी तो झट से संभलकर बैठ गई। उसके हृदय की धड़कन कुछ क्षणों के लिए रुक-सी गई। वह अभी तक आने वाले कदमों की आहट पहचानने का प्रयत्न कर रही थी कि एक मोटी आवाज़ ने उसके कानों के परदों को झिझोड़ दिया और वह संभलकर बैठ गई। कोई उससे कह रहा था—"तुम इतनी सुन्दर हो, यह मैं सोच भी न सकता था!" वह चुप रही और लाज से सिमटकर गठरी बन गई। पैरों की आहट कुछ और निकट आ गई। प्रताप ने जानते हुए भी उससे प्रश्न कर दिया—"क्या नाम है तुम्हारा ?"

"नीलू।" थरथराते होंठ कह उठे।

"खुद भी सुन्दर, नाम भी सुन्दर···जानती हो जब पहली बार मैंने तुम्हें झील के पार वाली बस्ती में देखा तब क्या अनुभव किया ?"

प्रयत्न करने पर भी वह कोई उत्तर न दे सकी। प्रताप ने

होंठों पर मुसकराहट लाते हुए कहा—"भगवान ने तुम्हें किसी राजकुमार के लिए इस धरती पर भेजा है।"

"लेकिन मैं तो···मैं तो···।"

"देख नहीं सकती हो तो क्या हुआ!" प्रताप उसके और निकट आते हुए कह उठा।

यह सुनकर नीलू झेंप गई। प्रताप ने अपनी नशे में चूर आंखों से सौन्दर्य और यौवन की इस प्रतिमा को समीप से देखा। श्वेत साड़ी और चांदी के झुमकों से सुसज्जित वह नवयुवती उसे एक स्वप्न के समान प्रतीत हुई। उसकी ज्योतिहीन आंखों में एक अनोखा आकर्षण था, जो उसके भोलेपन और सौन्दर्य में चार चांद लगा रहा था। आज पहली बार उसकी पाशविक प्रवृत्ति भी किसी नवयुवती की पवित्रता को नष्ट करने से पहले सहम उठी। वह उसे देखकर ही अपनी नजरों की प्यास बुझाने लगा।

"मां कहां है?" वह झिझककर बोली।

"नीचे तुम्हारी सास के साथ बैठी चाय पी रही है।"

"वह कब आएगी?"

"जब तुम चाहो···बुलाऊं! मेरा साथ तुम्हें अच्छा नहीं लग रहा है···?"

"नहीं, ऐसी बात नहीं···।"

"तो इजाजत दो अपने पास बैठने की···।"

नीलू उसकी बात पर चुप रही और उसने अनुभव किया कि वह उसके बिलकुल पास आ बैठा है। उसकी घबराहट बढ़ गई, लेकिन मां की बात याद करके वह चुप रही। वह उस आदमी को समझने का प्रयत्न कर रही थी, जिसके हाथों में उसका जीवन सौंपा जा रहा था। प्रताप ने उसके अल्हड़ यौवन का स्पर्श अनुभव किया और उसकी दृष्टि उसके गदराए बदन पर बार-बार फिस-लने लगी। वह दबे स्वर में पूछ बैठा—"क्यों क्या सोच रही हो?"

"जी, किस बारे में?"

"अपने जीवन के बारे में...मेरा जीवन-साथी बनने के बारे में...।"

"वह तो आपको सोचना है। मेरा जीवन तो अंधेरा है।"

"मैं तुम्हें अपनी आंखों की ज्योति दूंगा। तुम्हें इस अंधकार से निकालकर कहीं दूर ले जाऊंगा...एक नये संसार में...जहां बस तुम और मैं...दूसरा कोई न हो...!"

"आप तो अच्छी-खासी कविता कहने लगे!" उसने प्रताप के इस भावुक वक्तव्य पर मुस्कराकर कहा।

"तुम्हें कविता अच्छी लगती है क्या?" प्रताप ने अपने होंठों पर जीभ फेरते हुए कहा।

"हां, मेरा जीवन भी तो एक कविता है, लेकिन ऐसी कविता... जिसमें जीवन का रस कम है और दर्द ज़्यादा।"

"तो आओ, यह दर्द बांट लें!" प्रताप ने अवसर का लाभ उठाने के लिए झट से उसका हाथ थाम लिया। वह उसके हाथ के स्पर्श को अनुभव करते ही कांप उठी। प्रताप ने उसके शरीर के कम्पन को अनुभव किया और हाथ हटा लिया। नीलू का शरीर पसीने से भीग चुका था। आज से पहले कभी किसी पुरुष ने उसका हाथ इस अपनत्व से न थामा था। प्रताप ने लपककर शराब का जाम उठा लिया और नीलू को थमाते हुए बोला—"लो, पी लो।"

"क्या?"

"अमृत...देवी-देवताओं का दिया प्रसाद...पुरखों के ज़माने से हमारे घराने में यही रिवाज चला आ रहा है...।"

"कैसा रिवाज?"

"लड़का और लड़की जब एक-दूसरे को पसंद कर लें तब अपनी ज़बान नहीं खोलते। दिल की पसंद को ज़बान तक नहीं लाते, बल्कि इन चांदी के गिलास में यह अमृत आधा-आधा पी लेते हैं... पहले लड़की, फिर लड़का।" प्रताप एक ही सांस में कहता चला गया—"बाद में दूसरा गिलास...पहले लड़का, फिर लड़की...

आधा-आधा पी लेते हैं।"

नीलू को चुप देखकर प्रताप ने क्षणभर सोचा और बोला—'तुम्हें मेरी सौगंध, नीलू'''इनकार न करना'''अपशकुन होता है'''अगर तुमने इनकार कर दिया तो मेरा दिल टूट जाएगा और देवी-देवता नाराज़ हो जाएंगे। यह उनका आशीर्वाद है, इनकार करने से उनका अपमान होगा।"

नीलू ने शराब का गिलास मज़बूती से थाम लिया और किसी निर्णय पर पहुंचने का प्रयत्न करने लगी। प्रताप उसके चेहरे पर आते-जाते भावों को बेचैनी से देखता रहा। वह डरने लगा कि अगर नीलू ने इनकार कर दिया तो उसका सारा खेल चौपट हो जाएगा। वह अच्छी तरह जानता था कि अगर नीलू होश में रही तो वह सरलता से उसकी हविस का शिकार न हो सकेगी।

प्रताप ने देवी-देवताओं की कसम दी, अपने प्यार का वास्ता दिया, तो वह सोचने-[illegible] की [illegible] बैठी। भोली-भाली लड़की इस शैतान की [illegible] को [illegible] का [illegible] बैठी। उसने कांपते हाथों से [illegible] और [illegible] होंठों तक ले गई। प्रताप सांस रोके [illegible] लगा।

"नहीं, यह झूठ है।" नीलू ने [illegible] और गिलास को धरती पर दे मारा।

"क्या झूठ है?" [illegible]

"देवताओं का [illegible]" उसने कांपती आवाज़ में कहा।

"नहीं, नीलू, [illegible]"

"धोखा नहीं, [illegible] पीते हैं तो ऐसी ही बू आती है।"

प्रताप उसकी [illegible] को समझ गया। वह अभी [illegible] ही रहा था

"मां कहां है?" उसने पूछा।

अब वह उस स्थान से भाग जाना चाहती थी। दरवाज़े का रास्ता टटोलती हुई वह आगे बढ़ने लगी। प्रताप ने आगे बढ़कर उसका रास्ता रोक लिया और बोला—"यह क्या नादानी है! कहां जा रही हो?"

"मां कहां है? मां···मां!" वह चीखी।

"वह तो चली गई···!"

"कहां?"

"बस्ती की ओर···अब यहां मेरे और तुम्हारे सिवा कोई नहीं!"

"उसने ऐसा क्यों किया?"

"पैसे के लिए···।" प्रताप ने सच्चाई को प्रकट करते हुए कहा—"तुम्हें बेच गई है मेरे हाथ।"

"नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता!" नीलू चीख उठी, लेकिन उसकी चीख गले में ही घुटकर रह गई। वह एक भयभीत हिरनी की तरह कांपने लगी और वहां से निकलने का उपाय सोचने लगी।

प्रताप उसके इरादे को भांप गया। इससे पहले कि नीलू वहां से भाग निकले, उसने अपनी भद्दी आवाज़ में ललकारकर कहा—"घबराओ नहीं, जीवन संवर जाएगा तुम्हारा! बस्ती वाले तो क्या कोई चिड़िया भी यहां पर नहीं मार सकती! किसीको कानों-कान खबर नहीं होगी। बन जाओ इस सांझ की दुल्हन···!"

घबराहट से नीलू का शरीर पसीना-पसीना हो गया। उसकी धड़कनों की गति बढ़ गई। अपनी मां की बात मान लेने के लिए वह अपने-आपको कोसने लगी। उसकी समझ में न आ रहा था कि अब वह क्या करे! एक बार फिर उसने सहायता के लिए मां को पुकारा, लेकिन उसकी आवाज़ कमरे की दीवारों से टकराकर रह गई।

प्रताप ने उसकी लाचारी पर एक ज़ोरदार कहकहा लगाया

और लपककर उसपर झपटा। नीलू बचने के लिए दरवाज़े की ओर बढ़ी। उसके हाथ कुंडी को टटोलने लगे। प्रताप ने आगे बढ़कर उसे पकड़ लिया।

"छोड़ दो मुझे!" वह एक भयभीत पंछी की तरह फड़फड़ा उठी और उसने प्रताप की पकड़ से छूट जाना चाहा, किन्तु उसकी पकड़ और कस गई।

फिर जैसे ही प्रताप ने उसकी चोली को टटोला, वह उछलकर मेज़ से जा टकराई। उसने सम्भलकर मेज़ का सहारा लिया और उसकी ओट में अपने-आपको छिपा लिया। प्रताप वहीं फर्श पर बैठ गया और उसकी ओर ललचाई दृष्टि से देखता हुआ अपने होंठों पर जीभ फेरने लगा। नीलू चुपचाप बैठी उसके अगले दाव की राह देखती रही। प्रताप आहट किए बिना एक बाज़ की भांति बैठा इन्तज़ार करने लगा। वह अभी नीलू को थोड़ा समय देना चाहता था, यह सोचकर कि शायद वह राज़ी से मान जाए।

जब बड़ी देर तक प्रताप ने कोई हरकत न की तो नीलू ने धीरे-धीरे दीवार का सहारा लेकर खिसकना आरम्भ किया। प्रताप भी पैरों की आहट दबाए उसके साथ-साथ बढ़ने लगा।

नीलू का शरीर पसीने से तर था। उसकी उखड़ी और तेज़ सांसों से उसका वक्षस्थल बार-बार तीव्र गति से उभर रहा था और प्रताप का धैर्य उसका साथ छोड़ रहा था, किन्तु वह उसे और आगे बढ़ जाने देना चाहता था। दरवाज़े के निकट पहुंचते ही प्रताप फिर उसपर झपट पड़ा और उसे अपनी मज़बूत बाहों में जकड़ लिया। वह एक लाचार पंछी की भांति एक बार फिर उसकी बाहों में फड़फड़ाई और जब कोई चारा न रहा तो उसने प्रताप की बांह में ज़ोर से अपने दांत गाड़ दिए। प्रताप पीड़ा से कराह उठा और उसकी जकड़ ढीली पड़ गई।

प्रताप की पकड़ से छूटते ही नीलू ने एक बार फिर भागने का प्रयत्न किया। वह तेज़ी से टटोलती हुई अर्' वाज़े तक पहु

ही थी कि प्रताप ने फिर उसे पकड़ लिया। नीलू के मुंह से एक चीख निकली और दीवारों से टकराकर रह गई।

"हरामजादी, नखरा करती है! पूरे चार सौ की रकम ले गई है तेरी मां!" प्रताप ने उसके बालों को कसकर पकड़ते हुए क्रोध में भरकर कहा।

तभी डाकबंगले के पिछवाड़े पहाड़ की पगडंडी पर घोड़ों की टापों के स्वर उभरे।

अभी सांझ ढली न थी। रसीला के दिलावर घोड़े अपनी मंद गति से यात्रियों को लिए मन्दिर से लौट रहे थे। हर दो पल बाद रसीला अपने कंधे से छागल उतरता और दो-चार घूंट शराब के हलक में उंड़ेल लेता। उसके होंठों पर एक पहाड़ी गीत था, जो वह शराब की धुनकी में गाए जा रहा था।

समीर और जुगनू की समझ में वह गीत न आ रहा था, किन्तु उस वातावरण में उसका पूरा-पूरा आनन्द ले रहे थे। दूर डूबते सूरज की लाली से बर्फीली चोटी पर जो दृश्य अंकित हो रहा था, समीर को बहुत आकर्षित कर रहा था। प्रकृति के इस मनोहर चित्र को अंकित करने के लिए उसकी उंगलियां मचल-मचल रही थीं।

तभी एक चीख सुनकर उसका ध्यान भंग हो गया। उसने घोड़े की लगाम खींच ली और इधर-उधर देखा। जुगनू ने भी घोड़ा रोक लिया और रसीला भी गीत गाना भूलकर उस चीख की दिशा में देखने लगा।

"आपने भी चीख सुनी, बाबू?" रसीला ने लड़खड़ाई आवाज में पूछा।

"लगता है, सामने वाले डाकबंगले में कोई चीखा है।" समीर ने कहा।

"मुझे भी यही लगता है।" जुगनू ने समीर की बात का समर्थन किया।

अभी वे लोग डाकबंगले की ओर देख ही रहे थे कि कुछ तोड़-

फोड के स्वर भी वहा से अचानक ही उभरे। एक खिड़की का शीशा टूटा और उन्होंने देखा कि दो परछाइयां एक-दूसरे में उलझी हुई हैं। उसी समय नीलू की चीख उन्हें दुबारा सुनाई दी।

"शायद कोई लडकी सहायता के लिए चिल्ला रही है।" जुगनू ने समीर की ओर देखकर कहा।

"हा, जुगनू ···।" समीर बोला—"तुम यही ठहरो।" यह कहकर उसने घोडे को डाकबगले की ओर मोडा। रसीला उसे उस ओर जाते देखकर चीख पडा—"अरे बाबू, इस घाटी मे हर शाम कितनी ही चीखें उभरती हैं और दब जाती है—तुम क्यो अपनी जान खतरे मे डालते हो!"

किन्तु समीर ने पलटकर रसीला को कोई उत्तर न दिया और घोड़े को एड़ लगा दी। वह घोडे को डाकबगले के दालान तक ले गया और सब दरवाजो को बंद पाकर उसने घोडे को दीवार के पास खड़ा किया। फिर उसकी पीठ पर खडे होकर छत तक पहुच गया। ऊपरी मंजिल की छत पार करके वह खिड़की की ओर बढ़ा और एक ही धक्के मे उसको तोड डाला। खिडकी को लाघकर जैसे ही वह कमरे में घुसा, दो जानी-पहचानी आखो ने शाम के अधेरे मे उसे घूरा। ये आंखें उसके सौतेले भाई प्रताप की थी, जिसके चगुल मे फसी भोली नीलू अपने-आपको स्वतत्र करने का अंतिम प्रयत्न कर रही थी।

"भैया!" समीर एकदम चीख उठा और प्रताप की पकड़ ढीली पड़ गई।

नीलू एक घायल हिरनी की तरह उछलकर समीर से आ टकराई और 'बाबू, बाबू' कहते हुए उसकी बाहों मे जा गिरी। उसकी उलझी सासों और रुक्क आवाज ने दम तरह दम तोड दिया जैसे समीर के आ जाने से किसी सुनहरी किरण ने उसके जीवन को छू लिया हो।

प्रताप समीर को देखकर लज्जा से गड गया और उसका सामना न कर सका तो मुह फेरकर खडा हो गया। समीर ने नीलू को अपनी मजबूत बांहों का सहारा दिया और प्रताप की ओर दे—

कर बोला—"आज कोई दूसरा आदमी तुम्हारी जगह होता तो मैं उसे ऐसा सबक सिखाता कि वह जीवन-भर याद रखता; किन्तु तुम मेरे भाई हो और तुम्हारे साथ हमारे घराने की इज़्ज़त जुड़ी हुई है, इसलिए मैं तुमसे छोटा होते हुए इतना जरूर कहूंगा कि जीवन बड़ा कीमती होता है। इसे तुम इस तरह बर्बाद मत करो।" यह कहकर समीर ने नीलू को संभाला और उसे साथ लेकर कमरे से बाहर निकल आया।

प्रताप एक डरपोक कबूतर की भांति सहमा-सा खड़ा रह गया। शराब का नशा और सौंदर्य की मस्ती उसके शरीर से पसीना बनकर फूट पड़ी। वह उस समय अपनी हार पर झुंझलाकर रह गया और उसने घृणा से धरती पर थूक दिया।

समीर के साथ नीलू को अस्त-व्यस्त दशा में आते देखकर रसीला का नशा हिरन हो गया। जुगनू भी उसे देखकर चौंक उठी। उसने समीर से कुछ पूछना चाहा, किन्तु समीर ने संकेत से मना कर दिया। परेशान-सा रसीला उसकी ओर बढ़ा तो समीर बोला—"क्यों परेशान होता है! न जाने हर शाम इस वादी में कितनी ही चीखें उभरती हैं और दब जाती हैं!"

"नहीं, बाबू, नहीं!" रसीला चिल्लाकर रुक गया। उसकी आवाज कण्ठ में दबकर रह गई।

तभी दूर आकाश में बिजली कड़की और वातावरण में एक भय व्याप्त हो गया!

६

फुलवा बार-बार कपड़ों में लपेटकर रखे हुए उन नोटों को गिन रही थी, जो आज उसने अपनी अंधी बेटी का सतीत्व बेचकर कमाए थे। आज से पहले उसने चार सौ की नकदी एकसाथ कभी न देखी थी और इसलिए वह नोटों को बार-बार छूकर विचित्र-सा हर्ष अनुभव कर रही थी। वह जवान खून, जिसे बूढ़े पति ने पानी कर रखा था, आज उसीकी बेटी के कारण रगों में उछल-उछलकर गुदगुदी उत्पन्न कर रहा था। आज वह अपने-आपको रसीला से अधिक धनी समझ रही थी। हर्षातिरेक में उसके होंठों पर एक फिल्मी गीत उभर आया।

तभी किसीका तेज़ स्वर सुनकर उसकी खुशियों के दीप बुझ गए। शायद रसीला लौट आया था और आंगन में कदम रखते ही उसने फुलवा को पुकारा था।

"फुलवा ···।"

फुलवा ने जल्दी से नोटों को कपड़ों की तह में छिपा दिया और सन्दूक को ताला लगाकर तेज़ी से बाहर चली आई। रसीला के तेवर देखकर उसे अपनी सांस रुकती-सी प्रतीत हुई।

"नीनू कहां है ?" रसीला ने बीवी को देखते ही प्रश्न किया।

उसकी आंखें लाल और चेहरा पीला हो रहा था। क्रोध और घृणा का संगम देखकर फुलवा का हृदय धड़क उठा, किन्तु वह संभलकर रसीला का स्वागत करने के लिए बढ़ी।

"नीनू कहां है ?" रसीला ने उसकी बांह झटकते हुए अपना प्रश्न दोहराया।

"मैं क्या जानूं ?" फुलवा ने उत्तर दिया—"सवेरे से शाम तक न जाने कहां-कहां झक मारती फिरती है। मेरा कहना थोड़े ही मानती है। सौतेली मां जो हूं।" कहकर फुलवा जाने लगी तो रसीला ने आगे बढ़कर उसका रास्ता रोक लिया और घृणापूर्ण दृष्टि से उसे देखने लगा।

"मुझे क्यों घूर रहे हो !" अपना बचाव करने के लिए फुलवा चिल्ला उठी—"अपनी लाड़ली को संभालो। किसीने उसकी जवानी को मसल दिया तो फिर मुझसे कुछ न कहना।"

अभी ये शब्द फुलवा की ज़बान पर लड़खड़ा रहे थे कि रसीला ने आगे बढ़कर उसके गाल पर कसकर तमाचा जड़ दिया। वह आश्चर्य और भय से बुत बन गई। वह पति, जो उसके इशारों पर नाचता था, आज इतना साहस कर बैठा था ! यह देखकर उसके पांव तले की जमीन खिसकने लगी। इससे पहले कि वह पति को ...ने-समझाने का प्रयत्न करे, उसकी दृष्टि नीलू पर पड़ी और वह ...न गई कि उसकी चोरी पकड़ी गई है। उसने घबराकर उधर देखा और वहां से भाग जाना चाहा।

किन्तु तभी रसीला उसपर गिद्ध की भांति झपटा और उसकी गर्दन दबोच ली। वह उसका गला घोंट देना चाहता था। फुलवा सहायता के लिए चिल्ला उठी।

आगे बढ़ी और मा को बचाने लगी। इसी छीना-झपटी मे रसीला के दिल मे दर्द उठा और वह कराहकर वहीं बैठ गया। उसके हाथ-पांव कापने लगे और वह सहारे के लिए तड़पने लगा। तभी समीर ने आगे बढ़कर उसे थाम लिया और सहारा देकर उसके कमरे तक ले गया।

अचानक ही छाई चुप्पी से पहले तो नीलू घबरा गई, फिर मामला समझते ही वह चिल्ला उठी—"बचा लो मेरे बापू को, बाबूजी, बचा लो⋯।"

कुछ ही देर में समीर डाक्टर को बुला लाया। डाक्टर ने आते ही वहा जमा लोगों को बाहर कर दिया और रसीला की जांच करने लगा।

"दिल के दौरे के बाद इसे लकवा मार गया है।" जांच के बाद डाक्टर ने बताया। रसीला का दाया भाग सुन्न हो चुका था। डाक्टर ने नींद का इजेक्शन लगाया और इलाज के लिए दवाओं का एक लम्बा-चौड़ा नुस्खा लिख दिया।

डाक्टर के साथ समीर ने जुगनू को भी हवेली भेज दिया। वह समीर को वहा छोड़कर न जाना चाहती थी लेकिन इस समय वह बहस न कर सकी। एक अजनबी के लिए समीर इतनी सहानुभूति दिखा रहा था और तीमारदारी कर रहा था, उसे यह अच्छा न लगा, लेकिन वह चुप रह गई। डाक्टर ने समीर को मरीज के पास कम से कम आधा घण्टे तक रुकने का परामर्श दिया। वह चाहता था कि रसीला खतरे से बाहर हो जाए, तभी समीर वहा से जाए।

"बेटी," उस दशा मे भी रसीला बोला—"समीर बाबू के लिए कहवा बना दे।"

"नहीं बाबा," समीर तुरत बह उठा—"बातें मत करो। आराम से सो जाओ।"

"आराम मे सो गया तो इस नीलू का क्या होगा, बाबू ?" रसीला ने अधखुली आखों से समीर की ओर देखा और कराहकर चुप हो गया।

"तुम घबराओ नहीं, बाबा, सब ठीक हो जाएगा।"

"कैसे होगा ? कौन इस अंधी लड़की का बोझ उठाने के लिए तैयार होगा ?" वह कांपती आवाज़ में बोला।

नीलू खिसककर बाहर चली गई। आज उसके अंधेरे जीवन ने बाप की आशाओं पर काली चादर ढांप दी थी। समीर रसीला की बेचैनी देखकर क्षणभर के लिए चुप रहा। फिर उसने धीरे से पूछा—"क्या नीलू जनम की अंधी है ?"

"नहीं बाबू," रसीला अपनी उखड़ी हुई सांसों पर काबू पाते हुए बोला—"किसीकी नज़र लग गई मेरी बेटी को। जब इसकी आंखें गईं तब यह कोई आठ या नौ बरस की थी। बुरा हो उस ठाकुर का, जिसने मेरी बेटी के जीवन में अंधेरा कर दिया !"

"कौन ठाकुर ?" वह फौरन पूछ बैठा।

"चौधरी शमशेरसिंह।"

रसीला के मुंह से अपने पिता का नाम सुनकर समीर के दिल को एक धक्का-सा लगा। वह उससे नज़रें चुराता हुआ दूसरा प्रश्न कर बैठा—"क्या किया था ठाकुर ने ?"

"बरसों पहले की बात है। एक दिन नीलू जंगल में तितलियां पकड़ रही थी तब वह एक जानवर को देखकर पागलों की भांति भागी। जानवर तो रास्ता काटकर निकल गया, लेकिन मेरी बेटी सड़क पार करते-करते ठाकुर की जीप के नीचे आ गई। उस समय वह जंगल में अपने साथियों के साथ शिकार खेल रहा था।" रसीला ने रुक-रुककर नीलू के साथ हुई दुर्घटना को बताया।

"फिर क्या हुआ ?"

"उस दुर्घटना के बाद मेरी बच्ची की दुनिया अंधेरी हो गई। वह सदा के लिए अंधी हो गई।"

"तो, यह एक दुर्घटना ही थी !" समीर ने लम्बी सांस लेते हुए कहा।

"हां, बाबू," रसीला की आंखों में आंसू उभर आए—"फिर

ठाकुर ने पैसे देकर हमारा मुंह बंद कर दिया। पैसे से नीलू का जीवन तो बच गया, लेकिन आंखों का उजाला सदा के लिए रूठ गया।" कहते-कहते वह रो पड़ा। उसकी सांस रुक-रुककर चलने लगी। माथे पर पसीने की बूंदें उभर आईं।

समीर ने आगे बढ़कर उसके पसीने को पोंछा और समीप रखी हुई दवा की कुछ बूंदें उसके मुंह में डाली। वह पथराई आंखों से समीर को देखने लगा। वह सोचने लगा कि वह एक अजनबी नौजवान के एहसान के नीचे दबा जा रहा है। उसे क्या खबर थी कि जिस ठाकुर ने उसकी बेटी के जीवन में अंधेरा भरा था, आज उसीका बेटा उसके निकट खड़ा उसे उजाले की ओर ले जाने का प्रयत्न कर रहा है!

तभी नीलू लौट आई। उसके हाथों में कहवे का प्याला था, जो वह अपने मेहमान के लिए बनाकर लाई थी। समीर ने कहवा पीने से इनकार कर दिया तो रमीला ने ज़िद की। नीलू भी उसकी ओर आग्रहपूर्ण दृष्टि से देखने लगी। समीर ने उस गरीब लड़की का मन रखने के लिए प्याला थाम लिया और गरम-गरम कहवे के घूंट कण्ठ में उतारने लगा।

कहवा पीते हुए जब वह नीलू की खूबसूरत आंखों को देख रहा था तब उसके सामने बरसों पहले की वह नीलू आ गई, जो उछल-उछलकर जंगल में तितलियां पकड़ रही थी। उसके बचपन की दुर्घटना याद करके उसके दिल में एक चुभन-सी पैदा हुई और वह नीलू की सुन्दर किन्तु ज्योतिहीन आंखों में झांकता रहा।

फिर जब वह चला गया तो नीलू मकान में अकेली रह गई। उसके सामने उसका बापू बेहोश पड़ा था। मकान में पहले जैसा सन्नाटा व्याप्त हो गया, जो अक्सर उसके जीवन को घेरे रहता था। वह चुपचाप बैठी अपने बापू की लाचारी के बारे में सोचती रही। फिर वह सोचने लगी कि यदि समीर आज आकर उसे उस ठेकेदार के पंजों से मुक्त न कराता तो वह किसीको मुंह दिखाने के योग्य न रहती। उसका जीवन उसकी आंखों की तरह अंधेरा हो जाता।

उस घड़ी की याद करते ही उसके दिल में एक झुरझुरी-सी उठी और वह कांपकर रह गई। अचानक उसे बराबर के कमरे में से कोई आहट सुनाई दी और उस आहट को पहचानते ही वह अपने स्थान से उठी और उस ओर बढ़ी। वह दबे पांव वहां तक जा पहुंची, जहां उसे अपनी मां की उपस्थिति की अनुभूति हुई थी। उसे यह समझने में देर न लगी कि फुलवा उसके बाप के साथ हमेशा के लिए सम्बन्ध तोड़कर भाग जाना चाहती है। वह चुपके से शायद अपना सामान उठाने चली आई थी।

फुलवा ने अपना संदूक उठाया और जाने को पलटी। वह नीलू का सामना करते ही क्षणभर के लिए ठिठकी। इससे पहले कि वह नीलू से बचकर निकल जाती, नीलू उसके कदमों से लिपट गई और गिड़गिड़ाकर बोली—"नहीं मां, मत जा···मेरे बापू को छोड़कर मत जा···तू चाहे मुझे मार डाल···गाली दे···कुछ भी कर, मैं बुरा नहीं मानूंगी···पर बापू को इस घड़ी छोड़कर मत जा···।"

"हट जा सामने से कम्बख्त···!"

"नहीं, मां, ऐसा अन्याय मत कर···वह बेमौत मर जाएगा···।"

"तो मर जाने दे···रांड मैं हो जाऊंगी, तुझे क्या!" वह एक नागिन की तरह फुफकार उठी और जब नीलू ने फिर उसका रास्ता रोकना चाहा तब फुलवा ने उसके सीने पर जोर से एक लात मारी। नीलू 'मां' कहकर चीखी और सीने को हाथ से दबाकर बैठ गई।

फुलवा नीलू के बाप को छोड़कर हमेशा के लिए जा रही थी। वह अपना सामान लेकर पिछवाड़े की दीवार फांद गई। नीलू ने उसके जाते हुए कदमों की आहट सुनी और दीवार का सहारा लेकर उठ खड़ी हुई। उसने अपनी आंखों में भर आए आंसू पी लिए और दबे पांव उस कमरे में लौट आई, जहां उसका बापू इस घटना से बेखबर सो रहा था।

अचानक उसने आंखें खोल दीं और कमजोर आवाज में बोला—"नीलू!"

बाप की आवाज़ ने नीलू के शरीर में थरथराहट उत्पन्न कर दी। वह इसी हड़बड़ाहट में सिसकती हुई अपने बाप के बिस्तर तक जा पहुंची। बाप ने फिर पुकारा तो उसके होंठ कांपे और वह बोल उठी—"कैसी तबीयत है बापू ?"

"कौन था ?" उसने बेटी के प्रश्न पर ध्यान न देते हुए पूछा।

"कोई नहीं, बापू !" वह तनिक झिझककर बोली।

रसीला ने बेटी की घबराहट को अनुभव किया और थोड़ी देर चुप रहकर अचानक बोला—"अच्छा हुआ, वह नागिन भाग गई।"

"बापू !"

"हां, बेटी ! जब से इस घर में आई, ग्रहण लग गया हमारी ज़िन्दगी को। न मैं उसे इस घर में लाता और न यह दिन देखना नसीब होता।" उखड़ी-उखड़ी सांसों के बीच बड़ी कठिनाई से शब्द निकल रहे थे, किन्तु आज वह दिल की भड़ास निकाल लेना चाहता था। नीलू ने उसे टोकना चाहा, किन्तु वह बोलता ही चला गया। उसने नीलू को अपने पास बुलाया और उसका हाथ अपने हाथ में लेकर सहलाने लगा। वह बापू की तसल्ली के लिए पास बैठी हुई बातें सुनती रही।

"दिलरुबा कहां है ?" रसीला अचानक ही पूछ उठा।

"यहीं कहीं रखा है···" वह इधर-उधर देखते हुए बोली।

"लाओ तो···"

नीलू ने बहस करना उचित न समझा और चुपचाप दिलरुबा उठा लाई। रसीला ने ज़िद की कि नीलू उसका प्रिय पहाड़ी गीत सुनाए। वह गीत, जो उसकी मां ने बचपन में सिखाया था। बापू की खुशी के लिए नीलू गाने लगी। उसने दिलरुबा के तार छेड़ दिए और वातावरण में एक दर्दभरा गीत उभरने लगा [illegible] गीत, जो एक बाप अपनी बेटी के बिछोह में गाता है। [illegible] रो रहा था और उसकी आंखों से आंसू [illegible] अपनी मधुर आवाज़ में बापू के दिल के दर्द को [illegible]

कर रही थी। वह जानती थी कि फुलवा की हरकतों ने उसके दिल को छलनी कर दिया है। वह उसकी मानसिक शांति भंग करके न जाने किस जन्म का बदला लेकर चली गई थी। नीलू ने सोचा कि शायद उसके गाने से उसके बापू को कुछ शांति मिल जाए।

आधी रात की निस्तब्धता को चीरता हुआ वह गीत रसीला के दिल और दिमाग पर छा चुका था। आज नीलू की मां की भूली-बिसरी यादों ने उसे फिर आ घेरा था। वह पहाड़ी गीत, जिसका वह कभी दीवाना था, आज भी उसके दुःख में सम्मिलित उसका दिल बहला रहा था। नीलू भी बेसुध-सी दिलरुबा के तार छेड़े जा रही थी और गीत वातावरण में गूंज पैदा कर रहा था।

अचानक नीलू के हाथ रुक गए। दिलरुबा के तार खामोश हो गए। किन्तु वह गीत अभी तक उस अंधेरे मकान में गूंज रहा था। गीत सुनते-सुनते उसके बापू को नींद आ गई थी। नीलू ने दिलरुबा एक ओर रख दिया और धीरे से बिस्तर से उतर गई ताकि उसके बापू की नींद न टूटे। फिर उसने बापू के ऊपर फटा-पुराना कम्बल डाल दिया ताकि उसे सर्दी न लगे और पैरों को गरमी पहुंचाने के लिए गरम पानी की बोतल सरका दी।

बापू के पांव छूते ही उसे एक धक्का-सा लगा। उसके पांव बर्फ की भांति ठंडे थे। एक बार फिर नीलू ने बापू के पांव छुए और उसके दिल की धड़कन तेज हो गई। वह बिजली की सी तेज़ी से बापू पर झुकी और गाल, गर्दन और माथे को छूकर देखने लगी, किन्तु उसका सारा शरीर ठंडा था। वह जंगली बांस की तरह कांप उठी और घबराहट में उसके मुंह से डरी-डरी-सी आवाज़ निकली—"बापू! ···बापू!" जब बाप ने बेटी की पुकार का कोई उत्तर न दिया तब वह बौखलाकर उसका शरीर पूरी शक्ति से झिंझोड़ने लगी और उसके गले से एक घुटी-घुटी-सी चीख निकल गई।

वह तड़पकर कमरे से बाहर निकल आई। फिर उसने चीख चीखकर सोई हुई बस्ती को जगा दिया। कमरे में लौटकर एक बा

फिर उसने बापू के शरीर को हिलाया-डुलाया और उसको जगाने का प्रयत्न किया, किन्तु उसे सफलता न मिली और वह एक विवश हिरनी की भांति इधर-उधर सिर पटकने लगी।

जब गांव के मुखिया ने बस्ती वालों को रसीला की मौत का समाचार सुनाया तब नीलू पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा। उसके कांपते होंठ सर्द हो गए। नसों में दौड़ता हुआ खून जमने लगा। वह दीवार का सहारा लेकर वहीं बैठ गई और डबडबाई आंखों से बापू की ओर देखती हुई एक गहरी सोच में डूब गई। बस्ती वाले उसके बापू की लाश को घेरे खड़े थे। और वह उस अंधकार की कल्पना कर रही थी, जो दूर-दूर तक फैलता चला जा रहा था।

अगली सुबह समीर जब कीमती दवाएं लेकर शहर से लौटा तब नीलू के मकान में एक भयानक नीरवता व्याप्त थी। वातावरण में शोक घुल गया था, जिसे अनुभव करते ही एक भय ने उसके हृदय को जकड़ लिया। आंगन एकदम खाली था। वह नीलू को पुकारता हुआ सीधा अन्दर चला गया। कमरा खाली था। वहां किसीको न देखकर उसका दिल धड़क उठा। उसने इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई। तभी उसने रसीला की खाट को देखा, जो अब सीधी खड़ी थी। उसी समय चौकू आंखों में आंसू लिए वहां आया और उसने समीर को सब कुछ बता दिया।

"लेकिन नीलू कहां है?" समीर ने घबराकर पूछा।

"बापू की चिता छोड़कर अचानक ही कहीं चली गई!"

'कहां?"

"कुछ पता नहीं।" चौकू बोला—"मैंने बस्ती का कोना-कोना छान मारा है, लेकिन वह कहीं नहीं मिली।" कहते-कहते चौकू रो पड़ा।

समीर ने उसे सांत्वना दी और वह सोचकर अचम्भित रह गया कि इतना बड़ा तूफान नीलू के जीवन में अचानक आ गया! वह परेशान-सा मकान के बाहर चला आया। चौकू ने [illegible]

आना चाहा तो समीर ने उसे वहीं रोक दिया। वह दृष्टि उठाकर बार-बार उस शांत झील को देखने लगा, जो उन पहाड़ियों के बीच एक अजगर की भांति फैली हुई थी। वह तेजी से उस ओर चलने लगा। उसके हाथ में दवाओं का पैकेट था। उसे देखकर उसके होंठों पर एक फीकी मुसकराहट उभर आई। झील के किनारे पहुंचकर उसने दवाओं का पैकेट झील में फेंक दिया।

उसका दिल रो रहा था, किन्तु वह अपने-आपपर काबू पाने का प्रयत्न करता रहा। फिर वह नीलू के बारे में सोचने लगा। अब वह धीरे-धीरे झील के किनारे-किनारे चलने लगा। झील का मचलता हुआ पानी किनारे की रेत से टकरा जाता और उन थपेड़ों से वातावरण में एक हल्की-सी सरसराहट पैदा हो जाती।

'नीलू कहीं जीवन से ऊबकर इस झील में न कूद गई हो!' सोचते ही समीर का हृदय भय से धड़क उठा, किन्तु वह अचानक ही अपने इस भ्रम पर विश्वास न कर सका! फिर वह नीलू को इधर-उधर तलाश करने लगा। तभी उसके मानस-पटल पर झील के उस भाग की परछाई उभर आई, जहां उसने नीलू को पहली बार देखा था। वह यह सोचते ही उस ओर भागा। समीर का अनुमान ठीक था। बस्ती से दूर झील के किनारे वह उसी पत्थर पर चुपचाप बैठी थी।

समीर ने अपनी तेज सांसों पर नियंत्रण किया और धीरे-धीरे वह नीलू की ओर बढ़ने लगा। नीलू पत्थर की मूर्ति की भांति बैठी किसी विचार में तल्लीन थी। वह अपनी ज्योतिहीन आंखों से झील के पानी को निहार रही थी। झील का पानी एकदम शांत था। वातावरण में भी एक सन्नाटा व्याप्त था। समीर सरकते-सरकते उसके बिल्कुल पास पहुंच गया और कुछ देर चुपचाप खड़ा उसके उदास चेहरे को देखता रहा।

"आ गए बाबू!" नीलू ने उसकी ओर देखे बिना कहा। समीर दो कदम और आगे बढ़ा और दर्दभरी आवाज़ में पुकारकर

लिए ?"

"ताकि तुम अपने विश्वास के सहारे जी सको !"

"नहीं बाबू, नहीं···मैं अब जीना नहीं चाहती !" वह तड़पकर बोली।

"मरना भी तो इतना आसान नहीं, नीलू।" समीर ने उसे समझाया—"चलो, मेरे साथ।"

नीलू ने समीर के मुंह से यह सुना तो पलभर के लिए वह चुप हो गई। गालों पर रुके आंसू प्रभात की सुनहरी किरणों के प्रकाश में चमकने लगे और वह मूर्तिवत् उस अजनबी को पहचानने का प्रयत्न करने लगी, जो उसके जीवन का सहारा बनने का उत्तर-दायित्व संभालना चाह रहा था।

"यह दो दिन की पहचान न जाने किस जन्म का सम्बन्ध लेकर आई है," समीर ने नीरवता को भंग करते हुए कहा—"मैं तुम्हें अब यों न भटकने दूंगा।"

"लेकिन बाबू···।"

"कहो।"

"तुम मुझपर इतना बड़ा उपकार क्यों कर रहे हो ?"

"एक पाप के प्रायश्चित्त के लिए, नीलू···!"

नीलू उसके हृदय की बात को पहचानने का असफल प्रय[त्न] करने लगी। वह विवश और अंधी दृष्टि से उसकी ओर देख उठ[ी।] समीर ने आगे बढ़कर उसकी भीगी पलकों को अपनी उंगलिय[ों से] पोंछ डाला। नीलू को अनुभव हुआ जैसे अचानक उदास और [...] झील में खलबली मच गई हो···।

७

जुगनू ने जब रानी मां को बताया कि समीर बस्ती में रहने वाले एक मामूली आदमी के लिए दवा खरीदने गया है तब वह परेशान हो गई। वह थोड़ी देर के लिए भी घर के बाहर कदम रखता था तो मां का दिल धड़कने लगता था। और अब वह बस्ती वालों के घरों में जाकर उनके मामलों में दिलचस्पी लेने लगा तो उनकी परेशानी कुछ और बढ़ गई।

वह बेचैन हो उठी और दीवान साहब के साथ बस्ती तक जाने को तैयार हो गई।

लेकिन वह दुशाला ओढ़े जैसे ही कमरे से निकली, उनके कदम वहीं रुक गए। उनका बेटा लौट आया था।

समीर अकेला न था। उसके साथ नीलू भी थी, जो मुख्य द्वार को पार करते ही ठिठक गई थी। वह चुपचाप इस नये वातावरण को परखने का प्रयत्न कर रही थी। दीवान साहब और रानी मां इस सुन्दर पहाड़ी युवती को देखकर उलझन में पड़ गए। जुगनू दूर खड़ी उस युवती को गौर से देखने लगी। नीलू फटे-पुराने और रंगीन पहाड़ी वस्त्रों में किसी अनोखे संसार की रहने वाली प्रतीत हो रही थी।

नीलू को एक कोने में छोड़कर समीर मां की ओर बढ़ा। रानी मां की समझ में समीर की यह बात अभी तक न आई थी। वह चुपचाप खड़ी इसी सम्बन्ध में सोच रही थी। जुगनू भी थोड़ा निकट आ गई। दीवान साहब भी कभी समीर को और कभी बस्ती की उस निर्धन युवती की ओर देख रहे थे।

मीर ने पहले मां के पैर छुए और फिर धीरे से किन्तु दृढ़
बोला—"नीलू अब यहीं रहेगी, मां !"
यह सुनते ही हर व्यक्ति अपनी जगह चमक उठा, जैसे अचानक
सबको बिजली के तार का झटका लग गया हो। इससे पूर्व कि
उससे कोई प्रश्न पूछतीं, वह तुरन्त कह उठा—"यह वही अंधी
की है मां, जिसके बारे में रात मैंने तुम्हें बताया था।"
"यह तो मैं समझ गई, लेकिन इस घर में इसका क्या काम ?"
"अब यह अनाथ है···इसकी मां नहीं···बाप का देहान्त भी
रात हो गया। यह तो मौत को गले लगाना चाहती थी, लेकिन
ने इसे यह पाप करने से रोक दिया और इसकी मजबूरियों को
खकर यहां ले आया।" समीर ने नीलू के बारे में जानकारी दी।
"यहां ले आया, यह तो बहुत अच्छा किया ! देख रही हूं कि
ड़े ही दिनों में इस हवेली को तुम चिड़ियाघर बनाने वाले हो।
हो तो गांव का गांव ही यहां बसा दो।"
मां की यह बात सुनकर समीर दुखित हो उठा। मां से उसे
ऐसे उत्तर की अपेक्षा न थी। फिर भी उसने धैर्य से काम लिया
और पलटकर नीलू की ओर देखा, जो दूर खड़ी उन लोगों पर हुई
प्रतिक्रिया को शायद अब तक समझ चुकी थी।
समीर नीलू की ओर बढ़ा, किन्तु मां की आवाज सुनकर रुक
गया।
"कहां जा रहे हो ?"
"नीलू को छोड़ने···।"
"कहां ?"
"अपने मित्र गिरधर के यहां···।"
"इसकी आवश्यकता नहीं ! यदि तुम अपनी जिद पूरी ही करना
चाहते हो तो दे दो इसे इस छत का सहारा···।"
"मां !" वह हर्ष से उछल पड़ा। रानी मां के चेहरे के बदलते
भावों को देखकर समीर समझ गया था कि वह उसकी बात को

टालेंगी नहीं। उसने मां के कंधों को पकड़कर कहा—"मुझे विश्वास था मा, तुम इनकार नहीं करोगी। इसी विश्वास के बल पर ही तो मैं इस अनाथ को यहां लाया था।"

"अच्छा, अच्छा, अब बातें न बना।" रानी मा ने समीर को तनिक झिड़कते हुए कहा—"यह भी सोचा है कि इतनी बड़ी हवेली में यह करेगी क्या ? इसका दिल कैसे लगेगा ?"

"हां, समीर बाबू, किसी नवयुवती को अकारण ही घर में नहीं रखा जा सकता।" दीवान साहब ने दलील दी।

"यह तो मैंने रास्ते में ही इसे समझा दिया है।"

"क्या समझा दिया है ?" रानी मा ने पूछा।

"यही कि तुम्हारी देखभाल करनी होगी···सुबह उठकर तुम्हें स्नान कराना होगा, पूजा का सामान तैयार करना होगा और फिर मीरा के भजन सुनाने होंगे।" कहते-कहते वह मां के समीप आ गया और बोला—"हां मा, इसकी मधुर आवाज़ सुनोगी तो दुनिया के सारे दुःख-दर्द भूल जाओगी!"

"अरे, मुझे दुःख है क्या जो···।"

"बेटे के विवाह की चिन्ता जो दिन-रात खाए जा रही है तुम्हें!"

समीर ने यह बात कुछ ऐसे भोलेपन से कही कि सब लोग खिलखिलाकर हंस पड़े। एक बारीक हंसी और भी उभरी और वह थी नीलू की। उसे हंसता देखकर सब लोग चुप हो गए और उनकी निगाहें उसकी ओर इस प्रकार उठ गईं जैसे हंसकर नीलू ने कोई पाप कर दिया हो। इससे वातावरण में एक सन्नाटा व्याप्त हो गया। समीर को उन सबका यह व्यवहार अच्छा न लगा, किन्तु वह चुप रहा।

जुगनू ने समीर के तेवर देखे तो अवसर को हाथ से न जाने दिया। वह तुरन्त नीलू की ओर बढ़ी और उसका हाथ थामते हुए बोली—"आज्ञा हो तो मैं समझा दूं नीलू को, इस घर के रीति-

खिला। साथ मिल जाने से वह इस नये वातावरण में घबराहट अनुभव नहीं करेगी...।"

"एक साधारण लड़की के लिए तुम यह सब कर सकोगी?" समीर ने पूछा।

"क्यों नहीं! जो लड़की तुम्हारी आंखों में असाधारण है, वह मेरी दृष्टि में साधारण कैसे रह सकती है!" जुगनू ने उत्तर दिया और नीलू से बोली—"चलो, मेरे साथ चलो नीलू!"

नीलू, जो अब तक चुपचाप खड़ी अपनी मंजिल खोज रही थी, जुगनू का सहारा पाकर संभल गई।

समीर ने आगे बढ़कर नीलू का हाथ पकड़ा और उसे मां की ओर लाते हुए बोला—"नीलू, मां के पैर छुओ...आशीर्वाद लो।"

नीलू ने झुककर मां के पैर छुए और मानो तड़पकर बोझिल स्वर में कह उठी—"मां, मुझे ममता की भीख दोगी ना?"

रानी मां ने स्नेहभरी दृष्टि से समीर की ओर देखा और नीलू के सिर पर हाथ रख दिया। मां का आशीर्वाद पाकर नीलू जुगनू के साथ उनके शयन-कक्ष की ओर चल पड़ी। दीवान साहब चुपचाप खड़े इस नाटक को देखते रहे। फिर अचानक ही उन्होंने समीर से पूछा—"यह रसीला की बेटी है ना?"

"हां, दीवानजी। रसीला, घोड़े वाला...आप जानते थे क्या उसको?"

"गए बरस जब अस्तबल के जानवर बिके थे तब शायद उसीने घोड़े खरीदे थे।"

"रसीला तो अब इस संसार में नहीं रहा, लेकिन वे घोड़े अब भी मौजूद हैं।" समीर ने गम्भीर होकर कहा—"अगर किसी आदमी का प्रबंध हो जाए तो नीलू सदा के लिए किसीपर भी बोझ नहीं बनेगी।"

दीवान साहब ने उसका संकेत समझ लिया और समर्थन में सिर हिलाते हुए चले गए। मां, जो नाश्ते के लिए बेटे की राह देख

रही थी, दलीलान को मांग लेकर उसे नाश्ता कराने के लिए अन्दर ले गई।

नीलू को सहारा देकर जुगनू उसे अपने कमरे में ले आई। अन्दर आते हुए उसके पांव नरम-नरम कालीन में धंसे जा रहे थे। उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कोई उसे स्वर्ग में ले आया हो। नीलू ने तनिक रुककर जुगनू से पूछा—"क्या नाम है आपका ?"

"जुगनू···मैं दीवानजी की बेटी हूं।"

"कुंवर साहब रिश्ते में आपके क्या लगते है ?"

"रिश्ते में···हां, हां, सिर्फ दोस्त हैं···।" जुगनू ने अचकचाकर कहा।

"तब तो मैं भी आपसे दोस्ती कर सकती हूं···।"

"क्यों नहीं !"

"दिल की बात भी आपसे कह सकती हूं ना ?"

"हां।"

"तो एक बात सच-सच बताओगी ?"

"पूछो।"

"मेरा यहां आना किसीको खटका तो नहीं ?"

"सिर्फ एक को···।"

"कौन है वह ?"

"यह राजमहल···किस शान से यह इन पहाड़ियों के बीच सिर उठाए खड़ा है। संसार-भर का सौंदर्य यह अपने अन्दर समोए हुए है और तुम हो कि इसकी सुन्दरता को सराह भी नहीं सकतीं !"

वह जुगनू की इस पहेली पर हंस पड़ी। फिर अचानक उसकी हंसी थम गई। उसकी पलकों पर आंसू झिलमिला आए। जुगनू ने उसकी यह दशा देखी तो पूछ बैठी—"क्या हुआ ?"

"कुछ नहीं !"

"तुम्हारी आंखों में आंसू···।"

"यों ही अपने दुर्भाग्य पर रोना आ गया।" वह आंसू पोंछकर इधर-उधर देखने लगी। फिर जुगनू का हाथ थामकर बोली—"मुझे रहना कहां होगा ?"

"पहले आराम कर लो। फिर और बातें करना।" जुगनू ने कहा—"बैठो···अरे, अरे, धरती पर नहीं, इस सोफे पर बैठो।"

जुगनू ने उसे सहारा दिया तो वह सोफे को छूते हुए बोली—"नई जगह है। दो-चार दिन में जांच हो जाएगी।" यह कहते-कहते वह सोफे पर बैठ गई।

तभी जुगनू ने निकट रखे रेडियो का स्विच ऑन कर दिया। किसी मर्द की आवाज़ सुनते ही नील्लू घबरा गई और जल्दी-जल्दी अपने कपड़ों को ठीक करने लगी। यह देखकर जुगनू ने रेडियो का स्विच ऑफ कर दिया।

"कौन था ?" दो पल के सन्नाटे के बाद नीलू ने पूछा।

"रेडियो की आवाज़···।"

"ओह समझी···जादू का बाजा···।"

"तुमने सुना है ?"

"हां, हमारी बस्ती में मुखिया के घर सुबह-शाम बजता है।"

"तुम्हें अच्छा लगता है ?"

"हां, जब वह गाने लगता है···।"

"इसका मतलब है···तुम्हें संगीत अच्छा लगता है···!"

"जो चीज़ जीवन के दर्द को कम करे, वह किसीको बुरी लगेगी भला !"

जुगनू उसका उत्तर सुनकर झेंप गई। वह तो उसे गंवार समझकर मज़ा ले रही थी, लेकिन नील्लू जब जीवन का दर्शन समझाने लगी तब वह तिलमिलाकर रह गई और उसे बाथरूम की ओर ले गई।

"अब कहां ?" नील्लू ने पूछा।

"बाथरूम···।"

"[illegible] होगा मुझे [illegible]..."

"[illegible] बस्ती को [illegible] [illegible]
कि [illegible] मैं [illegible]..."

"लेकिन डरो मत..."

"लेकिन क्या करो... कोई न कोई उपाय हो जाएगा। बंबई
में रहने के रीति-रिवाज सीख जाओगी तो यह भी भूल जाओगी कि
तुम बस्ती की रहने वाली हो।"

"सच !" नीसू के होंठ थरथराए और वह अपनी [illegible]
आंखों से जुगनू को देखने का प्रयास करने लगी। उसे लगा जैसे
उसका प्यार और उसकी सहानुभूति पाकर उसके दिल की प्यास
को कुछ देर के लिए शांति मिल गई हो।

वह नहाने के लिए बढ़ी, किन्तु जुगनू की उपस्थिति अनुभव
करके लजा गई। जुगनू ने देखा कि नीसू झिझक रही है तो वह
बाहर चली गई। किन्तु जाने के पहले उसने नीसू को शावर का
बटन बता दिया, जिसे दबाते ही नल से पानी आ जाता था।

जुगनू के जाते ही नीसू ने अनुभव किया कि वह अकेली रह गई
है। किसीके सामने भला वह कैसे नहा सकती थी ! अब वह बाथ-
रूम के संगमरमरी फर्श पर धीरे-धीरे खिसकने लगी। उसने दीवारों
को छू-छूकर बाथरूम की सीमा ज्ञात कर ली और फिर दरवाजे
को खींचकर पूर्ण संतोष कर लिया। अब वह एक-एक करके अपने
कपड़े उतारने लगी।

नल के निकट जाते हुए उसे जुगनू के शब्द याद आए, 'बंबई
में रहने के रीति-रिवाज सीख जाओगी तो यह भी भूल जाओगी कि
तुम बस्ती की रहने वाली हो।'

मां के अत्याचारों और भाग्य की ठोकरों के बाद [illegible]
सहानुभूति बड़ी भली लग रही थी। अपनों ने [illegible]
लेकिन परायों ने अपना लिया—उसने सोचा और [illegible]
को दबा दिया ताकि शरीर के मैल को अच्छी तरह धो [illegible]

"यों ही अपने दुर्भाग्य पर रोना आ गया।" वह आंसू पोंछकर
र-उधर देखने लगी। फिर जुगनू का हाथ थामकर बोली—
मुझे रहना कहां होगा?"
"पहले आराम कर लो। फिर और बातें करना।" जुगनू
कहा—"बैठो···अरे, अरे, धरती पर नहीं, इस सोफे पर बैठो।"
जुगनू ने उसे सहारा दिया तो वह सोफे को छूते हुए बोली—
"नई जगह है। दो-चार दिन में जांच हो जाएगी।" यह कहते-कहते
वह सोफे पर बैठ गई।
तभी जुगनू ने निकट रखे रेडियो का स्विच ऑन कर दिया।
किसी मर्द की आवाज़ सुनते ही नीलू घबरा गई और जल्दी-जल्दी
अपने कपड़ों को ठीक करने लगी। यह देखकर जुगनू ने रेडियो क
स्विच ऑफ कर दिया।
"कौन था?" दो पल के सन्नाटे के बाद नीलू ने पूछा।
"रेडियो की आवाज···।"
"ओह समझी···जादू का बाजा···।"
"तुमने सुना है?"
"हां, हमारी बस्ती में मुखिया के घर सुबह-शाम बजता है।"
"तुम्हें अच्छा लगता है?"
"हां, जब यह गाने लगता है···।"
"इसका मतलब है···तुम्हें संगीत अच्छा लगता है···!"
"जो चीज जीवन के दर्द को कम करे, वह किसीको बुरी
लगेगी भला!"
जुगनू उसका उत्तर सुनकर झेंप गई। वह तो उसे गंवार समझ
कर मजा ले रही थी, लेकिन नीलू जब जीवन का दर्शन समझाने
लगी तब वह सिटपिटाकर रह गई और उसे बाथरूम की ओर ले
गई।
"अब कहां?" नीलू ने पूछा।
"बाथरूम···।"

लग रही थी। जुगनू उसके बाल संवार रही थी। समीर जुगनू के पीछे खड़ा उस रूप-राशि को निहारता रहा और जुगनू उसकी उपस्थिति से बेखबर कंघी से नीलू के बालों को सुलझाती रही।

यह सोचकर कि जुगनू को पता न चले, समीर अपने पैरों की आहट को दबाता हुआ एक खम्बे के सहारे खड़ा हो गया। नीलू के पहाड़ी सौन्दर्य से उसकी आंखें चकाचौंध हुई जा रही थीं। यों जुगनू भी कम रूपवती न थी, किन्तु नीलू के रूप के आगे उसका रूप फीका पड़ गया था।

"एक बात पूछूं?" नीलू ने चुप्पी को भंग किया।

"पूछो।" जुगनू ने कहा।

"अपने बाबूजी लगते कैसे हैं?"

"एक राजकुमार!" जुगनू ने उसके प्रश्न पर चौंककर उत्तर दिया।

नीलू के होंठों पर एक दबी-दबी-सी मुसकराहट खिल उठी, लेकिन तुरन्त ही वह गम्भीर हो गई। जुगनू से उसका यह भाव-परिवर्तन न छिप सका। उसने उसके दिल की बात जानने के लिए पूछा—"नीलू, तुमने उनकी सूरत के बारे में तो पूछा, लेकिन सीरत कैसी है यह नहीं पूछा। क्यों?"

"वह तो मैं उनकी हमदर्दी से ही समझ गई···दिल ने बता दिया है कि वह कैसे हैं।"

"और, सूरत?"

"वही तो ये अभागी आंखें नहीं देख पातीं···तरसती रहती हैं।"

"नीलू, यह तो तुमने बताया ही नहीं कि तुम अंधी कब से हो?"

"एक ज़माना बीत गया···।"

"तो क्या जन्म से?"

"नहीं, तब मैं कोई दस बरस की थी।"

"हुआ क्या था?"

दवाते ही पानी का फव्वारा चल निकला। ऐसे फव्वारे के नीचे वह आज तक नहीं नहाई थी। जैसे ही उसकी तेज़ फुहार उसके शरीर पर पड़ी, वह उछल पड़ी और एक दबी-दबी-सी चीख उसके मुंह से निकल गई। वह भयभीत-सी पानी बहने का स्वर सुनती रही।

जुगनू ने उसकी चीख सुनी तो बाथरूम का दरवाज़ा खोलकर अंदर आ गई। दरवाज़ा खुलने की आहट सुनकर नीलू ने झट से अपने बदन को कपड़ों से ढक लिया और दुबककर एक कोने में खड़ी हो गई।

"क्यों, क्या हुआ ?" जुगनू ने पूछा।

"यहां तो बरखा शुरू हो गई !"

"बरखा!" नीलू की बात सुनकर जुगनू को हंसी आ गई—"अरी पगली, यह बरखा नहीं, फव्वारा है। इसकी फुहार के नीचे हम सब नहाते हैं।"

"ओह !" जुगनू की बात सुनकर नीलू अचरज में पड़ गई।

फिर जुगनू दरवाज़ा बन्द करके चली गई तो वह फुहार के नीचे आ खड़ी हुई। लेकिन अब उसे डर नहीं लग रहा था, बल्कि पानी की गुनगुनाहट से उसे एक विचित्र आनन्द अनुभव होने लगा। उसके मानस-पटल पर वह चित्र उभर आया, जब बरखा की नन्ही-नन्ही बूंदें झील के पानी में गिरती थीं और कुछ इसी प्रकार का गुंजन होता था। वह हौले-हौले शरीर का मैल धोती रही और फव्वारे की फुहार से उसके सम्पूर्ण शरीर में गुदगुदी-सी होती रही।

कुछ देर बाद समीर किसी काम से जुगनू के कमरे में आया तो दरवाज़े पर ही ठिठककर रह गया। उसे अपनी आंखों पर विश्वास न हुआ। वह सोच भी न सकता था कि जो पहाड़ी लड़की फटे-पुराने कपड़ों में सहमी-सहमी-सी वहां आई थी, वह एक राज-कुमारी का रूप धारण कर लेगी !

नीलू सोफे पर बैठी थी। जुगनू ने उसका रूप ही बदल दिया था। शिफान की अम्बरी साड़ी में लिपटी वह सुन्दरता की मूर्ति

लग रही थी। जुगनू उसके बाल संवार रही थी। समीर जुगनू के पीछे खड़ा उस रूप-राशि को निहारता रहा और जुगनू उसकी उपस्थिति से बेखबर कंघी से नीलू के बालों को सुलझाती रही।

यह सोचकर कि जुगनू को पता न चले, समीर अपने पैरों की आहट को दबाता हुआ एक खम्बे के सहारे खड़ा हो गया। नीलू के पहाड़ी सौन्दर्य से उसकी आखें चकाचौंध हुई जा रही थी। यों जुगनू भी कम रूपवती न थी, किन्तु नीलू के रूप के आगे उसका रूप फीका पड़ गया था।

"एक बात पूछूं ?" नीलू ने चुप्पी को भंग किया।

"पूछो।" जुगनू ने कहा।

"अपने बाबूजी लगते कैसे हैं ?"

"एक राजकुमार !" जुगनू ने उसके प्रश्न पर चौंककर उत्तर दिया।

नीलू के होंठों पर एक दबी-दबी-सी मुसकराहट खिल उठी, लेकिन तुरन्त ही वह गम्भीर हो गई। जुगनू से उसका यह भाव-परिवर्तन न छिप सका। उसने उसके दिल की बात जानने के लिए पूछा—"नीलू, तुमने उनकी सूरत के बारे में तो पूछा, लेकिन सीरत कैसी है यह नहीं पूछा। क्यों ?"

"वह तो मैं उनकी हमदर्दी से ही समझ गई···दिल ने बता दिया है कि वह कैसे हैं।"

"और, सूरत ?"

"वही तो ये अभागी आखें नहीं देख पाती···तरसती रहती हैं।"

"नीलू, यह तो तुमने बताया ही नहीं कि तुम अंधी कब से हो ?"

"एक जमाना बीत गया···।"

"तो क्या जन्म से ?"

"नहीं, तब मैं कोई दस बरस की थी।"

"हुआ क्या था ?"

"एक दुर्घटना···एक सेठ की मोटर से टकराकर मैं अपनी आंखें खो बैठी।"

"कौन था वह ?"

"एक बहुत बड़ा आदमी···कुछ भला-सा नाम था उसका···।"

वह अपने दिमाग पर ज़ोर डालकर उसका नाम सोचने लगी और फिर वह कुछ कहने ही वाली थी कि समीर अचानक घबरा गया। वह नहीं चाहता था कि नीलू जुगनू के सामने सत्य कह दे। इससे पूर्व कि नीलू के मुंह से किसीका नाम निकलता, समीर आगे बढ़ा और उसने ठोकर मारकर पीतल की पुरानी तिपाई गिरा दी। आवाज़ सुनकर दोनों लड़कियां चौंक उठीं। जुगनू ने पलटकर देखा और समीर को वहां पाकर कह उठी—"तुम ?"

"हां, पांव फिसल गया !"

"मैं तो डर ही गई थी !"

"और नीलू···?"

"मैं भी।" नीलू ने कांपते होंठों से कहा।

"जानती हो नीलू, जुगनू ने तुम्हें क्या बना दिया है ?"

नीलू ने गर्दन उठाकर उत्सुकता के साथ समीर की ओर देखा।

वह तनिक रुककर बोला—"एक पहाड़ी लड़की से तुम्हें एक राजकुमारी बना दिया है जुगनू ने !" यह कहते हुए वह उसके बिलकुल पास चला गया और फिर पलटकर जुगनू की ओर कृतज्ञता-पूर्ण दृष्टि से देखकर मुस्करा दिया।

"मैं तो सचमुच यह सोच रही थी कि कहीं अचानक नीलू को इस भेस में देखकर तुम मुझपर बिगड़ न जाओ !" जुगनू भी यह कहकर मुस्करा दी।

"वह क्यों ?"

"आपकी कल्पना का नक्शा जो बदल दिया है !"

"नहीं जुगनू, ऐसी बात नहीं···तुमने तो नीलू को इस घर का एक सदस्य बना दिया है।" समीर ने भावुकता के साथ कहा—"अब

हर आने वाला इसे कम से कम अजनबी तो न समझेगा। कोई खिल्ली न उड़ा सकेगा···।"

दिन व्यतीत होते गए। हर पल और हर घड़ी नीलू परीक्षा की राहों से गुजरती गई। हर कड़ी मंजिल पर समीर उसका साथ देता रहा। थोड़े ही दिनों में वह घर के वातावरण में घुलमिल गई और अपने-आपको उस घर का एक सदस्य समझने लगी। वह जब कभी मां के चरणों में बैठकर बस्ती की मीठी-मीठी बातें करती या कभी उनके बालगोपाल के लिए मधुर स्वर में गीत गाने लगती तब मां फूली न समाती।

नीलू की उपस्थिति से घर के वातावरण में एक विचित्र-सी गुदगुदाहट उत्पन्न हो गई थी। जुगनू, जो समीर की खुशी को ही अपनी खुशी समझने लगी थी, इस अनुभूति से कोसों दूर थी कि अंधी नीलू समीर के रोम-रोम में रच-बस गई है।

घर का हर सदस्य खुश था, लेकिन दीवान साहब के चेहरे पर चिन्ता की परछाइयां थीं। वह जब समीर के हर्ष और रानी मां के व्यवहार पर विचार करते तो उनकी छाती पर सांप लोट जाता।

वह अपनी बेटी की नादानी को भी खूब समझते थे, लेकिन उसे खुले शब्दों में कुछ भी न समझा पाते थे। वह अपने शयनकक्ष में बैठे कुछ सरकारी कागज़ों की जांच-पड़ताल कर रहे थे। बाहर प्यानो के स्वर उभरकर वातावरण में एक गुंजन उत्पन्न कर रहे थे। बड़े हाल में बैठी नीलू प्यानो बजा रही थी। पिछले दो दिनों से उसे प्यानो सीखने का शौक पैदा हो गया था। भोजन के बाद हर रात समीर उसे प्यानो सिखाने बैठ जाता। प्यानो के आकर्षक सुर दीवान साहब को अपने कण्ठ में चिपके हुए शीशे की तरह उतरते प्रतीत हो रहे थे। जब वह अधिक देर तक उन सुरों को सहन न कर सके तो एक झटके के साथ उठ खड़े हुए। उन्होंने आगे बढ़कर बड़े हाल की ओर खुलने वाले दरवाज़े को ज़ोर से बन्द करना चाहा

वैसे ही उनके हाथ रुक गए। जुगनू हाथ में दूध का गिलास थामे आ रही थी। उसे देखते ही दीवान साहब ने अपने भावों पर नियंत्रण किया और पलटकर खड़े हो गए।

जुगनू ने दूध का गिलास मेज़ पर रख दिया और बोली—"डैडी!"

"हूं।"

"आप कुछ परेशान हैं?"

"लेकिन तुम्हें इससे क्या···!"

"मैं समझी नहीं डैडी!"

"प्यानो की आवाज़ सुन रही हो?" कहते हुए उनके माथे पर बल पड़ गए।

"हां, नीलू सीख रही है।"

"और, कुंवरजी उसे सिखा रहे हैं···।"

"तो इसमें बुरा क्या है डैडी?"

"सोचता हूं, मेरी बेटी कितनी भोली है···एकदम नादान··· तुमने कभी यह भी सोचा है कि ये सुर उभरते-उभरते कभी तुम्हारे जीवन के सुरों को मन्द भी कर सकते हैं···।"

"लेकिन डैडी···!" वह उनका संकेत समझकर तिफ़र-सी गई और उनके प्रश्न की गहराई में पहुंचते हुए बोली—"नीलू अंधी है डैडी!"

"प्यार भी तो अंधा होता है बेटी!" दीवान साहब की भारी आवाज़ ने जुगनू के हृदय के तारों को झिंझोड़ दिया और उसका रोम-रोम तड़प उठा।

दीवान साहब ने बेटी की ओर से मुंह फेर लिया। वह शायद इस प्रकार की बात कहकर अब उससे आंख नहीं मिला पा रहे थे। दोनों के बीच एक विचित्र-सा सन्नाटा व्याप्त हो गया। उस सन्नाटे में यदि कोई स्वर उभर रहा था तो वह था प्यानो का, जो अब जुगनू के दिमाग में भी एक हलचल-सी उत्पन्न कर रहा था।

कमरे से बाहर निकलकर जुगनू ने बड़े हाल की ओर देखा तो उसके दिल में ईर्ष्या की आग भड़क उठी। समीर और नीलू के बीच बहुत कम दूरी थी। जुगनू ने अपनी भावनाओं पर नियंत्रण किया और होंठों को दांतों से दबा लिया।

समीर नीलू के हाथ थामकर उसे प्यानो पर उंगलियां चलाना सिखा रहा था। जुगनू के कानों में दीवान साहब के शब्द गूंज उठे, 'प्यार भी तो अंधा होता है'''बेटी'''तुमने कभी यह भी सोचा है कि ये सुर उभरते-उभरते कभी तुम्हारे जीवन के सुरों को मन्द भी कर सकते हैं।'

जुगनू के हृदय में एक तड़प जाग उठी। वह अधिक सहन न कर सकी तो अपने कमरे में चली गई। उसने कमरे की बत्ती जलानी चाही, लेकिन साहस न कर सकी। उस समय वह अपने-आपको अंधेरे में ही छिपाए रखना चाहती थी। वह उस अंधेरे में पलंग पर लेटी उस अंधकार की कल्पना करने लगी, जो बरसों से नीलू के संसार में फैला हुआ था, लेकिन वह प्रकाश की आशा में जी रही थी।

८

नीलू का चित्र आज प्रदर्शनी का प्रमुख आकर्षण बना हुआ था।

चित्रकारी का यह ऐसा अनूठा नमूना था कि हर व्यक्ति का ध्यान उसकी ओर बरबस खिंच जाता। इस चित्र में समीर ने पहाड़ी सौंदर्य को ऐसे रंगों में ढाला था कि हर दृष्टि उसपर अटककर रह जाती। उसका भोलापन, सादगी और रंगों का मेल देखकर दर्शकों के मुंह से अनायास ही 'वाह-वाह' निकल जाती। फिर उसका नाम 'अंधेरी दुनिया' (Blind world) उसपर कुछ ऐसा जंचा था कि उसके ऊपर दृष्टि पड़ते ही दर्शक का हृदय एक विचित्र सहानुभूति से भर उठता।

चित्र के नीचे 'बिक्री के लिए नहीं' (Not for sale) की चिट लगी हुई थी, जिसे पढ़कर एक दर्शक चित्रकार से बातें करने में झिझक रहा था। अंत में जब उससे न रहा गया तब वह समीर के पास जाकर बोला—"तो मैं यह विश्वास कर लूं कि आप यह चित्र किसी भी मूल्य पर नहीं बेचेंगे?"

"जी।"

"सोच लीजिए, मैं आपको मुंहमांगी कीमत दे सकता हूं।"

"मैंने सोच लिया है," समीर ने कहा—"मैं जानता हूं कि हर चीज की एक कीमत होती है और वह खरीदी जा सकती है, लेकिन इस चित्र की कोई कीमत लगाना मैं अपना अपमान समझता हूं।"

"और मैं आपकी भावनाओं का आदर करता हूं," वह दर्शक बोला—"लेकिन मैं भी इस चित्र को किसी ड्राइंग-रूम या गैलरी की शोभा नहीं बनाना चाहता। मैं तो इसे अंधों के स्कूल में रखना

चाहता हूं।"

"अंधों के स्कूल में?" समीर ने उसकी ओर आश्चर्य से देखा।

"जी हां," वह दर्शक बोला—"मेरा नाम डाक्टर टंडन है। मैं अंधों के स्कूल का प्रमुख हूं।"

"आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई," समीर तुरंत कह उठा—"कहां है आपका स्कूल?"

"जिमखाना क्लब के बराबर।" डाक्टर ने जेब से कार्ड निकालते हुए कहा—"यह मेरा पता है।"

समीर ने उसे सरसरी निगाह से पढ़ा और बोला—"मुझे दुःख है कि मैंने आपको इनकार किया। आप यह चित्र ले जाइए, लेकिन···।"

"कहिए, कहिए···।" डाक्टर ने शीघ्रता से कहा।

"इसे आप प्रदर्शनी की समाप्ति पर ही ले जाएं।" समीर ने कहा—"तब तक यह चित्र यहीं लगा रहेगा।"

"कोई बात नहीं।" डाक्टर ने प्रसन्न होकर कहा—"बताइए, इसकी क्या कीमत देनी होगी?" उसने तनिक झिझककर पूछा।

"मैंने कहा न, इस चित्र की कोई कीमत लगाना मैं अपना अपमान समझता हूं।"

"फिर···?"

"इसे आप मेरी ओर से भेंट समझ लीजिए।"

"सच!" डाक्टर टंडन ने मित्रता का हाथ बढ़ाया और बोला—"बहुत-बहुत धन्यवाद। बड़ा उपकार किया है आपने।"

"किसपर?"

"मुझपर।"

"जी नहीं, उपकार तो मैंने अपने-आपपर किया है।" समीर बोला—"मैं कितना भाग्यवान हूं कि यह चित्र उचित स्थान की शोभा बनेगा।"

"चित्र से ऐसा प्रतीत होता है कि यह मॉडल बनी हुई लड़की

सचमुच में अंधी है।"

"हां, डाक्टर···।"

"ओह ! कितनी बड़ी दुर्घटना है यह !" डाक्टर ने सहानुभूति के साथ कहा—"कौन है यह लड़की ?"

"एक पहाड़ी लड़की। हमारे यहां ही रहती है। इस संसार में अब उसका कोई नहीं।"

फिर समीर ने डाक्टर टंडन को नीलू के बारे में सब कुछ बता दिया। डाक्टर को जब यह पता चला कि वह जन्म की अंधी नहीं, बल्कि एक दुर्घटना की शिकार है तब वह आशंकित हो उठा और उसने समीर को विश्वास दिलाया कि नीलू की बीनाई लौट सकती है।

"सच डाक्टर ?" समीर खुशी से उछल पड़ा।

"हां, समीर बाबू।" डाक्टर बोला—"हालांकि आपरेशन में हो चुकी है, फिर भी आशा की जा सकती है। पचास फीसदी [illegible] है।"

"इस मामले में आप सहायता करेंगे, डाक्टर साहब ?"

"यह तो मेरा कर्तव्य है।" डाक्टर टंडन ने कहा—"और हां, अगले महीने मेरे यहां आंखों के विशेषज्ञ डाक्टरों की एक सभा होने वाली है। अच्छा होगा कि आप उस लड़की को उस समय ले आएं। केस पुराना हो चुका है। दो-चार की राय लेना आवश्यक है।"

डाक्टर टंडन चला गया, किन्तु समीर के हृदय में आशा की एक किरण बो गया। यह सोचते ही कि नीलू देख सकती है, उसके हृदय में एक गुदगुदी-सी उठी। आशा के सितारे झिलमिलाकर उसके हृदय की गहराई में व्याप्त अंधकार को छांटने लगे। वह उत्सुकतापूर्वक उस घड़ी की प्रतीक्षा करने लगा जब वह यह समाचार नीलू को सुनाएगा !

प्रदर्शनी समाप्त होते ही वह सीधा घर पहुंचा। जीप को उसने अभी बाहर रोका ही था कि उसकी दृष्टि नीलू पर पड़ी। वह बगीचे में बैठी शायद उसीकी राह देख रही थी। समीर चुपके-चुपके

कदम बढ़ाता हुआ उसके पास जा पहुंचा और पीछे से उसकी आंखें बंद कर लीं। नीलू के मुंह से एक फुसफुसी-सी चीख निकल गई, किन्तु तभी वह समीर की उंगलियों के स्पर्श को पहचान गई और संभलकर बोली—"कुंवरजी !"

"हां, नीलू," समीर ने तुरंत कहा—"जानती हो, आज मैं तुमसे क्या कहने वाला हूं ?"

"कोई अच्छी बात।"

"तुमने कैसे जाना ?"

"आपके दिल की धड़कनों को सुनकर···खुशी से उछल रहा है आपका दिल।"

"मेरी बात सुनोगी तो तुम्हारा दिल भी उछल पड़ेगा।"

"सच ! तो, कहिए न···।"

"कुछ दिनों में तुम यह संसार देख सकोगी।"

यह सुनते ही नीलू का चेहरा पलभर के लिए दमक उठा। फिर वह तुरंत ही गम्भीर हो गई। समीर ने डाक्टर टंडन से हुई मुलाक़ात के बारे में नीलू को बता दिया, फिर भी वह गम्भीर ही बनी रही। उसे ऐसा अनुभव हुआ जैसे समीर उसे एक सुन्दर-सी कहानी सुनाकर बच्चों की भांति बहला रहा है।

वह उसे चुप देखकर बोल उठा—"तुम्हें मेरी बात पर विश्वास नहीं आया, नीलू ?"

"आपकी बात पर तो है, लेकिन भाग्य पर नहीं···यह कभी नहीं बदल सकता।"

"मैं बदल दूंगा तुम्हारा भाग्य। पानी की तरह पैसा बहाकर पूरी कोशिश करूंगा···।"

"लेकिन आप ऐसा क्यों करना चाहते हैं ?"

"मैं···मैं···।" उससे कोई उत्तर न बन पाया तो वह बात बदलता हुआ बोला—"क्या तुम्हारी यह अभिलाषा नहीं कि तुम संसार की बहारों को देखो ?"

"कभी थी, किन्तु अब यह एक सपना लगने लगा है।"

"तो आज से तुम यह सोचना बन्द कर दो। सपने कैसे सच ते हैं, यह मैं तुम्हें दिखा दूंगा। ये झील की नीली गहराइयां, ये र्फीली पहाड़ी चोटियां, फूलों के रंग, वृक्षों का निखार, यह बस्ती, यह घर—सब चीज़ों को तुम देखने लगोगी।"

"और आपको?"

"मुझे तो तुम देखोगी ही।" समीर ने उसे सहारा दिया और बोला—"चलो, उठो, शाम हो गई।" किन्तु नीलू ने वहीं बैठे रहने की आशा चाही। अन्दर की घुटन से बचने के लिए वह बगीचे की नशीली हवा को महत्त्व देती थी। उसने पास रखी टोकरी में से अधबुना स्वेटर निकाला और बुनने लगी।

"यह क्या है?"

"मां जी के लिए स्वेटर।"

"मां घर पर नहीं क्या?"

"दीवानजी के साथ खेतों पर गई हैं।"

"लेकिन क्यों?"

"कह रही थीं कि बेटे को ज़मींदारी में कोई दिलचस्पी हीं...।"

"ओह!" समीर ने एक लम्बी सांस ली और पूछा—"और जुगनू?"

"सो रही हैं शायद।" कहते हुए उसने सलाइयां नीचे रख दीं और ऊन का गुच्छा सुलझाने लगी।

समीर ने ऊन का गुच्छा थाम लिया और धागे सुलझाने में नीलू की सहायता करने लगा।

कुछ देर से ऊपरी मंजिल में खड़ी जुगनू यह नाटक देख रही थी। वह गुस्से से बल खा रही थी और ईर्ष्या की आग उसके तन बदन को झुलसाए दे रही थी। वह टकटकी बांधे उनकी गतिवि को देखती रही और उसे विश्वास होने लगा कि यह अंधी लड़

"अकेलापन काट रहा था तो और क्या करती? घर में कोई बात करने वाला नहीं। मां और डैडी सुबह से ही फार्म पर गए हैं और तुम हो कि बात करने का अवकाश नहीं!" वह एक ही सांस में लगातार कहती गई।

"लेकिन नीलू जो है।"

नीलू का नाम सुनते ही फिर उसका बदन जल उठा। वह एक अज्ञात भय से जंगली बांस की भांति कांप गई। उसने समीर की आंखों में झांका और झट से पलटकर तेजी से अपने कमरे की ओर भाग गई। समीर की समझ में न आया कि जुगनू ने ऐसा क्यों किया। वह कुछ देर तक मूर्तिवत् वहीं खड़ा रहा और जुगनू के इस व्यवहार के बारे में सोचता रहा। फिर उसने जुगनू के कमरे की ओर जाने के लिए कदम उठाए, किन्तु कुछ सोचकर रुक गया। अभी वह किसी निर्णय पर पहुंचने का प्रयत्न कर रहा था कि तभी मां और दीवान साहब लौट आए।

मां को देखते ही वह उनकी ओर लपका और पांव छू लिए। मां ने बेटे को आशीर्वाद दिया और उसका माथा चूमते हुए बोली—"शहर से कब आए?"

"थोड़ी देर पहले और इस बरस फिर मारा है पहला नम्बर प्रदर्शनी में।"

"तेरी मां ने भी आज एक असाधारण काम किया है।"

"क्या मां?" उसने प्रश्नभरी दृष्टि से मां की ओर देखते हुए कहा।

रानी मां झिझकीं तो दीवान साहब फौरन बोल उठे—"आज रानी मां ने प्रताप के कब्जे से जमीन निकलवा ली।"

"वह कैसे मां?"

"उसकी अनुपस्थिति का लाभ उठाकर। उसके सारे कारिंदों को खरीद लिया है आज हमने।"

"इसका मतलब हुआ कि•••।"

"हां, हमने ज़मीन पर अधिकार कर लिया है।"

"नही मां, यह अच्छा नही किया तुमने !"

"अच्छा किया है या बुरा, यह मैं समझती हूं। बरसों बाद मिली इस जायदाद को तुम गंवा देना चाहते हो क्या ?"

"यदि हमारी लम्बी-चौडी जायदाद मे ज़मीन का यह मामूली-सा टुकड़ा शामिल न होता तो क्या अन्तर आ जाता रानी मा की जागीर में !"

"शायद अन्तर कुछ न आता, लेकिन एक सांप को दूध पिलाना कहां की अकलमन्दी है ! तुम अभी भोले हो। यह सब न समझोगे। चित्र के रगो और जीवन के रंगों मे बडा भेद है समीर !" मां ने पलकों पर ढुलक आए आसुओं को छिपा लिया और मुह फेर-कर चली गई।

समीर चुप रहा। वह मां के दिल की पीड़ा को समझता था। उसने बहस करना उचित न समझा। फिर वह दृष्टि उठाकर दीवान साहब की ओर देखते हुए बोला—"दीवानजी, जागीर का जो भी काम हो, आप मुझे बताइए। कल से मां को परेशान करने की आवश्यकता नही।"

यह कहते हुए वह ऊपरी मंजिल की ओर जाने लगा। दीवान साहब के होंठों पर एक दबी मुसकराहट खिल उठी, लेकिन वाता-वरण की गम्भीरता को बनाए रखने के लिए वह चुप रहे। फिर जैसे ही जाने के लिए वह घूमे, उन्होने संगमरमर की मूर्ति के पीछे खड़ी मालकिन को देखा। रानी मां ने छिपकर बेटे की बात सुन ली थी और उनकी पलकों पर हर्ष के आसू झिलमिला रहे थे। दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा। दोनों की दृष्टि में एक विचित्र-सा संतोष था। फिर दीवान साहब आदर से गर्दन झुकाते हुए जुगनू के कमरे की ओर चले गए।

जुगनू अपने पलंग पर निढाल पड़ी थी। पिता के कदमो की आहट सुनकर वह पलटी। दीवान साहब ने बिजली जला दी।

प्रकाश में उन्होंने बेटी के उदास चेहरे को देखा और झट से पूछ बैठे—"क्या बात है, बेटी ?"

"कुछ नहीं।"

"क्या मन की बात बाप को न बताओगी ?"

"आपने ठीक कहा था डैडी। इस अंधी ने जादू कर दिया है कुंवरजी पर। लगता है, वह उन्हें मुझसे छीन लेगी।"

"घबरा मत बेटी, तेरा बाप अभी जीवित है। मेरे जीते जी तेरी खुशियों पर कोई डाका नहीं डाल सकता।"

बेटी ने बाप की बात को दिल के तराजू में तोला और उठकर बैठ गई। फिर उसने अपने पिता की आंखों में झांका तो वहां उसे ठोस इरादों की चमक दिखाई दी।

"धीरज का फल मीठा होता है। तरकीब से काम ले। समीर को यह पता नहीं चलना चाहिए कि तू नीलू से जलती है।"

"लेकिन···।"

"मैं तेरे दिल का हाल समझता हूं, लेकिन यह तेरी सहनशक्ति की परीक्षा का समय है।"

जुगनू चुप रही और पिता से इस विषय में कुछ और न कह सकी। दीवान साहब जब वहां से चले गए तब वह दर्पण के सामने जा खड़ी हुई। उसने बाल संवारकर चेहरे का मेक-अप ठीक किया और फिर बाहर झांककर देखा। वहां किसीको न पाकर वह ज़ीना पार करती हुई सीधी समीर के कमरे की ओर चल दी।

समीर अपने कमरे में ही था। उसने अपने सारे चित्रों को अलमारी में बन्द कर दिया था और यह निर्णय कर लिया था कि चित्रकारी को छोड़कर अब वह केवल जमींदारी के कामों में दिलचस्पी लेगा। अपनी भावनाओं का गला घोंटकर वह अपनी मां की भावनाओं का आदर करना चाहता था।

"यह क्या कुंवरजी ?"

जुगनू की आंखों में आश्चर्य के भाव देखकर समीर ने कहा—

"जीवन के रंगों और चित्रों के रंगों में बड़ा अन्तर है जुगनू। सपने केवल सपने हैं और सच्चाई केवल सच्चाई।" यह कहते हुए वह उस खिड़की तक चला गया, जो पिछवाड़े की ओर खुलती थी। उसके हृदय की पीड़ा उसकी पलकों पर तैर आई थी, किन्तु वह जबर्दस्ती मुस्कराने का प्रयत्न कर रहा था।

जुगनू ने उसके हृदय की पीड़ा को छेड़ना उचित न समझा और कमरे में बिखरी चीज़ों को चुपचाप करीने से सजाने लगी।

समीर ने कनखियों से उसकी ओर देखा और फिर उसकी दृष्टि आंगन के उस भाग पर पड़ी, जहां एक छोटा-सा मन्दिर था।

तभी उसने झांककर देखा। रानी मां नीलू को साथ लिए संध्या की आरती उतारने के लिए जा रही थी।

९

तीन दिन वाद जव प्रताप आधी रात को शहर से लौटा तव यह जानकर उसके तन-वदन में आग लग गई कि उसकी अनुपस्थिति में वह ज़मीन, जिसपर उसका अधिकार था, उसके भाई के आदमियों ने कब्जे में कर ली है। उसने अपने आदमियों को जमा किया और वदले की आग में दीवाना होकर यह निर्णय कर लिया कि वह उनकी ज़मीनों में पकी फसलों को आग की भेंट कर देगा। वह आज रात की कालिमा को शोलों से जगमगा देगा।

इसी तपिश को सीने में छिपाए जव उसने अपनी जीप अपने फार्म हाउस के निकट रोकी तव घर में प्रकाश देखकर उसका हृदय धड़क उठा। उसने जेव टटोलकर घर की चाभियों को छुआ और आश्चर्य से घर के मुख्य द्वार को देखने लगा, जो खुला था।

उसका हृदय किसी अज्ञात भय से धड़क रहा था। वह जीप से कूदकर वाहर आया और दाईं जेव में रखे रिवाल्वर को छूता हुआ शीघ्रता से घर में घुस गया।

किन्तु जव उसने माया को आतिशदान में आग जलाए एक आरामकुर्सी पर वैठे देखा तव उसका सारा भय दूर हो गया। माया के सामने व्हिस्की से भरा गिलास रखा था और वह उसके सहारे तनहाई और प्रतीक्षा की घड़ियां काट रही थी।

"माया !" वह अचानक ही उसे पुकार उठा।

"जवाव नहीं तुम्हारा, डार्लिंग ! शाम से अकेली वोर हो रही हूं।" माया ने गिलास को उठाकर व्हिस्की का एक घूंट कण्ठ में उंड़ेलते हुए कहा और आरामकुर्सी छोड़कर उसके स्वागत के लिए उठ खड़ी

हुई।

"लेकिन इतनी रात बीते तुम···अकेली···?"

"क्या करती! तुमने मिलना-जुलना जो छोड़ दिया!"

"नहीं माया, मैं नहीं चाहता कि मेरे कारण तुम्हारे विवाहित जीवन में तूफान आए और मेरा-तुम्हारा प्यार तुम्हारे पति की आंखों का कांटा बन जाए···तुम्हारा जीना दूभर हो जाए···।"

"घबराओ नहीं, अब ऐसा नहीं होगा।"

"क्या मतलब?"

"मेरे पति ने मुझे सदा के लिए आजाद कर दिया है!"

"यह तुम क्या कह रही हो! इतनी सरलता से उसने तुम्हें तलाक कैसे दे दिया?" वह एक खिलती हुई मुसकराहट अपने होंठों पर लाता हुआ उसकी ओर बढ़ा और उसे अपनी बाहों में समेट लिया। फिर जब माया ने बताया कि उसका पति एक हवाई दुर्घटना का शिकार हो गया है तो प्रताप के शरीर में बिजली-सी लहरा गई।

"सुरेश अब नहीं रहा?" उसने आश्चर्य से कहा और माया के चेहरे की ओर देखने लगा। उसकी पलकें भीगी हुई थीं और होंठ मुसकरा रहे थे। पति की याद करते ही शायद वह उदास हो गई थी। माया ने अपनी दृष्टि प्रताप के चेहरे से हटाई और मेज से खाली गिलास उठाकर दोबारा भरने लगी। फिर दूसरा गिलास तैयार करके उसने प्रताप की ओर बढ़ाया। वह अभी तक इस दुर्घटना के बारे में जानकर आश्चर्यचकित था। गिलास को हाथ में लेते हुए उसने पूछा—"लेकिन यह सब हुआ कैसे?"

"पलभर में···।"

"कब?"

"चार दिन पहले।"

"ओह!" कहते हुए प्रताप ने एक ठंडी सांस ली।

"भूल जाओ, डार्लिंग!" माया उसकी गम्भीर और चिन्तित दृष्टि को भांपकर बोली—"ईश्वर की इच्छा को कौन टाल सकता

है !" फिर उसने अपना गिलास उसके गिलास से टकराया।

"अब क्या होगा ?"

"मैं आज़ादी से जी सकूंगी···अपने खोए हुए प्यार को पा सकूंगी।"

"लेकिन माया, जिस प्यार का सहारा लेने तुम आई हो, उसका सब कुछ लुट गया है। आखिरी ज़मीन, जिसपर मेरा अधिकार था, जल्लादों ने मेरी अनुपस्थिति में छीन ली···।"

"तो क्या हुआ···जाने दो, हम फिर भी जी लेंगे।"

"कैसे ?"

"अपने प्यार के सहारे।"

"नहीं, यह मेरी हार होगी। जानती हो, आज मैं इन सारी फसलों को राख करने वाला हूं।"

"फसलें तो राख हो जाएंगी, लेकिन ईर्ष्या की आग नहीं बुझेगी। तुम कानून को अपने हाथ में मत लो।"

"तो फिर क्या करूं ?"

"कहा ना, अपना जीवन मेरे हवाले कर दो···तुम्हें एक मजबूत सहारे की जरूरत है और मुझे तुम्हारे प्यार की।" यह कहते हुए वह उससे लिपट गई और अपनी विफरी सांसों से उसके वदन की आग को और भड़काने लगी।

प्रताप, जो अभी तक एक दोराहे पर खड़ा कोई निर्णय न कर पाया था, उसकी यह दशा देखकर सोच में पड़ गया। माया अधिक देर तक प्रताप की चुप्पी सहन न कर सकी और अपना गिलास उसके होंठों से लगाती हुई बोली—"तुम चिन्ता मत करो, प्रताप ! तुम नहीं जानते कि सुरेश का जीवन-बीमा पूरे एक लाख रुपये का है। फिर बंगला, कार, मिलों के शेयर आखिर किस काम आएंगे। सोचती हूं, सब कैश कराके कहीं दूर चले जाएं।"

"माया !" कहते हुए प्रताप ने उसकी ओर गहरी दृष्टि से देखा।

"हां, डार्लिंग, हम दोनों किसी दूसरे देश में चले जाएंगे।"

धीरे-धीरे माया अपना होश खोती जा रही थी। उसने अपने गिलास में बची थोड़ी-सी शराब कण्ठ में उंडेलने के बजाय आतिशदान में फेंक दी। एक शोला भड़का और उन दोनों को यों लगा जैसे किसीने उनकी सुप्त भावनाओं में एक चिनगारी लगा दी हो।

पहाड़ी इलाके में जाड़े की रातें बड़ी मस्त होती हैं। फिर इन रातों में यौवन का साथ रहे तो रौनक और बढ़ जाती है। यह भी एक ऐसी ही नशीली और मदमाती रात थी। बादल गरजने तो प्रताप को यों अनुभव होता जैसे उसकी स्वप्निल प्रीत को कोई बार-बार झिंझोड़ रहा है। नशे में मदहोश माया उसके शरीर से लिपटी जा रही थी। उसका जीवन-साथी कुछ ही दिन पहले मौत को गले लगा चुका था। उसके दुःख को वह शराब में घोलकर पी चुकी थी। वह दुर्घटना अब एक बीती कहानी का रूप ले चुकी थी। माया ने अंगड़ाई ली तो प्रताप उसका मांसल सौन्दर्य देखता ही रह गया। वही पागलपन, वही बिफरी सांसें, प्यार के वही वादे, लेकिन आज प्रताप को यह सब बड़ा विचित्र लगा। माया उसे गुनाह की मूर्ति दिखाई दे रही थी। उसकी गतिविधियों में उसे धोखे की भनक प्रतीत हो रही थी। अचानक वह चौंक पड़ा। गुनाह की मूर्ति ने उसकी बांह में अपने तेज़ दांत गाड़ दिए थे। वह पीड़ा से कराह उठा।

माया ने अपनी बिखरी लटों को संभाला और प्रताप की ओर नशीली निगाहों से देखते हुए बोली—"क्या सोच रहे हो?"

"ज़िन्दगी कितनी छोटी है!"

"लेकिन ज़िन्दगी में हर समय मौत से डरते रहना भी तो कोई जीना नहीं है, प्रताप!"

तभी बिजली चमकी और बादल गरजे, जिससे सारी घाटी कांप गई। माया सिमटकर प्रताप के और समीप हो गई। उसकी मदहोशी ने ऐसा प्रभाव डाला कि प्रताप का मस्तिष्क सुन्न हो गया और वह क्षणभर के लिए सोचने-समझने की शक्ति खो —

गरजती हुई घटाएं कुछ देर बरसीं और फिर छंट गईं। प्रभात की उज्ज्वलता ने रात की कालिमा को धीरे-धीरे अपने आंचल में समेट लिया। झील का शांत जल सूरज की किरणों से मचलने लगा और कोहरा लुप्त होने लगा।

इस कोहरे को चीरती हुई एक हंसी चट्टानों के दामन से टकराकर लौट आई। प्रताप और माया दुनिया के दुःखों को भूलकर झील के ठंडे जल में नहा रहे थे। माया मछली की भांति उछलती-कूदती दूर निकल जाती और प्रताप मगरमच्छ की तरह सतह पर रेंगता हुआ इस ताक में रहता कि जैसे ही माया थोड़ी दूर निकल जाए वैसे ही वह गोता लगाकर उसे अपनी बांहों में जकड़ ले। वह जब उसे अपनी बांहों में पकड़ता, एक मादक हंसी वातावरण में गूंज जाती।

तैरते-तैरते जब दोनों की सांसें फूल गईं तब वे पानी से निकलकर किनारे पर आ गए। माया ने अपना शरीर एक रंगीन तौलिए में लपेट लिया और प्रताप के फार्म-हाउस की ओर भागी। प्रताप ने भी उसका पीछा किया।

अभी उन्होंने मकान में प्रवेश किया ही था कि दोनों ठिठककर खड़े रह गए। माया के शरीर से तौलिया फिसलते-फिसलते रह गया। सामने समीर बैठा न जाने कब से प्रताप की राह देख रहा था। दोनों उसे देखकर झेंप गए और प्रताप ने हड़बड़ाकर माया का हाथ छोड़ दिया।

समीर ने उखड़ी निगाहों से अपने भाई और उस खूबसूरत मछली को देखा, जिसका अर्धनग्न शरीर सुबह की धूप में चमक रहा था।

इस हड़बड़ी में प्रताप शत्रुता भूल गया और जल्दी से माया की ओर देखता हुआ बोला—"मेरा भाई समीर···और यह हैं माया··· मेरे मित्र की पत्नी···दो-चार दिन के लिए मेरे यहां आई हैं।"

"आपके पतिदेव नहीं आए?" समीर ने पूछा तो माया घबरा

गई और कोई उत्तर न सोच सकी। उसने प्रताप की ओर देखा तो प्रताप ने फौरन बात संभाली—"अब इनके पति नहीं रहे!"

"ओह!" समीर के मुंह से अचानक ही निकल गया।

माया ने कांपते स्वर में क्षमा मांगी और अन्दर चली गई।

"तो पति का दुख भुलाने के लिए यह यहां चली आई हैं!"

"तुम कौन-सा दुःख भुलाने आए हो यहां?" प्रताप ने विषय बदलते हुए कहा और अपने शरीर को ड्रेसिंग-गाउन में लपेटने लगा।

"मैं तो यह समाचार देने आया हूं कि कल से मैंने जमींदारी संभाल ली है।"

"यह तो रात को ही पता चल गया था। तुमने मेरी अंतिम पूंजी भी लूट ली, अब क्या मेरा यह घर छीनने आए हो?"

"नहीं," समीर नम्रता से बोला—"बल्कि जिस जमीन पर तुम्हारा अधिकार तक नहीं, वह भी लौटाने आया हूं।"

"मैंने जीवन में कभी भीख नहीं मांगी, समीर," प्रताप ने क्रोध में भरकर कहा—"जो कुछ मुझे चाहिए, मैं छीनकर ले सकता हूं। तुम जा सकते हो।"

"मुझे गलत न समझो। मैं तो तुम्हारे बिखरे हुए जीवन को संवारने आया हूं।" समीर ने विनयपूर्वक कहा—"मैं यह भी जानता हूं कि तुम हर चीज छीनकर लेने के आदी हो गए हो··· चाहे वह धन हो या जमीन··किसीकी आबरू हो या····"

इससे पहले कि समीर अपनी बात पूरी करता, प्रताप का एक जोरदार थप्पड़ उसके गाल पर पड़ा। कमरे में एक आवाज गूंजी और फिर सन्नाटा छा गया। थप्पड़ का स्वर सुनकर माया भी वहां आ गई। दोनों भाई एक-दूसरे को उखड़ी-उखड़ी दृष्टि से देख रहे थे। प्रताप समझ नहीं पा रहा था कि अब क्या करे! वह अपनी लज्जा दूर करने का उपाय सोचने लगा। समीर उसकी परेशानी भांप गया और मुसकराकर बोला—"धन्यवाद।" फिर वह शीघ्रता से बाहर चला गया।

उसके जाते ही माया प्रताप के समीप आई और बोली—"यह तुमने क्या किया ?"

"वह समझता है, मैं उसका गुलाम बन जाऊंगा···जमीन का टुकड़ा भीख में देकर वह मुझे खरीद लेगा···!"

"तो क्या हुआ···तुम बिक जाते ?"

"माया !" वह क्रोध से कांपकर चिल्लाया।

"इसमें बुरा मानने की क्या बात है ? यह तो पुरुषों की शान है कि प्यार में बिक जाएं···।"

"यह प्यार नहीं, नीचता है···।"

"नहीं प्रताप, अगर उसे नीचता ही दिखानी होती तो वह यहां कभी न आता।" माया ने कहा—"भाई का प्यार ही उसे यहां खींच लाया होगा।"

"नहीं माया, तुम नहीं समझोगी। इस प्यार के पीछे भी कोई चाल रही होगी।"

"मैं नहीं मानती। मुझे तो लगा कि तुम्हारे सौतेले भाई को तुमसे सहानुभूति है।"

"स्वार्थ कभी-कभी सहानुभूति का रूप धारण कर लेता है।"

"कैसा स्वार्थ ?"

"उन्हें मेरे प्रभाव और मेलजोल से डर लगता है।"

"मैं समझी नहीं।"

"इस घाटी के सारे गुण्डे और बदमाश बरसों से मेरा नमक खाते आ रहे हैं।"

वह प्रताप की बात समझते ही खिलखिलाकर हंस पड़ी। फिर जब मुश्किल से हंसी थमी तो बोली—"मैं समझती थी कि तुम ठाकुर हो, तुम्हारे अन्दर राजवंशी खून है···!"

"इसमें कोई शक है ?"

"तो दिमाग इतनी कमीनी और नीच बात क्यों सोचता है !" माया ने अपना दुपट्टा प्रताप की गर्दन में लपेटते हुए कहा। यह

सुनकर वह तिलमिला गया और माया के गाल मसलता हुआ उसे अन्दर ले गया।

समीर नीनू को साथ लेकर डाक्टर टंडन के यहां पहुंचा तो माया को वहां देखकर हैरान रह गया। वह डाक्टर के साथ कोई बहस कर रही थी। सादा भेस, सीधे बाल और भोला चेहरा देखकर कोई भी धोखा खा सकता था कि यह माया वह माया नहीं, जो प्रताप के यहां थी। समीर थोड़ी देर तक उसे आश्चर्य से देखता रहा। वह डाक्टर के साथ बातों में व्यस्त थी। वह सोचने लगा कि एक सूरत की कहीं दो लड़कियां न हों! किन्तु जैसे ही माया की दृष्टि समीर पर पड़ी, वह तनिक कांप गई। इससे समीर समझ गया कि वह माया ही है।

समीर से दृष्टि मिलते ही माया थोड़ी झेंपी और फिर उसने पल्लू खींचकर सिर को तनिक और ढक लिया। समीर ने भी पिछली मुलाकात को प्रकट न होने दिया।

"हैलो, डाक्टर!" वह बोला।

डाक्टर टंडन ने चश्मा उतारते हुए समीर का स्वागत किया और पूछा—"कहां है वह लड़की?"

"बाहर गाड़ी में···।"

"अन्दर क्यों नहीं ले आए?"

"सोचा, पहले देख लूं आप हैं कि नहीं!"

"एपाइंटमेंट इज़ एपाइंटमेंट···मैं तुम लोगों की ही राह देख रहा था।"

समीर ने समर्थन में गर्दन हिलाई और फुर्ती से बाहर लौट गया। माया, जो उसे देखकर घबरा गई थी, अब संतोष के साथ डाक्टर के आगे कुछ टाइप किए हुए कागज़ रखने लगी। डाक्टर उन कागज़ों को सरसरी तौर से पढ़ने लगा। थोड़ी ही देर में समीर लौट आया। इस बार उसके साथ नीलू भी थी। डाक्टर अभी तक

कागज़ों को पढ़ने में व्यस्त था, किन्तु माया समीर तथा नीलू को आलोचना की दृष्टि से देखने लगी। समीर ने दृष्टि मिलते ही संकेत से 'हैलो' कहा। माया के उदास और बुझे हुए होंठों पर मुस्कराहट की एक लहर दौड़ गई। उसने अपनी घबराहट पर नियंत्रण कर लिया और नीलू को गौर से देखकर डाक्टर की ओर ध्यान देने लगी।

समीर ने नीलू को बराबर की कुर्सी पर बिठा दिया। डाक्टर टंडन ने दृष्टि उठाकर नीलू के भोले चेहरे की ओर देखा और थोड़ी देर तक देखता ही रह गया। थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद उसने जानते हुए भी प्रश्न किया—"क्या नाम है तुम्हारा ?"

"नीलू।" उसने कांपते स्वर में कहा।

"जानती हो, मैं हर सुबह तुम्हें देखता हूं···!"

"जी···!" वह घबरा गई।

"मेरा मतलब है, तुम्हारे चित्र में···।"

"नीलू, यही हैं डाक्टर टंडन। इन्होंने ही तुम्हारा चित्र मुझसे छीन लिया है।" समीर ने बात को सुलझाते हुए कहा। उनकी बातें तूल न पकड़ें, यह सोचकर माया ने डाक्टर का ध्यान कागज़ों की ओर आकर्षित किया।

"ओह! आई एम सॉरी!" वह चौंककर बोला।

डाक्टर ने जल्दी से उन कागज़ों को पढ़ा और दो स्थानों पर हस्ताक्षर कर दिए। माया धन्यवाद देकर जैसे ही बाहर गई, समीर से पूछे बिना न रहा गया—"कौन थीं यह देवी ?"

"मेरे स्वर्गवासी भाई की बहू।"

"लेकिन यह भेस···।"

"कुछ दिन पहले इसका पति यानी मेरा भतीजा एक हवाई दुर्घटना में मारा गया।"

समीर डाक्टर की बात को चुपचाप सुनता रहा।

"किसी दूसरे देश में बस जाना चाहती है।" डाक्टर ने आगे

कहा—"पासपोर्ट आदि के लिए कागजों पर हस्ताक्षर कराने आई थी।" इतना कहकर डाक्टर ने बात बदली—"सुनो," डाक्टर टंडन ने अपनी सहायक नर्स की ओर देखते हुए कहा—"नीनू को जांच के लिए अन्दर ले जाओ।"

नीनू जांच के लिए अन्दर जाने में घबरा रही थी। डाक्टर ने उसका साहस बढ़ाया और सहारा देकर अन्दर ले गया।

समीर नीनू को भूलकर अभी तक माया के बारे में सोच रहा था। वह उसके मानस-पटल पर एक परछाई की भांति उभर रही थी। उसका वह रूप, जो उसने प्रताप के यहां देखा था, उसे बार-बार याद आ रहा था। माया उसे एक पहेली प्रतीत हो रही थी। परेशानी कम करने के लिए उसने जेब से सिगरेट निकालकर सुलगाई और पीता हुआ खिड़की तक चला गया।

समीर ने खिड़की से बाहर झांककर देखा। मोटरों की भीड़ से अलग सड़क के किनारे खड़ी माया किसी की प्रतीक्षा कर रही थी। समीर सिगरेट के लम्बे-लम्बे कश लेता हुआ उसे देखता रहा। वह शायद इस सीधी-सादी माया की उस माया से तुलना करने लगा, जो उसने नहाने के लिबास में देखी थी।

तभी एक कार आकर माया के पास रुकी। लाल रंग की स्पोर्ट्स कार को प्रताप स्वयं चला रहा था। समीर उसे नई गाड़ी में देखकर चौंक पड़ा। माया लपककर कार में बैठ गई और कुछ ही क्षणों में प्रताप उसे लेकर समीर की आंखों से ओझल हो गया। वह देर तक चुपचाप खड़ा उनके बारे में सोचता रहा।

डाक्टर टंडन नीनू की आंखों की जांच करने के बाद ऐक्सरे-रूम के बाहर निकला तो समीर लपककर उसके सामने जा पहुंचा और प्रश्नभरी दृष्टि से उसकी ओर देखने लगा।

"अभी तक नीनू की पुतलियों में प्रकाश टिमटिमा रहा है।" डाक्टर ने मुसकराकर कहा।

"सच डाक्टर!" समीर तेजी से बोला—"अब?"

"आपरेशन होगा।"

"नीलू देख सकेगी?"

"भगवान पर भरोसा रखो। कोशिश करना हमारा कर्तव्य है।" डाक्टर ने गम्भीरता के साथ कहा—"ऐक्सरे की रिपोर्ट देखने के बाद दावे से कुछ कह सकूंगा।"

तभी नर्स नीलू को लेकर बाहर आई। समीर अपनी आंखों में खुशी के आंसू भरे उसकी ओर बढ़ा और उसकी सुन्दर कमल जैसी आंखों को देखने लगा। आज उसे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उसकी पुतलियों में सैकड़ों सितारे झिलमिला रहे हों। उसने बढ़कर नीलू को सहारा दिया और खुशी के आवेग में कुछ भी न कह सका।

तभी नीलू ने मौन भंग किया :

"कुंवरजी, क्या मैं इस संसार को देख सकूंगी?"

"हां, नीलू।"

"मेरे जीवन के अंधेरे फिर उजाले बन जाएंगे?"

"हां, नीलू।"

"यह झील की नीली गहराई, झरने का बहता पानी, बर्फीली चोटियां, बस्ती के लोग…क्या मैं सब देख सकूंगी?" कहते-कहते वह भावुक हो उठी।

"हां, नीलू। तुम संसार के समस्त सौंदर्य को अपनी आंखों से फिर देख सकोगी।"

"लेकिन कब?"

"थोड़े दिनों के बाद…।"

नीलू फिर चुप हो गई।

उसे चुप देखकर समीर ने पूछा—"क्या हुआ नीलू?"

"बापू की याद आ गई। आज वह होते तो कितने खुश होते!'

नीलू ने अपने हृदय की पीड़ा समीर के सामने प्रकट कर दं और उसका सहारा लेकर बाहर जाने को तैयार हो गई।

समीर ने पलटकर डाक्टर टंडन को धन्यवाद दिया और पि

आने का वादा करके नीलू के साथ चल दिया।

जब वे दोनों दरवाज़े के निकट पहुंच गए तब नर्स ने धीरे से डाक्टर टंडन से कहा—"इस लड़की को मैंने कहीं देखा है।"

"ज़रूर देखा होगा।" डाक्टर ने उत्तर दिया—"वह जो चित्र टंगा है नीलू का।"

नर्स ने चित्र की ओर गौर से देखा और एक लम्बी सांस लेती हुई अपने काम में व्यस्त हो गई।

१०

नीलू की आंखों का आपरेशन हुए आज दस दिन बीत चुके थे। आज उसकी आंखों की पट्टी खुलने वाली थी। अतः हर किसीके हृदय में एक विचित्र-सा कम्पन था।

समीर सुबह से ही डाक्टर टंडन के अस्पताल में उपस्थित था। थोड़ी देर में रानी मां, दीवान साहब और जुगनू भी आने वाले थे। हर कोई उस क्षण की प्रतीक्षा कर रहा था, जब नीलू का संसार ...ल जाने वाला था।

नीलू को एक विशेष कमरे में रखा गया था। इस कमरे में और कमरों की अपेक्षा कम प्रकाश था। तेज़ प्रकाश से बचने के लिए परदों को खींच दिया गया था। समीर वहां आया तो नर्स उसका संकेत पाते ही बाहर चली गई। अंधेरे कमरे में आशा की धुंधली किरण चमक रही थी। समीर को विश्वास था कि नीलू संसार की जगमगाहट को देख सकेगी।

वह दबे पांव नीलू के निकट जा पहुंचा। उसकी उपस्थिति की अनुभूति ने नीलू के मस्तिष्क की शिराओं को जगमगा दिया और वह कंपकंपाकर बोली—"कुंवरजी, आप···!"

"हां, नीलू, मैं···।" समीर ने अपने साथ लाया हुआ गुलाब का फूल नीलू को थमा दिया।

नीलू ने गुलाब को अपनी कोमल उंगलियों से पकड़ लिया और उसे सूंघते हुए बोली—"मेरी आंखों की रोशनी लौट आएगी ना, कुंवरजी?"

"हां, नीलू। मुझे विश्वास है कि भगवान तुम्हारे साथ अन्याय

नहीं करेंगे।"

"विश्वास तो मुझे भी है, लेकिन मन डरता है।"

"अंधेरे जीवन से अचानक उजाले में आते समय डर लगना स्वाभाविक है, नीलू! अब तुम जीवन की उस सच्चाई को देखने के लिए तैयार हो जाओ, जो आज तक तुम्हारे लिए केवल सपनों की दुनिया थी।"

"सच? तो एक वचन दीजिए।"

"क्या?"

"जब मेरी आंखों की पट्टी खुले तब सबसे पहले मैं आपको देखूं।"

तभी किसीकी आहट को सुनकर दोनों चौंक उठे। समीर ने पलटकर देखा। दरवाज़े में जुगनू खड़ी हुई थी। उसने आगे बढ़कर नीलू के हाथों में गुलदस्ता थमा दिया।

"तुम अकेली ही आई हो?" समीर ने प्रश्न किया।

"नहीं। रानी मां और डैडी भी आए हैं।" जुगनू ने बताया—"शायद डाक्टर साहब के कमरे में रुक गए हैं।"

"अच्छा, तुम यहां बैठो। मैं अभी आया।" यह कहकर वह तेज़ी से बाहर चला गया।

वह चला गया तो जुगनू सोच में डूब गई। अब तक उसके चेहरे पर जो मुसकराहट खेल रही थी, अचानक ही बुझ गई। नीलू देखने लगेगी, यह सोच-सोचकर ही उसका दिल डूबा जा रहा था।

नीलू को यह मौन खलने लगा। उसने अचानक ही प्रश्न किया—"जुगनू, कोई विशेष बात है क्या?"

"बात! कोई बात नहीं।" जुगनू हड़बड़ाकर बोली।

"तुमसे एक बात पूछूं?"

"पूछो।"

"मुझे दिखाई देने लगेगा तो सब खुश होंगे ना?"

"अरी पगली, यह भी कोई पूछने की बात है! तू क्या जाने

"तो फिर इसे रहने दीजिए···।"

"मुझे अभी तक विश्वास है कि तुम···।"

"डाक्टर !"

"बोलो, क्या कहना चाहती हो तुम ?"

"डाक्टर, मैं देख सकती हूं। सचमुच देख सकती हूं। आपका आपरेशन सफल रहा।" कहते-कहते नीलू ने डाक्टर का हाथ पकड़ लिया—"लेकिन संसार की दृष्टि में मुझे···।"

उसकी बात सुनकर डाक्टर टंडन आश्चर्य-चकित रह गया। न जाने क्या सोचकर उसने नीलू की आंखों पर बंधी पट्टी को खोल दिया और उसकी नाचती पुतलियों को देखने लगा।

"बताओ, तुम मुझे देख रही हो ?"

"हां, डाक्टर···।"

"फिर तुमने झूठ क्यों बोला ?"

"जीवन का वह सच जानने के लिए, जो अब तक मैंने अंधी आंखों से जाना है। मैं जानना चाहती हूं कि यह दुनिया क्या इतनी ही सुन्दर है, जितनी मैंने सोची है !"

डाक्टर को उसके भोलेपन पर गुस्सा भी आ रहा था और प्यार भी। वह सोच नहीं पा रहा था कि उससे कहे तो क्या कहे।

"क्यों डाक्टर, अपने मरीज का इतना-सा रहस्य आप छिपा न सकेंगे ?"

"लेकिन नीलू, मैं डाक्टर हूं और···।"

"मैं जानती हूं। लोगों को यह बताकर कि मैं देख सकती हूं, आप बहुत खुश होंगे, लेकिन···।" कहते-कहते उसकी आंखों में मोती झिलमिला उठे।

यह देखकर डाक्टर टंडन का दिल भर आया। नीलू का हाथ अपने हाथों में लेकर उसने वादा कर लिया कि यह रहस्य रहस्य ही रहेगा।

"लेकिन तुम ऐसा क्यों कर रही हो ?" उसने जानना चाहा।

"मैंने बताया न। डाक्टर'''मैं जानना चाहती हूं कि सहानुभूति और प्यार में कितना अन्तर है।"

डाक्टर ने उसके दिल को अधिक कुरेदना उचित न समझा। वह नीलू की आंखों पर पट्टी बांधकर और उसे आराम से लेटने के लिए कहकर बाहर चला गया।

डाक्टर के जाने के बाद समीर और जुगनू ने नीलू से मिलना चाहा तो डाक्टर ने मना कर दिया। समीर ने जिद की तो डाक्टर ने कहा—"उसे आराम की जरूरत है। अच्छा यही होगा कि उसे डिस्टर्ब न किया जाए।"

समीर लाचार होकर सबके साथ घर लौट गया।

अगले दिन गुलदस्ता लिए हुए वह नीलू से मिलने आया तो नीलू की आंखों में एक अजीब चमक थी। वह फूलों की रंगत के बजाय समीर के चेहरे की रंगत को अधिक देख रही थी। समीर उसे बार-बार तसल्ली दे रहा था, किन्तु समीर की बातों से नीलू को एक गुदगुदी-सी अनुभव हो रही थी। फूलों की महक से अधिक वह उस महक का आनन्द ले रही थी, जो आंखों की रोशनी लौट आने पर उसके जीवन में बसने लगी थी।

"जानती हो, मैंने क्या सपने देखे थे!" समीर ने यह कहकर अचानक ही उसके मस्तिष्क के तारों को थोड़ी देर के लिए झिंझोड़ दिया।

"जानती हूं।"

"क्या जानती हो?"

"यही कि आज मैं देख सकती तो आप मुझे एक ऐसा संसार दिखाते, जिसे आज तक मैंने केवल अनुभव किया था।"

"हां, नीलू। लेकिन मेरी सारी आशाएं बुझ गईं।"

"लेकिन आपकी आशाओं के दीप आज भी मेरी आंखों में टिमटिमा रहे हैं। मेरा अटल विश्वास है कि एक दिन मैं अवश्य देख सकूंगी।"

"हां, समीर। नीलू ठीक कहती है।" डाक्टर टंडन ने वहां आते हुए कहा—"वह एक दिन उजालों में लौट आएगी।"

डाक्टर की बात से समीर थोड़ी देर के लिए आश्वस्त हो गया।

"अच्छा हुआ तुम आ गए। मैं तुम्हें बुलवाने ही वाला था।"

"क्यों?"

"नीलू अस्पताल से छुट्टी चाहती है।"

"लेकिन आप तो···।"

"मैंने अपना विचार बदल दिया है। तुम नीलू को ले जा सकते हो।"

समीर उसे साथ ले जाने को शीघ्र ही तैयार हो गया। नीलू ने डाक्टर के होंठों पर उभर आई मुस्कराहट को कनखियों से देखा और झेंप गई।

कुछ देर बाद वह समीर के साथ जीप में बैठी उस घाटी की ओर जा रही थी, जो उसकी मंज़िल थी। आज वह बार-बार नज़र चुराकर इधर-उधर के दृश्य देख रही थी। लुभावने दृश्य, ऊंची-नीची हरी घाटियां, सूरज की किरणों से चमकती हुई बर्फीली चोटियां, जो कभी-कभी पेड़ों के पीछे छिप जातीं। यह सब उसकी दृष्टि के सामने से स्मृतियों की परछाइयों की भांति निकला जा रहा था। पहले तो उसे यह सब बड़ा विचित्र लगा, किन्तु फिर वह उनमें खो गई।

एकाएक समीर ने जीप की गति धीमी कर दी और नीलू को उखड़ी हुई दृष्टि से देखने लगा। वह उसकी दृष्टि का सामना करते ही झेंप गई, जैसे उसकी चोरी पकड़ी गई हो! वह उसके इस व्यवहार को न समझ सका और तुरन्त पूछ उठा—"क्या सोच रही हो?"

"यों ही पुरानी स्मृतियों में खो गई थी।"

"स्मृतियां?"

"हां, बचपन की···वे अधूरे सपने, जो आज सच होने वाले थे।"

"लेकिन सच नहीं हुए!" समीर ने जैसे उसका वाक्य पूरा कर दिया। समीर की बात सुनकर, नीलू गम्भीर हो गई।

वह तनिक रुककर फिर बोला—"आज तुम देख सकतीं तो यह दृश्य देखकर तुम्हारा दिल नाच उठता।"

"अच्छा ही हुआ, जो मुझे रोशनी नहीं मिली।"

समीर ने अपनी दृष्टि उसके चेहरे पर टिका दी। नीलू के स्वर में एक ऐसा दर्द था, जिसने उसके दिल को छू लिया।

"तुम ऐसा क्यों सोचती हो?" उसने पूछा।

"रोशनी मिल जाती तो आपकी हमदर्दी खो देती।"

"लेकिन हमदर्दी के बजाय तुम्हें कुछ और मिल जाता, नीलू···।"

"क्या मिल जाता?"

"प्यार···।"

इस शब्द को सुनते ही नीलू की सोई हुई रगों में एक तूफान उठ खड़ा हुआ। उसके कानों में शहनाई के स्वर गूंजने लगे। वह दृष्टि उठाकर समीर को देखने लगी और फिर लाज से उसका सिर झुक गया। उसने चोर निगाहों से समीर के चेहरे पर खिली मुस्कान को देखा। यह मुस्कान उसके हृदय की बात को प्रकट किए दे रही थी···वह बात, जो वह आज तक होंठों पर न ला सका था।

नीलू ने पलटकर सामने फैली झील की ओर देखा और बोली—"वह देखो!"

"क्या?" समीर ने जीप को रोक दिया।

"झील!" नीलू के होंठ थरथराए।

समीर उसकी ओर प्यारभरी दृष्टि से देखने लगा और पूछ उठा—"तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि सामने झील है?"

"पक्षियों की फड़फड़ाहट सुनकर···।"

"ओह, समझा! तुम अपने मन की आंखों से

-सब।"

वह चुपचाप भील की ओर देखती रही।

नीली भील में श्वेत पक्षी पंख फड़फड़ा रहे थे। तभी उसकी दृष्टि उस नाव पर पड़ी, जिसे चीकू चला रहा था। वह उसे जी भरकर देखना चाहती थी, किन्तु संदेह से बचने के लिए उसने मुंह मोड़ लिया।

"चलोगी ?"

"कहां ?"

"नाव में।"

"नाव कहां है ?"

"भील में। चीकू चला रहा है।"

"लेकिन रानी मां आपकी राह देख रही होंगी।"

"वह जानती हैं कि मैं तुम्हारे पास आया हूं।"

तभी चीकू ने दूर से नीलू को पहचान लिया। वह 'दीदी, दीदी' चिल्ला उठा और जल्दी-जल्दी नाव को खेता हुआ किनारे की ओर लाने लगा। अब नीलू उससे मिले बिना न जा सकी और समीर का सहारा लेकर जीप से उतर गई।

चीकू भागता हुआ आया और उससे लिपट गया।

"क्या यह सच है दीदी कि तुम देख सकोगी ?" वह हांफते हुए बोला।

"नहीं चीकू, तुम्हारे बाबूजी ने तो भरसक कोशिश की, लेकिन नसीब ने साथ नहीं दिया।"

"लेकिन चीकू, तू इसकी बात सुनकर निराश मत हो। दो महीने बाद फिर आपरेशन होगा और इसकी निराशा आशा में बदल जाएगी।"

नीलू समीर की बात सुनकर मन ही मन खिल उठी। चीकू ज़िद करके दोनों को खींचता हुआ नाव तक ले गया। आज वह उन्हें नाव में बिठाकर भील की सैर कराना चाहता था। वह नीलू

को सहारा देकर नाव में बिठाने लगा। समीर को रुका देखकर वह बोला—"क्यों बाबूजी, आप क्यों रुक गए ?"

"छोटी नाव है। कहीं हमारे बोझ से···।"

"नहीं बाबूजी, यह डूबेगी नहीं। इसका दिल बहुत बड़ा है।"

समीर उसके भोलेपन पर मुसकराए बिना न रह सका। वह धीरे-धीरे कदम जमाता हुआ नाव में उतर गया और नीलू की आंखों की ओर देखने लगा, जिनमें झील के नीले पानी की परछाईं झिलमिला रही थी।

धीरे-धीरे नाव आगे बढ़ती चली गई। किनारे का शोर कम होता गया। इस चुप्पी में केवल चीकू के चप्पू का स्वर सुनाई दे रहा था। नीलू कभी नीले आकाश को देखती तो कभी पानी में तैरती रंग-बिरंगी मछलियों को। वे मछलियां उसे उन तितलियों जैसी दिखाई दे रही थीं, जिन्हें वह बचपन में पकड़ा करती थी। बचपन की उन यादों में वह थोड़ी देर के लिए खो गई।

"तुम चुप क्यों हो ?" अचानक ही समीर ने पूछा।

"बस यों ही···।"

"बात क्या है ?"

"आज मुझे अपना अंधापन बुरा नहीं लग रहा।"

"नीलू !"

"हां। झील के ये साये मेरे बचपन के साथी हैं, जो मुझसे रूठे नहीं। आज भी ये अपनी नीलू का स्वागत कर रहे हैं।"

तभी किसी हंसी ने उनकी बातों में विघ्न डाल दिया। एक और नाव उनकी नाव के समीप आ गई। दोनों ने पलटकर उस ओर देखा। समीर ने प्रताप और माया को देखा तो झेंप-सा गया। माया साकी बनी प्रताप को शराब पिला रही थी। नीलू भी सांस रोके उस ओर देखती रही, लेकिन वह उन चेहरों को न पहचान सकी। समीर ने नाव को दूसरी ओर ले जाने के लिए चीकू को संकेत किया।

दृष्टि उठाकर उनकी आँखों की गहराई में झाँकने लगी। झील के नीले नारंगी उनकी उदास पुतलियों में झिलमिला रहे थे।

उसके मन में बारम्बार यह प्रश्न उठ रहा था कि प्रताप के साथ बैठी औरत कौन थी? किन्तु वह पूछने का साहस न कर सकी। वह जानती थी कि अभी तक वह समीर की दृष्टि में अंधी है और यह जानने का उसे कोई अधिकार नहीं!

ी डाक्टरों की झूठी तसल्ली को सच समझ बैठी, समी

ने कहा—"इस प्रकार आंखें ठीक होने लगीं तो संसार के

ी लोगों को दिखाई देने लगेगा !"

"लेकिन मां, नीरू जन्म की अंधी नहीं है…।"

"हां, भाग्य की अंधी तो है!" रानी मां ने समीर की बात

टा।

"तुम ठीक कहती हो, मां!" समीर ने बोझिल स्वर में कहा

"समीर…!"

"हां मां, इनका भाग्य हमारे कारण ही तो अंधा है।"

"लेकिन तब तो तुम्हारे पिता ने एक भारी रकम देकर मामला

दबा दिया था…!"

"हां, रकम ने उसका जीवन बचा दिया, लेकिन अंधेरे से भर

दिया!"

"यह भगवान की इच्छा थी…।"

"शायद…"

"तो क्या बरसों बाद पिता की भूल को सुधारने का बीड़ा उठा

लिया है तुमने?"

"समझती हो तो प्रश्न क्यों करती हो!" यह कहता हुआ

समीर अपने कमरे की ओर बढ़ गया। रानी मां और दीवान साहब

उसके इस व्यवहार पर हक्के-बक्के खड़े रह गए। आज से पहले समीर

ने रानी मां के साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया था। किन्तु रानी मां

अपने क्रोध को पी गईं। उन्होंने दीवान साहब की ओर देखा और

कहा—"लगता है, समीर पर पागलपन सवार है!"

"नीरू ने जादू कर दिया है कुंवरजी पर…।"

"अंधी लड़की क्या जादू करेगी, दीवानजी!" रानी मां ने तनि

कड़े स्वर में कहा—"फिर उसका जादू ठहरेगा कितने दिन…!"

"कहीं ऐसा न हो कि उसका जादू उतरते-उतरते अपना बे

ही हाथ से निकल जाए!"

दोनों को गले मिलते देखा तो उनका दिल धड़क उठा। दीवान साहब खिसककर पास आ गए और बोले—"इसे किसने निमंत्रित किया है ?"

"किसीने भी नहीं।" रानी मां के होंठ थरथराकर रह गए।

प्रताप ने जैसे ही रानी मां को देखा वैसे ही झुककर पैर छूने लगा।

दीवान साहब ने दोनों की दशा को भांप लिया और बोले—"मिस्टर एण्ड मिसेज़ सिन्हा आ रहे हैं।"

रानी मां ने पलटकर देखा और उनकी ओर बढ़ गईं। दीवान साहब और प्रताप ने एक-दूसरे को गहरी दृष्टि से देखा।

"दीवानजी, मेरा आना अच्छा नहीं लगा क्या ?" प्रताप ने अपने शुष्क होंठों को ज़बान से तर करते हुए पूछा।

"नहीं तो···ऐसी बात नहीं···।" उन्होंने अपनी घबराहट को छिपाने का प्रयास करते हुए कहा।

"तो चेहरे पर मुर्दनी क्यों ?"

"सोच रहा हूं, तुम अपने शत्रु को दुआएं देने क्यों चले आए !"

"समय के साथ बदलने का विचार कर लिया है मैंने।"

"ओह ! यदि बरसों पहले यह विचार कर लिया होता तो दोनों भाइयों के बीच घृणा की दीवार तो न खड़ी होती !"

"इसी दीवार के कारण ही तो आपकी हुकूमत चल रही है !"

"प्रताप !" दीवान साहब क्रोध से चीख उठे।

प्रताप मुसकराकर बोला—"अरे, आप तो बिगड़ गए। गुस्सा थूकिए और बताइए कि आपके इरादे कहां तक पहुंचे ?"

"कैसे इरादे ?"

"अपनी बेटी को इस घराने की बहू बनाने के।"

"तुम्हें इससे क्या ?"

"यों ही सहानुभूति है मुझे···सुना है, जैसे हम दोनों भाइयों के बीच आप दीवार बन गए वैसे ही आपके इरादों में एक भंगी

तुम्हारा सौंदर्य देखेंगे तब सबके चेहरे फीके पड़ जाएंगे। अप्सरा लग रही हो आज तुम।"

"सच!" वह अपने-आपमें सिमटकर बोली और एक सरसरी दृष्टि से उसने जुगनू के रूप को देखा। उसके चेहरे पर दिल का चोर उभर आया। नीलू उठी और चुपचाप जाने के लिए तैयार हो गई।

अभी उसने दो कदम ही उठाए थे कि समीर उसे पुकारता हुआ वहां आ पहुंचा। दोनों उसका सामना करते ही ठिठक गईं—नीलू उसके चेहरे का बदलता हुआ रंग देखकर और जुगनू अपने दिल का चोर पकड़े जाने पर···

"नीलू!" वह दबे स्वर में चिल्लाया।

"मैं तैयार हूं, कुंवरजी।" वह बोली—"लेकिन आप चुप क्यों हो गए?"

"तुम्हें देखकर···।"

"आंखें चुंधिया गईं ना?···जुगनू सच कहती थी कि आज मैं अप्सरा लग रही हूं अप्सरा···क्यों, कुंवरजी?"

जुगनू, जो तनिक सिमककर खड़ी हुई थी, समीर के चेहरे के बदलते रंगों को देखकर कांप उठी। जैसे ही समीर पलटा, वह शीघ्रता से बाहर जाने लगी। समीर ने लपककर उसे पकड़ लिया और अपने निकट खींचता हुआ बोला—"जुगनू, आज तुम सचमुच अप्सरा लग रही हो···नीलू से कहीं सुन्दर, आकर्षक···लेकिन एक बात कभी न भूलना···चेहरा बदल लेने से मन नहीं बदल जाता!"

जुगनू ने एक झटके से अपने-आपको छुड़ाया और बाहर की ओर भाग गई। समीर ने नीलू की ओर सहानुभूति से देखा और कहा—"तुम पार्टी में नहीं जाओगी नीलू···।"

"क्यों?"

"अब तुम्हें कैसे बताऊं कि तुम क्या लग रही हो···एक मजाक, गंवार और असभ्य···।"

जुगनू प्रताप के पास अकेली रह गई तो उसने होंठ दबाकर पूछा—"वह अंधी कहां है ?"

"नीलू···तुम उसे कैसे जानते हो ?"

"कोई ऐसा खूबसूरत चेहरा है, जिसे मैं नहीं जानता ?"

"वह यहां नहीं आएगी।"

"क्यों ?"

"समीर ने मना कर दिया है।"

"किसी दुश्मन की नजर न लग जाए, इसलिए ?"

"शायद।" वह बिना सोचे-समझे कह गई।

तभी उसकी आंखें आश्चर्य से फैल गईं। उसने जीने की ओट में खड़ी नीलू को देख लिया था। भोली नीलू एक ही स्थान पर खड़ी शायद यह सोच रही थी कि आगे बढ़े या न बढ़े। अभी वह इस सदमे से संभल भी न पाई थी कि जुगनू ने देखा कि समीर नीलू की ओर बढ़ता जा रहा है।

समीर ने उसे सहारा दिया और नीलू की ओर देखने लगा। वह अपना पूरा हुलिया बदलकर आई थी। खुले बाल, पवित्र सौंदर्य और श्वेत साड़ी ने उसमें एक अलौकिक आकर्षण भर दिया था। सादगी ने उसके सौन्दर्य में चार चांद लगा दिए थे। वह उन मेह-मानों की तड़क-भड़क से बिलकुल अलग थी। समीर ने उसकी ओर प्यार-भरी दृष्टि से देखा और देखता ही रह गया। हर्ष से उसकी आंखों में एक चमक पैदा हो गई। उसके होंठ उसकी प्रशंसा में कुछ कहने के लिए तड़प उठे, लेकिन वह सोच नहीं पाया कि कहे तो क्या कहे।

नीलू ने समीर को चुप देखा तो बोली—"मुझसे फिर कोई भूल हो गई क्या ?"

"नहीं नीलू, सादगी ने तुम्हारा सौन्दर्य और निखार दिया है।" समीर ने झट से कहा—"मुझे पता होता कि तुम किसी की सहायता के बिना ही सिंगार कर सकती हो तो जुगनू का एहसान [illegible]

न देख सकी। ईर्ष्या की आग में वह जल उठी। वह अन्दर जाने के लिए जैसे ही पलटी वैसे ही प्रताप ने उसका रास्ता रोक लिया। पलभर के लिए दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा।

"लगता है यह अभी सचमुच ही तुम्हारे और समीर के बीच दीवार बन गई है!" वह अपने होंठों पर शरारत-भरी मुस्कराहट लाता हुआ दबी आवाज़ में बोला।

जुगनू ने समर्थन में सिर हिला दिया और सोचने लगी कि इस भरी महफिल में शायद प्रताप ही उसका हमदर्द है।

"चाहो तो मैं इस दीवार को तोड़ सकता हूं।" प्रताप ने उसे चुप देखकर अपना जाल फेंका।

जुगनू ने प्रताप की ओर अर्थभरी दृष्टि से देखा और मेहमानों को गीत में व्यस्त पाकर तनिक ओट में आ गई। प्रताप भी उसके पीछे-पीछे खिसक आया।

"वह कैसे?" जुगनू ने विफरी आवाज़ में पूछा।

"यदि तुम मुझपर एक एहसान करो तो···।"

"क्या?"

"रानी माँ की सेफ से तुम्हें कुछ कागज चुराने होंगे।"

"नहीं, यह मुमकिन नहीं!"

"घबराओ नहीं, तुम्हारी यह साधारण सी चोरी हम दोनों का जीवन सवार सकती है।"

"लेकिन यह पाप है···।"

"प्यार के लिए किया गया हर पाप पुण्य में बदल जाता है।" जुगनू की आंखों में झांकते हुए प्रताप ने कहा तो वह लाचार-सी उसे देखती ही रह गई। वह सोच नहीं पा रही थी कि प्रताप की बात स्वीकार कर ले या मना कर दे।

सभी वातावरण मेहमानों की तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। नीलू को मिली इस प्रशंसा ने जुगनू के दिल में ईर्ष्या की आग को और भड़का दिया।

तिलमिला उठा। उसने पलटकर माया की ओर देखा लेकिन कुछ कहते-कहते रुक गया।

"कहां खो गए थे ?" माया ने झुंझलाकर हंसते हुए पूछा।

"तुम्हारे सपनों के सागर में।"

"मगर वे तो अब साकार होने वाले हैं।"

"जानता हूं माया, किन्तु इतनी जल्दी मैं तुम्हारे साथ न जा सकूंगा।"

"क्यों ?"

"इतनी बड़ी रकम विलायत में जाकर एक मामूली बैरम बनकर रह जाएगी और उमड़ती हुई खुशियां घुट जाएंगी।"

"फिर ?"

"कुछ दिन और प्रतीक्षा करनी होगी।" प्रताप ने गम्भीरता के साथ कहा—"मैंने एक ऐसी चाल चली है जो वहारों को हमारे कदमों पर ला देगी।"

"क्या है वह ?"

"है एक चीज।"

"कहां है ?"

"रानी मां की सेफ में।"

"कौन निकालेगा ?"

"जुगनू, दीवान की बेटी।"

"वह यह काम क्यों करेगी तुम्हारे लिए ?"

"अपने प्यार की रक्षा के लिए। उसे नीलू से छुटकारा पाना है और मुझे इस घराने से।"

माया की समझ में यह पहेली न आई तो वह परेशान-सी प्रताप की ओर देखने लगी। वह उसे गम्भीर देखकर तनिक मुसकरा दिया। माया की आंखों में एक ऐसा प्रश्न उभर आया था, जो प्रताप की दृष्टि में अनुचित था। अतः उसने अपनी सारी योजना माया के सामने प्रकट कर दी। उसने बताया कि वह उस घराने का

रहस्य जानता है, जिसके द्वारा वह खोई हुई दौलत, तथा इज्जत दोनों को फिर से प्राप्त कर सकता है।

"ऐसा क्या रहस्य है डार्लिंग ?" माया ने प्रश्न किया।

"पिताजी का ढेर सारा धन विदेशी बैंकों में रखा हुआ है।"

"लेकिन तुम उसे कैसे पा सकते हो ?"

"मरने से पहले पिताजी ने यह रहस्य दीवानजी को बताया था। मैं पर्दे के पीछे खड़ा सब सुन रहा था।"

"और, दीवानजी ने...।"

"यह रहस्य रानी मां को नहीं बताया और तब तक नहीं बताएंगे जब तक उनकी बेटी उस घराने की बहू न बन जाए। वह अनपढ़ औरत उस बुड्ढे पर भरोसा किए हुए है।"

"लेकिन तुम धन कैसे पाओगे ?"

"रानी मां की सेफ में कुछ कागज हैं। उन्हें पाते ही मैं बैंकों पर धावा बोल दूंगा। पिताजी के हस्ताक्षर करना मेरे बाएं हाथ का खेल है।"

"तुम किसी मुसीबत का शिकार न हो जाओ प्रताप !" माया ने संदेह प्रकट किया।

"यह तुम कह रही हो माया ! तुमने भी तो मुझसे अपने पति के हस्ताक्षर कराए थे और कलकत्ता वाले बैंक से एक मोटी रकम निकलवा ली थी !"

"उस समय मेरा पति जीवित था और बैंक वालों को मुझपर कोई संदेह न हो सकता था।"

"पति तो जीवित नहीं था, हां, रकम निकलवाने के बाद तुमने यह समाचार पहुंचाया था कि वह मर चुका है।"

"लेकिन उस रकम पर मेरा अधिकार था। वह धन मेरे पति का था।"

"मैं किसी और के धन पर थोड़े ही अधिकार जमा रहा हूं।" प्रताप तनिक मुसकराकर बोला—"अपने बाप का माल है सो

फीसदी !"

माया भी हर प्रश्न का उचित उत्तर पाकर मन ही मन मुसकरा उठी। उसने अपना सिर प्रताप के कंधे पर फिर टिका दिया। प्रताप बच्चों की तरह मगन होकर मुंह में सीटी बजाने लगा और जीप चलाता रहा।

जब वे माया के मकान तक पहुंच गए तब प्रताप बोला—"अब मैं चलूं।"

"ऐसी भी क्या जल्दी है?" माया ने कहा—"सर्दी में शरीर कांप रहा है। थोड़ी देर अंदर बैठ लो।"

"नहीं माया, व्हिस्की शुरू कर दी तो फिर रात यहीं बीत जाएगी।"

"इसमें कौन-सी नई बात होगी? मैंने भी तो कई रातें बिताई हैं तुम्हारे आशियाने में। आज की रात तुम रह जाओ। सवेरा होते ही चले जाना।" माया उसे खींचते हुए अंदर ले गई।

"माया! मैं इस मकान में आता हूं तो न जाने क्यों मुझे एक भय जकड़ लेता है···दम घुटने लगता है।"

"यह तुम्हारा भ्रम है डार्लिंग!" माया ने बत्ती जलाने को हाथ बढ़ाया तो प्रताप ने रोक दिया।

"कुछ भी समझ लो।" वह बोला—"मुझे लगता है, जैसे तुम्हारे पति का भूत इस मकान के हर कोने से आंखें फाड़े देखता रहता है।"

यह सुनते ही माया तनिक झेंप गई और अंधेरे में प्रताप की चमकती हुई आंखों में झांकने लगी। दिलों की धड़कनें अनियंत्रित हुई जा रही थीं। वासना की भूख और तड़प से उनके शरीर भुनगे जा रहे थे।

"प्रताप!" माया ने तड़पकर कहा और लपककर उससे लिपट गई।

प्रताप ने उसके तपते होंठों पर अपने होंठ रख···।
एक झटके के साथ माया से अलग होते हुए 'गुड नाई

चला गया । माया बड़ी देर तक दीवार का सहारा लिए हुए
रही । खुले दरवाज़े से आती हुई हवा के ठंडे झोंके उसके मन में
वज्र-सी तड़प भर रहे थे । वह चुपचाप खड़ी प्रताप की जीप की
आवाज़ सुनती रही, जो रात के सन्नाटे में धीरे-धीरे दूर होती जा
रही थी ।

फिर माया ने झुंझलाकर दरवाज़ा बंद कर दिया । उस सर्दी में
भी उसके शरीर की गरमी उसे झुलसाए दे रही थी । उसने बालों से
मफलर खोला और ब्लाउज के बटन खोलकर नाचते हुए शरीर को
हवा देने लगी । फिर उसने नाइट-लैम्प जलाया और उसकी धुंधली
रोशनी में झिलमिलाती हुई 'बार' तक चली गई ताकि शराब की आग
से अपने शरीर की आग को और भड़का ले ।

माया ने जैसे ही शराब की बोतल बाहर निकाली, उसके हाथ
वहीं के वहीं रुक गए । शराब की बोतल उसके हाथों से फिसलते-
फिसलते बची । उसकी आंखें छत की ओर उठ गईं । उसने सामने
रखी हुई शराब की दूसरी बोतल को देखा जो आधी खाली हो चुकी
थी । पास ही एक अधबुझा सिगार रखा था । माया के पांव लड़खड़ाने
लगे । शरीर कांपा और होंठ थरथरा उठे । फिर जैसे ही उसकी दृष्टि
राखदानी में पड़े सिगरेट के टुकड़ों पर पड़ी उसके मुंह से एक दबी-
दबी चीख निकल गई ।

वह पीछे पलटी और उन आंखों को पहचानने का प्रयत्न
करने लगी, जो उसके बिल्कुल निकट आ गई थीं । अपने सामने
अपने पति को जीवित पाकर वह स्तब्ध रह गई । बलराज की मोटी
मोटी आंखों से अंगारे निकल रहे थे । क्रोध और घृणा के अंगारे मा
के पास आते जा रहे थे । उसे अपनी आंखों पर विश्वास न आ रहा थ

बलराज ने अपने सूखे होंठों पर जीभ फेरते हुए कहा

"नागिन !"

यह सुनते ही माया कांप उठी । उसे लगा जैसे एक भय
सपना सच्चाई बनकर सामने आ खड़ा हुआ है । वह उसके वि

पास आ गया। वही भद्दी आवाज, बेडौल चेहरा…बदसूरती का जीता-जागता नमूना…वह निकट आकर रुक गया। पत्नी को भय-भीत देखकर उसके होठो पर एक व्यंग्यपूर्ण मुसकराहट उभरकर रह गई। भयानक आखो की लाली कुछ और गहरी हो गई।

"क्यो, डर गई ?"

"क्या तुम…।"

"हा, जीवित हू। तुम्हारे काले करनामे और गुनाहो को देखने की हसरत मुझे फिर यहा खीच लाई।"

"लेकिन तुम तो…हवाई दुर्घटना मे…।"

"नही मरा…मौत को मुझपर तरस आ गया…लेकिन दुनिया वालो के लिए मैं मर चुका हूं।"

"लेकिन तुम बच कैसे गए ?" उसने आश्चर्य से पूछा।

"जिस हवाई जहाज मे आग लगी, मैं उसमे नही था।"

"हे भगवान ! तुम इतने दिन रहे कहा ?"

"मौत के साए मे…माया, मैंने निर्णय कर लिया है…मैं अब जीवित नहीं रहूंगा।"

"नही बलराज !" वह झुककर उसके पैरो से लिपट गई—"मुझे क्षमा कर दो। मैं अपने धर्म से गिर गई थी।"

बलराज ने उसे गिडगिड़ाते देखा तो एक बनावटी मुसकान अपने होठो पर ले आया। उसने झुककर माया को अपनी बांहों का सहारा दिया और बोला—"रहने दो। इन कीमती मोतियो को यों न लुटाओ। शायद मेरी मौत के दिन काम आएं।"

"तुमने मुझे क्षमा कर दिया ?"

"आज से तुम आजाद हो माया।"

"मैं समझी नही…।"

"मैं तुम्हारे प्यार के मार्ग मे दीवार बनने नही आया। मेरी विधवा पत्नी के रूप मे आज भी तुम आजाद हो और इस ससार मे दूसरा विवाह करना कोई पाप नही।"

उसकी गहरी आंखों में झांकने लगी। एक पति अपनी पत्नी का जीवन सवारने के लिए इतना बड़ा त्याग कर रहा था। यह सोच-कर उसे एक झटका-सा लगा और वह थोड़ी देर तक उसकी खामोश निगाहों को पढ़ती रही।

"तुम मुझपर इतना बड़ा उपकार कर सकोगे बलराज?"

"क्यों नहीं, लेकिन एक उपकार तुम्हें भी करना होगा मुझ-पर।"

"क्या?"

"बीमा, जायदाद और शेयर्स का सारा धन मेरे हवाले कर दो।"

"बलराज!"

"हां माया। अपना माल ही तो मांग रहा हूं। मेरी विधवा के नाते आज तुम यह कर सकती हो।"

"नहीं, यह सम्भव नहीं। फिर मैं अपना जीवन कैसे गुजारूंगी?"

"प्रताप के प्यार के सहारे।" बलराज ने कहा—"वह भी तो कोई भूखा-नंगा नहीं है। सुना है, बहुत बड़ी जायदाद है उसकी।"

"वह उसके भाई ने छीन ली।"

"तो क्या भाई का बदला वह मुझसे लेना चाहता है!" वह चिल्लाकर बोला। माया वहीं सहमकर रुक गई। उसने उसकी डरा-वनी आंखों में अंगारों जैसी लाली देखी। उसके नथुने फड़क रहे थे। वह अपने होंठों को बार-बार दांतों से काट रहा था। वह उसकी यह दशा देखकर घबरा गई।

"बताओ, क्या वह भाई का बदला मुझसे लेना चाहता है?" वह उसके निकट आकर फिर चिल्लाया। माया और भी सहम गई।

"उसने मेरा सब कुछ तो छीन लिया।" बलराज आगे बोला—"घर, इज़्ज़त और तुम्हें। अब क्या वह मेरे कफन पर भी नजर रखता है?"

"ओह ! अब समझी। तुम मेरी बेवफाई का बदला लेने आए हो।"

"नहीं माया, अपने अपमान का सौदा करने आया हूं। मेरा माल मेरे हवाले कर दो और खुद प्रताप को लेकर जहां चाहो, चली जाओ। कसम तुम्हारी, मैं नहीं रोकूंगा।"

"और अगर ऐसा करने से मैं इनकार कर दूं ?"

"मैं इनकार को इकरार में बदलना जानता हूं।" कहते-कहते उसने जेब से पिस्तौल निकाल ली और माया कांप उठी।

"मुझे स्वीकार है।" माया ने तुरन्त कहा।

"वंडरफुल ! तो हो जाए इसी बात पर एक-एक जाम !"

"एक-एक नहीं, केवल एक !"

"क्यों ?"

"मैंने हमेशा जीत की खुशी मनाई है, हार की नहीं।" यह कहते हुए माया 'बार' की ओर बढ़ गई। उसने शराब का गिलास तैयार किया और पति के सामने रख दिया। बलराज उसकी लाचारी को भांप गया और शराब को कण्ठ में उंड़ेलने के पूर्व बोला—"कौन जाने डार्लिंग, हार-जीत के इस खेल में कौन बाजी मार जाए।"

और उसने माया को खींचकर अपने निकट बिठा लिया। आज माया में इतना साहस न था कि उसे रोक सके। वह चुपचाप उसके इशारों पर नाचती रही। कुछ देर पहले उसने यह सोचा भी न था कि उसकी सारी आशाएं धूल-धूसरित हो जाएंगी।

दूसरे दिन से ही माया ने धन बटोरना आरम्भ कर दिया। जब कभी वह किसी काम से इनकार करती तब बलराज उसे उसका वादा याद दिला देता। वह जानती थी कि उसका इनकार उसके जीवन की समाप्ति का संदेश ला सकता है। उसने भी पति से सदा के लिए छुटकारा पाने का निर्णय कर लिया था। वह अपनी आज़ादी का मूल्य चुकाने को तैयार थी।

इस बीच प्रताप ने भी उससे मिलने का प्रयत्न किया, किन्तु

उसने अपनी तबीयत खराब होने का बहाना बनाकर टाल दिया। बलराज के होते हुए वह कोई ऐसा कदम न उठाना चाहती थी, जिससे वह किसी परेशानी में पड़ जाए।

एक रात जब वह अपने पति की बगल में बैठी हुई उसे शराब पिला रही थी तब किसीने दरवाज़ा खटखटाया। इतनी रात गए कौन हो सकता है, यह सोचने में उसे देर न लगी। उसने पति की ओर देखा तो वह मुसकराकर बोला—"डर गयी गई! जाओ, दरवाज़ा खोलो।"

"शायद···।"

"प्रताप होगा'' तो क्या हुआ?" उसे अंदर ले आओ। मैं छिप जाता हूं।"

"लेकिन उसे पता लग गया कि तुम जीवित हो तो?"

"घबराओ नहीं। ऐसा नहीं होगा।"

माया कठपुतली की तरह दरवाज़े की ओर बढ़ गई। फिर पलटकर उसने भयभीत दृष्टि से पति की ओर देखा। बलराज अपना गिलास उठाए अंदर की ओर जा रहा था।

दरवाज़े पर बार-बार दस्तक हो रही थी। माया ने जल्दी से दरवाज़ा खोला तो तेज़ हवा के झोंकों के साथ प्रताप भी अंदर आ गया। तेज़ हवा से बचने के लिए उसने जल्दी से किवाड़ बंद कर दिए। फिर प्रताप ने माया को अपनी बांहों में दबोच लिया। किन्तु माया जल्दी से खिसककर अलग हो गई।

"अब कैसी तबियत है तुम्हारी?" कहते हुए प्रताप ने उसकी कलाई पकड़ ली।

"पहले से ठीक है। चार रोज़ से बुखार आ रहा था।"

"मैं तो डर गया था कि कहीं किसी दुश्मन की नज़र तो नहीं लग गई हमारे प्यार को!"

"कौन हो सकता है वह?"

"तुम्हारा दिल।"

"मेरा दिल ?"

"हां, औरत का दिल कभी भी बदल सकता है।"

"ओह !"

"आज से पहले तुमने कभी इतनी निर्दयता न दिखाई थी। सर्दी में चालीस मील का फासला तै करके आया हूं और तुम बैठने को भी नहीं कह रहीं !"

"मैं सोच रही थी कि तुमसे अन्दर आने को कहूंगी तो तुम कह दोगे कि मेरा दम घुटा जा रहा है। तुम्हें मेरे पति का भूत सताता है।"

"वह भय अब नहीं रहा।" कहता हुआ प्रताप लापरवाही से अन्दर आ गया।

"क्यों ?" माया ने कांपती दृष्टि से उस ओर देखा, जहां बलराज खड़ा हुआ उन्हें देख रहा था।

"माया, अब मुझे विश्वास हो गया है कि तुम्हारा पति मर चुका है।"

"वह कैसे ?"

"इस पत्र को देखकर।" उसने अपनी जेब से लिफाफा निकालते हुए कहा—"बीमा कम्पनी का पत्र, तुम्हारे लिए। अब तुम जब चाहो एक लाख रुपये की रकम वसूल कर सकती हो।"

माया यह सुनते ही उछल पड़ी। उसने ललचाई दृष्टि से लिफाफे की ओर देखा और छीनकर पत्र पढ़ने लगी। तभी उसे बलराज का ध्यान आ गया और वह कांप उठी। फिर उसने प्रताप की ओर देखा, जो गिलास में शराब उंड़ेल रहा था।

"और बोलो, क्या सेवा करूं अपनी सरकार की ?" वह गिलास हाथ में लिए माया के निकट आते हुए बोला।

"मेरे साथ चलोगे ?"

"कहां ?"

"कैमिस्ट की दुकान तक। एक दवा लानी है।"

"क्यों नहीं, मैं तैयार हूं।" उसने जल्दी से शराब कण्ठ में उंडेल ली।

"तो ठहरो। मैं प्रेसक्रिप्शन लाती हूं।" माया उसे वहीं छोड़कर अपने कमरे की ओर चली गई।

कमरे में पहुंचकर उसने जैसे ही अपना स्वेटर उठाया और जाने को घूमी, बलराज ने उसका रास्ता रोक लिया। माया ने मुसकराकर बीमा कम्पनी का पत्र उसके हवाले कर दिया। बलराज ने उसे अपनी ओर खींच लिया और बोला—"कहां जा रही हो?"

"दवा के बहाने उसे टालने।"

"लेकिन इस टालमटोल में तुमने उसे बता दिया कि मैं जीवित हूं तो···?"

"छोड़ो मुझे। क्या करना है या क्या कहना है, यह मैं खूब जानती हूं।" कहकर माया ने एक झटके से अपना हाथ छुड़ा लिया और शीघ्रता से बाहर चली आई।

बलराज की तेज निगाहों ने जब उसे प्रताप की बांहों में लिपटे देखा तो ईर्ष्या से वह जल उठा। किन्तु वह लाचार-सा उन्हें देखता रहा। दोनों कंधे से कंधा मिलाए बाहर चले गए।

दरवाज़ा बन्द होते ही उसके दिल को एक धक्का-सा लगा। अपनी पत्नी की बेशर्मी और अपनी लाचारी को अनुभव करते ही उसके जी में आया कि पिस्तौल से अपना जीवन समाप्त कर ले, लेकिन उंगलियों में नाचते उस पत्र को देखकर वह और सब कुछ भूल गया और उजाले में आकर उस पत्र को पढ़ने लगा।

पत्र पढ़ते-पढ़ते उसका दिल तेजी से धड़कने लगा। उसकी सांसों में जैसे एक तूफान आ बसा। वैसा ही तूफान बाहर वातावरण में भी थरथराहट उत्पन्न कर रहा था।

१३

आधी से अधिक व्यतीत हो चुकी थी, किन्तु नीलू की आंखों से
नींद कोसों दूर थी। वह बार-बार करवटें बदल रही थी। जब
प्रयत्न करने पर भी उसे नींद न आई तो वह खुली हवा में
स लेने के लिए कमरे से बाहर चली आई। बालकनी में छत से
टके झूले पर बैठकर वह अपनी उदासियों में खो गई।

उसकी आंखों में प्रकाश लौट आया था, किन्तु उसके जीवन क
अंधकार ज्यों का त्यों था। जैसे वह कभी कम न होने की कसम
चुका था। यह सोचते ही उसके हृदय में एक हूक-सी उठी। फिर
वह हवेली के आसपास फैले अंधेरे में कुछ देखने का प्रयास करने
लगी।

किन्तु अंधेरे की काली परतों में उसे कुछ भी दिखाई न दिया।
एक विचित्र-सा सन्नाटा छाया हुआ था। निस्तब्ध वातावरण में
हवा की सांय-सांय के अतिरिक्त कुछ भी सुनाई न दे रहा था। सारी
बस्ती नींद की गोद में जा चुकी थी, लेकिन नीलू से नींद जैसे रूठी
हुई थी। पलकें बोझिल हो रही थीं, लेकिन मस्तिष्क में तरह-तरह
के विचार आ-जा रहे थे। अतीत का अजगर वर्तमान को निगले जा
रहा था।

अचानक ही शाम की घटना उसे याद हो आई और वह परेशान
हो गई।

आरती के लिए जब वह रानी मां के साथ अन्दर गई थी त
उन्होंने बड़े प्यार से उसे अपने पास बिठाकर कहा था—"जान
है, नीलू, मेरा समीर तेरे बारे में क्या सोच रहा है?"

"क्या सोच रहे हैं कुंवरजी ?"

"तेरी आंखों का आपरेशन अगर यहां ठीक तरह से न हो सका तो वह तुझे विलायत ले जाएगा।"

नीलू यह सुनकर चुप रही, लेकिन नजरें उठाकर रानी मा की निगाहों को जांचने लगी। वह उसकी ओर बडी अर्थपूर्ण दृष्टि से देख रही थी। उन्होने नीलू की कंपकपाहट को अनुभव किया और कहा—

"जानती है, वह यह सब क्यों सोच रहा है ?"

"नहीं तो !" उसके होंठ कांपकर रह गए।

"एक पाप के प्रायश्चित्त के लिए।"

"कैसा पाप ?"

"जो बरसों पहले उसके पिता के हाथों हुआ था। एक दिन शिकार के समय उनकी जीप के नीचे एक मासूम लडकी आ गई। उसका जीवन तो बच गया, लेकिन वह हमेशा के लिए अंधी हो गई।"

"माजी···!" एक दबी-सी चीख उसके मुह से निकल गई।

"आज उसी नीलू के जीवन के अंधेरों को मिटाने के लिए समीर ने अपने जीवन को दीमक लगा ली है।"

नीलू ने रानी मा की ओर देखा। उनकी आंखो मे एक तडप थी, जो अपने बेटे के जीवन के लिए शोले की तरह पुतलियो मे लहरा रही थी।

"लेकिन नीलू, तेरे जीवन के ये अंधेरे कभी कम न होंगे···।" रानी मां ने तनिक रुककर कहा।

"हां, मांजी !" नीलू ने अपने हृदय की पीडा को छिपाते हुए कहा।

"एक बात पूछू तुझसे ?"

"पूछिए।"

"समीर की सहानुभूति को तूने कहीं प्यार तो नही समझ

...?"
"न...नहीं तो...।"
"तो तुझे एक त्याग करना होगा इस बूढ़ी मां के लिए...।"
"किस चीज का, मांजी ?"
"तू समीर के जीवन से दूर चली जा...मेरे लिए...जुगनू की खुशियों के लिए...वह इस कुल की होने वाली बहू है !"
यह सुनते ही नीलू के पैरों के नीचे से जैसे धरती सरक गई। अचानक ही जैसे उसकी आशाओं पर बिजली आ गिरी। उसे अनुभव हुआ जैसे क्षणमात्र उजाला भी उसके भाग्य में न हो। उसने देखा कि रानी मां की आंखों की तड़प आंसू बनकर उसकी पलकों में आ रुकी है। वह मां के दिल का दर्द और उसकी परेशानी पलभर में भांप गई। यह जानते हुए भी कि जुगनू उस हवेली का भविष्य है, त्याग करना उसके वश के बाहर था। फिर भी उसने अपनी भावनाओं पर नियंत्रण किया और बोली—"ठीक है, मांजी, ऐसा ही होगा।"
यह कहने के बाद वह उठ खड़ी हुई और अपने आंसुओं को पीते हुए आगे बोली—"मैं सुबह होते ही यहां से चली जाऊंगी...।"
"सुबह नहीं...।"
"तो अभी चली जाती हूं...।"
"नहीं, अभी नहीं।" रानी मां ने उसे समझाते हुए कहा—"तुझे उसके जीवन से धीरे-धीरे हटना होगा...।"
"लेकिन यह कैसे होगा ?"
"एक रास्ता है इसका...।"
"क्या ?"
"वह तेरी आंखों के आपरेशन की बात करे तो एक सा... देना...।"
"क्या ?"
"यही कि समीर और जुगनू के विवाह के बाद ही ...

आँखों का आपरेशन कराएगी।"

"अगर कुंवरजी न माने तो?"

"उसको मनाना मुश्किल न होगा।" रानी मां ने कहा—"अगर कोई मुश्किल है भी तो उसे तू आसान कर सकती है।"

यह सुनकर नीलू चुप रह गई। उसने रानी मा से बहस करना उचित न समझा। वह त्याग करना और समीर को मनाना कितना कठिन काम था, वह रानी मा को कैसे समझाती? फिर भी वह वादा कर बैठी। पीडा से उसका हृदय कराह उठा, किन्तु हवेली के सम्मान की बात सोचकर वह सब कुछ सह गई।

इस समय भी घाटी में हवा की साय-साय का स्वर गूंज रहा था। नीलू सोच नही पा रही थी कि करे तो क्या करे! कभी वह सोचती कि उसकी आंखों का प्रकाश न लौटता तो ठीक था। उस दशा मे रंगबिरंगे वातावरण की कल्पना ही से वह विभोर होती रहती। फिर वह लोगों के स्वार्थ के बारे में सोचकर झुंझला उठी। उसके मन में आया कि वह भी दुनिया वालों की तरह स्वार्थी हो जाए और अपने प्यार का यो बलिदान न करे। तभी उसे समीर के जीवन और हवेली के उपकारो का ध्यान आ गया और वह विद्रोह करने का साहस खो बैठी।

अभी वह इसी उलझन में खोई हुई थी कि अचानक सामने दृष्टि पड़ते ही वह चौंक उठी। बगीचे में फव्वारे के पास दो साए हिल-डुल रहे थे। नीलू ने दूसरे विचारों को मस्तिष्क से झटक दिया और उन सायों को गौर से देखने लगी। अब उसके मस्तिष्क में एक अव्यक्त भय समाने लगा। उसे लगा जैसे जुगनू और समीर हवेली के अंधकार में जीवन की उलझनों को सुलझा रहे हैं। तभी सिगरेट की चिनगारी ने उनको तनिक और स्पष्ट कर दिया।

अचानक नीलू ने कुछ सोचा और छिपती हुई बगीचे के उस भाग तक जा पहुंची। आज वह अपने कानों से सब कुछ सुन लेना

चाहती थी। अपने प्यार का बलिदान करने से पहले वह उनकी भावनाओं को जान लेना चाहती थी। कहीं ऐसा तो नहीं कि समीर सचमुच उसके साथ केवल सहानुभूति ही रखता हो। अपने पिता के पाप का प्रायश्चित्त ही करना चाहता हो और इससे अधिक उसके साथ कोई सम्बन्ध न रखना चाहता हो। यह सोच-सोचकर उसका हृदय कांपने लगा।

किन्तु वहां जुगनू के साथ समीर नहीं, बल्कि प्रताप था। यह देखकर नीलू वहीं बर्फ हो गई। फिर अचानक ही उसके दिल का बोझ हल्का हो गया। किन्तु इतनी रात गए हवेली की होने वाली बहू प्रताप के साथ क्यों? बार-बार यह प्रश्न उसके मस्तिष्क को मथने लगा। वह उनकी बातें सुनने के लिए वहीं अंगूरों की बेल की ओट में खड़ी हो गई।

"इसमें डरने की क्या बात है?" प्रताप ने कहा।

"यह पाप है। किसीको पता चल गया तो?"

"अपने प्यार को पाने के लिए आदमी बड़े से बड़ा पाप करने के लिए तैयार हो जाता है, क्योंकि प्यार मिल जाने पर वही पाप पुण्य में बदल जाता है। थोड़ी-सी देर की ही तो बात है। जैसे ही यह सरकारी लिफाफा तुमने मुझे दिया वैसे ही तुम्हारा प्यार तुम्हारे कदमों में होगा।" प्रताप ने उसे उकसाया।

"किन्तु नीलू को समीर से अलग करना इतना आसान न होगा।"

"रास्ता मैं जानता हूं।"

"क्या?"

"नीलू का विवाह, एक पहाड़ी लड़के के साथ···।"

"यह संभव नहीं।"

"संभव मैं बनाऊंगा।"

"कैसे?" जुगनू ने प्रताप की ओर देखा तो वह मुसकरा दिया।

फिर प्रताप ने अपनी सिगरेट पेड़ के तने से बुझा दी और जुगनू के कानों में फुसफुसाया—"नीलू का विवाह हो चुका है···

बचपन में। उनके पति ने उसे अंधी देखकर ठुकरा दिया, किन्तु मैंने अब उसे धन देकर खरीद लिया है। कल ही वह उसे लेने आ जाएगा।"

"सच?"

"मैं झूठ नहीं बोलता।"

तभी अंगूरों की बेल के पीछे खड़खड़ाहट हुई और दोनों कांप उठे। उन्होंने अंधेरे में झांकने का प्रयत्न किया और फिर एक-दूसरे की ओर देखा। वातावरण में पहले जैसा सन्नाटा छा गया। प्रताप ने जेब से दूसरी सिगरेट निकाली और बोला—"घबराओ नहीं, कोई जानवर होगा।"

जुगनू ने उसे वहीं खड़े रहने के लिए कहा और हवेली की ओर चल दी। प्रताप ने सिगरेट को सुलगाते हुए जुगनू की ओर देखा और अपनी सफलता पर मुसकरा दिया।

जुगनू ने पिछवाड़े का दरवाजा खोला और सीधी रानी मां के कमरे में घुस गई। रानी मां गहरी नींद में थीं। फिर भी जुगनू ने अपने दिल की तसल्ली के लिए मेज को घसीटा। जब इस आहट का भी रानी मां की नींद पर कोई प्रभाव न हुआ तो उसे विश्वास हो गया कि उनकी नींद कच्ची नहीं।

फिर वह दबे पांव उनके निकट जा पहुंची। कमरे में हल्की-हल्की रोशनी थी। जुगनू ने रुककर रानी मां के चेहरे को गौर से देखा और जब उन्होंने कोई हरकत न की तो उसने हाथ बढ़ाकर तकिए के नीचे से चाबियों का गुच्छा खींच लिया। गुच्छे में से सेफ की चाभी निकालते समय पलभर के लिए उसके हाथ कांपे, किन्तु वह जल्दी ही संभल गई। सेफ की चाभी निकालकर उसने गुच्छे को तकिए के नीचे सरका दिया और तेजी से स्टोर की ओर बढ़ गई।

सेफ के पास पहुंचकर जुगनू ने अनुभव किया कि वह सिर से लेकर पांव तक कांप रही है और उसका दिल तेजी से धड़क रहा है। यह पाप करते हुए उसके हाथ रुकने लगे, किन्तु खोए हुए

पाने के लालच में वह अंधी हो गई। उसने दिल को कड़ा
और चाभी लगाकर सेफ को खोल डाला।
सामने ही हीरे-जवाहरात रखे थे। तभी जुगनू की दृष्टि बादामी
सरकारी लिफाफे पर पड़ी, जिसे चुराने के लिए प्रताप ने कहा
। आज वह अपना संसार सुखी बनाने के लिए अपने देवता के
र में हलचल मचाने वाली थी।

उसने शीघ्रता से वह लिफाफा बाहर निकाल लिया और सेफ
बन्द करने लगी। अभी उसने चाभी को घुमाया ही था कि किसी
ाहट को सुनकर उसके हाथ कांप गए और चाभी नीचे जा गिरी
उसने पलटकर देखा तो सामने नीलू खड़ी थी।

उसे देखते ही जुगनू के मुह से चीख निकलते-निकलते रह गई।

जुगनू का पीछा करते हुए नीलू वहां तक आ पहुंची थी। सामने
अंधी नीलू खड़ी थी, किन्तु जुगनू को अनुभव हो रहा था कि उसने
उसे चोरी करते हुए पकड़ लिया है। उसमें इतना साहस न था कि
वह फर्श पर गिरी चाभी को भी उठा ले।

"नीलू तुम ?" लिफाफे को अपनी बगल में छिपाते हुए जुगनू
ने फुसफुसाकर कहा।

"जुगनू···तुम हो !" नीलू ने बनावटी आश्चर्य प्रकट करते हुए
दबे स्वर में कहा और जब जुगनू कुछ न बोली तब वह उसके निकट
चली गई—"मैं तो डर गई थी।" उसने आगे कहा—"मुझे लगा
कि हवेली में चोर घुस आया है। आहट सुनकर मैं यहां तक चली
आई।"

"और, चोर पकड़ लिया !" जुगनू ने इत्मीनान की सांस ले
हुए होंठों पर जबर्दस्ती मुस्कराहट बिखेर ली। नीलू अब भी उस
चेहरे पर निगाहें जमाए उसके हृदय में उठ रहे ज्वार-भाटे
भांपने का प्रयास कर रही थी। जुगनू अपनी घबराहट को छि
का प्रयत्न कर रही थी, ठीक उस चोर की भांति, जो चोरी क
पकड़ लिया गया हो। लेकिन जुगनू को पूरा विश्वास था कि उ

चोरी पकड़ी नहीं जाएगी। नीलू को तो कुछ दिखाई देता ही नहीं।
इससे पहले कि नीलू कुछ और पूछती, वह स्वयं ही कह उठी—"डैडी की तबीयत अचानक ही खराब हो गई है। उनके लिए अमृत-धारा लेने चली आई थी···।"
"तो जल्दी जाओ···कहीं···।"
"यही मैं सोच रही थी।" जुगनू ने तुरन्त कहा और उसी बौखलाहट में फर्श पर गिरी चाभी को टटोलकर खोजने लगी। किन्तु जब चाभी न मिली तब वह शीघ्रता से खड़ी हुई और कमरे से बाहर निकल गई।
नीलू उसकी बौखलाहट को अच्छी तरह पहचान रही थी। फिर भी वह चुप थी। वह सोच नहीं पा रही थी कि आज जुगनू ने हवेली का कौन-सा नगीना चुराया है। वह कौन-सी वस्तु है, जिस पर दुश्मन की नज़र है। उसने सोचा कि वह तुरन्त रानी मां को जगा दे और इस बात की सूचना देकर चोरी जाती हुई वस्तु को बचा ले। साथ ही साथ हवेली की होने वाली बहू की काली करतूत उनके सामने रख दे, किन्तु वह ऐसा न कर सकी।
वह इसी उलझन में बाहर जाने लगी तो उसके पैरों में कोई चीज़ टकराई। नीलू ने झुककर पैरों के पास पड़ी चाभी को उठा लिया और कमरे से बाहर निकल गई।
जब वह अपने कमरे की ओर जा रही थी तब बाहर के अंधेरे को चीरती हुई उसकी दृष्टि बगीचे के उस भाग की ओर उठी, जहां कुछ देर पहले प्रताप खड़ा जुगनू की राह देख रहा था। अब शायद वह जा चुका था और जुगनू चुपके-चुपके हवेली की ओर लौट रही थी। जुगनू अपने प्यार को पाने के चक्कर में अपने कर्तव्य और आदर्श को भुला बैठी थी। किन्तु नीलू अभी तक यह नहीं सोच पाई थी कि जुगनू प्रताप को क्या देने गई थी।
अपनी सफलता के नशे में जुगनू चाभी को खोजकर गुच्छे में मिलाना भी भूल गई। वह इत्मीनान से अपने कमरे में

...ी जलाने के लिए जैसे ही उसने हाथ बढ़ाया वैसे ही उसका
...क गया। उजाले का सामना करने का साहस वह शायद खो बैठी
उसने गले में लिपटे दुपट्टे को खींचकर एक ओर फेंक दिया
बिस्तर पर लेट गई। उसकी आंखों से नींद उड़ चुकी थी।
अपने कमरे की ऊंची छत को टकटकी बांधे देखने लगी, जैसे
की ऊंचाई में छिपा उसका भविष्य झांक रहा हो !

सवेरा होते ही हवेली में एक विचित्र शोर मच गया। चाभियों
गुच्छे में से सेफ की चाभी गायब थी। रानी मां सभी नौकरों से
...छ-पूछकर थक गई, किन्तु चाभी का कुछ पता न चल रहा था।
दीवान साहब सोच रहे थे कि अवश्य ही इसमें कोई भेद होगा। समीर
अलग परेशान था। वे बार-बार रानी मां से प्रश्न कर रहे थे। इस
शोर को सुनकर जुगनू भी वहां आ पहुंची। वह भी बच्चों की तरह
चाभी के बारे में पूछताछ करने लगी। घर के पुराने नौकर कसमें
खाए जा रहे थे, किन्तु रानी मां किसीपर भी भरोसा करने को
तैयार न थीं। जुगनू का हृदय कांप रहा था, पर वह बड़ी समझ-
दारी से काम ले रही थी। बार-बार उसकी दृष्टि कालीन को छूकर
लौट आती। फिर वह इधर-उधर देखती, किन्तु उसे कहीं भी चाभी
दिखाई न दे रही थी। इससे जुगनू की परेशानी धीरे-धीरे बढ़ती
जा रही थी।

पूछताछ के इस अवसर पर हवेली का हर आदमी वहां उपस्थित
था। लेकिन नीलू वहां न थी। यह सोचते ही जुगनू को एक धक्का-
सा लगा। वह सिर से पांव तक कांप गई।

तभी दीवान साहब ने रानी मां से पूछा—"नीलू कहां है ?"

"मन्दिर में पूजा की तैयारी कर रही है।"

"पूजा की...कहीं इसमें उसका तो हाथ नहीं ?" दीवान सा...
ने संदेह प्रकट किया।

"नहीं दीवानजी, सेफ की चाभी लेकर वह क्या करेगी..."
समीर ने तुरन्त उनकी बात काट दी।

"लेकिन बाहर का तो कोई भी आदमी इस कमरे में आता-जाता नहीं।"

"बाहर का तो नहीं, लेकिन हम सब तो आते-जाते हैं···।"

"लेकिन बात तो चोरी की है···।"

"चोरी अगर वह अंधी अनाथ कर सकती है तो हममें से भी तो कोई चोर हो सकता है!"

तभी कमरे में सन्नाटा छा गया। हर किसीकी दृष्टि दरवाज़े की चौखट पर खड़ी नीलू पर जा अटकी। वह वहां खडी उनकी बातें सुन रही थी। वह किवाडों का सहारा लिए खडी थी और शायद अंदर आने में हिचकिचा रही थी। जुगनू तो उसे देखते ही भयभीत हो गई। उसके शरीर से पसीना फूट पड़ा और वह यह सोचकर बदहवास हो गई कि कहीं वह उसका भेद न खोल दे। इस बीच वह अपनी जगह नीलू को ही चोर सिद्ध करने की बातें सोचने लगी।

"मांजी, इसी चाभी को खोजा जा रहा है ना?" नीलू ने चाभी को आगे बढ़ाते हुए वातावरण की निस्तब्धता को भंग कर दिया।

"हां।" रानी मां ने आगे बढ़कर चाभी को लपक लिया और पूछा—"तुझे कहां मिली?"

दीवान साहब और समीर भी उसके निकट आ गए। जुगनू ने डरते-डरते नीलू से दृष्टि मिलाई; इस समय अंधी नीलू से भी उसे डर लग रहा था। किन्तु नीलू चुप रही।

"तुझे कहां मिली यह चाभी?" रानी मा ने दुबारा पूछा।

"इसी कमरे में।" नीलू ने बताया—"आधी रात को मैं इस कमरे में आई तो यह मेरे पैरों से टकरा गई। मैंने उठाकर रख ली।"

"लेकिन तू कर क्या रही थी यहां? वह भी आधी रात को ?"

दीवान साहब ने तेज़ स्वर में पूछा।

"एक चोर का पीछा···।" नीलू ने कांपते स्वर में कहा।

"चोर···!" समीर ने इस शब्द को दोहराया और दूसरे ही पल नीलू के सामने आ गया—"यह तुम क्या कह रही हो?"

और वत्ती जलाने के लिए जैसे ही उसने हाथ वढ़ाया वैसे ही उसका हाथ रुक गया। उजाले का सामना करने का साहस वह शायद खो वैठी थी। उसने गले में लिपटे दुपट्टे को खींचकर एक ओर फेंक दिया ओर विस्तर पर लेट गई। उसकी आंखों से नींद उड़ चुकी थी। वह अपने कमरे की ऊंची छत को टकटकी वांधे देखने लगी, जैसे छत की ऊंचाई में छिपा उसका भविष्य झांक रहा हो!

सवेरा होते ही हवेली में एक विचित्र शोर मच गया। चाभियों के गुच्छे में से सेफ की चाभी गायव थी। रानी मां सभी नौकरों से पूछ-पूछकर थक गई, किन्तु चाभी का कुछ पता न चल रहा था। दीवान साहव सोच रहे थे कि अवश्य ही इसमें कोई भेद होगा। समीर अलग परेशान था। वे वार-वार रानी मां से प्रश्न कर रहे थे। इस शोर को सुनकर जुगनू भी वहां आ पहुंची। वह भी वच्चों की तरह चाभी के वारे में पूछताछ करने लगी। घर के पुराने नौकर कसमें खाए जा रहे थे, किन्तु रानी मां किसीपर भी भरोसा करने को तैयार न थीं। जुगनू का हृदय कांप रहा था, पर वह वड़ी समझदारी से काम ले रही थी। वार-वार उसकी दृष्टि कालीन को छूकर लौट आती। फिर वह इधर-उधर देखती, किन्तु उसे कहीं भी चाभी दिखाई न दे रही थी। इससे जुगनू की परेशानी धीरे-धीरे वढ़ती जा रही थी।

पूछताछ के इस अवसर पर हवेली का हर आदमी वहां उपस्थित था। लेकिन नीलू वहां न थी। यह सोचते ही जुगनू को एक धक्का-सा लगा। वह सिर से पांव तक कांप गई।

तभी दीवान साहव ने रानी मां से पूछा—"नीलू कहां है?"

"मन्दिर में पूजा की तैयारी कर रही है।"

"पूजा की···कहीं इसमें उसका तो हाथ नहीं?" दीवान साहव ने संदेह प्रकट किया।

"नहीं दीवानजी, सेफ की चाभी लेकर वह क्या करेगी!" समीर ने तुरन्त उनकी वात काट दी।

"लेकिन बाहर का तो कोई भी आदमी इस कमरे में आता-जाता नहीं।"

"बाहर का तो नहीं, लेकिन हम सब तो आते-जाते हैं…।"

"लेकिन बात तो चोरी की है…।"

"चोरी अगर वह अंधी अनाथ कर सकती है तो हममें से भी तो कोई चोर हो सकता है!"

तभी कमरे में सन्नाटा छा गया। हर किसीकी दृष्टि दरवाज़े की चौखट पर खड़ी नीलू पर जा अटकी। वह वहां खड़ी उनकी बातें सुन रही थी। वह किवाड़ों का सहारा लिए खड़ी थी और शायद अंदर आने में हिचकिचा रही थी। जुगनू तो उसे देखते ही भयभीत हो गई। उसके शरीर से पसीना फूट पड़ा और वह यह सोचकर बदहवास हो गई कि कहीं वह उसका भेद न खोल दे। इस बीच वह अपनी जगह नीलू को ही चोर सिद्ध करने की बातें सोचने लगी।

"मांजी, इसी चाभी को खोजा जा रहा है ना?" नीलू ने चाभी को आगे बढ़ाते हुए वातावरण की निस्तब्धता को भंग कर दिया।

"हां।" रानी मां ने आगे बढ़कर चाभी को लपक लिया और पूछा—"तुझे कहां मिली?"

दीवान साहब और समीर भी उसके निकट आ गए। जुगनू ने डरते-डरते नीलू से दृष्टि मिलाई। इस समय अंधी नीलू से भी उसे डर लग रहा था। किन्तु नीलू चुप रही।

"तुझे कहां मिली यह चाभी?" रानी मां ने दुबारा पूछा।

"इसी कमरे में।" नीलू ने बताया—"आधी रात को मैं इस कमरे में आई तो यह मेरे पैरों से टकरा गई। मैंने उठाकर रख ली।"

"लेकिन तू कर क्या रही थी यहां? वह भी आधी रात को…?" दीवान साहब ने तेज स्वर में पूछा।

"एक चोर का पीछा…।" नीलू ने कांपते स्वर में कहा।

"चोर…!" समीर ने इस शब्द को दोहराया और दूसरे ही पल नीलू के सामने आ गया—"यह तुम क्या कह रही हो?"

"वह सच, जो मैं अंधी होने के कारण न देख सकी।"

"तुमने यह कैसे जाना कि इस कमरे में आने वाला चोर था?"

"आहट से।" नीलू ने बताया—"आधी रात बीते मैंने इस कमरे में आहट सुनी। फिर मैं यहां तक चली आई। मुझे लगा कि रानी मां का सेफ खोलकर कोई कुछ निकाल रहा है...।" वह रुक-रुककर बोली।

"फिर?"

"चोर जब सेफ को बन्द कर रहा था तब शायद मेरे पैरों की आहट सुनकर वह घबरा गया। उसके हाथों से चाभी फर्श पर गिर गई। वह उसे खोजने के लिए शायद झुका भी, लेकिन मेरी उपस्थिति के कारण भाग निकला।"

"तुमने चिल्लाकर किसीको जगाया क्यों नहीं?"

"इस डर से कि कहीं वह मुझपर हमला न कर दे।"

"तुम्हें विश्वास है, नीलू, वह कोई चोर ही था?" समीर ने पूछा।

"हां, समीर बाबू! अगर वह चोर न होता तो आधी रात को इस कमरे में क्यों आता?"

और लम्बी बहस में न पड़कर दीवान साहब ने सेफ का सामान जांचने के लिए कहा। हर कोई अब यह जानने के लिए उत्सुक था कि रानी मां की सेफ से क्या चोरी हुआ है!

रानी मां आगे बढ़ीं तो कमरे में सन्नाटा छा गया। जुगनू को यह सन्नाटा तूफान से पहले का क्षण प्रतीत हुआ। रानी मां ने सेफ खोलकर देखा तो वहां हर चीज़ ज्यों की त्यों रखी हुई थी। चीज़ों को जांचने में दीवान साहब ने हाथ बंटाया। तभी वह उस लिफाफे को न पाकर बौखला गए।

"रानी मां!" वह बोले।

"क्या हुआ दीवानजी?"

"यहां जो सरकारी लिफाफा रखा था, वह नहीं है।"

क घबरा रही थी। हर किसीकी चुप्पी ने उसके हृदय को एक व्यक्त भय से हिला दिया था।

नौकरों के जाने पर समीर ने कुछ पूछना चाहा तो दीवान साहब ने कहा—"मैं जान गया हूं कि यह काम किसका है।"

"किसका है?"

"प्रताप का···।"

"प्रताप···।"

"हां, प्रताप।"

प्रताप का नाम सुनते ही जुगनू एक बार फिर कांप उठी। तभी दीवान साहब ने बताया कि उस लिफाफे में बैंकों की पासबुकें हैं—उन विदेशी बैंकों की, जिनमें समीर के पिता ने बहुत-सा धन जमा किया था। यह जानकर रानी मां और समीर को एक धक्का-सा लगा। जुगनू भी यह सुनकर घबरा गई और चुपके से बाहर खिसक गई।

"लेकिन आपने तो कभी पहले यह बताया नहीं?" समीर ने कहा—"यदि वे कागज़ इतने कीमती थे तो उन्हें कहीं और रखना चाहिए था।"

"मैं किसी उचित अवसर की राह देख रहा था।" दीवान साहब ने कहा—"वह धन किताबों के बाहर था। इसीलिए कहने से डरता रहा कि बात खुल न जाए।"

"कितना होगा वह धन?"

"यही कोई चौदह-पंद्रह लाख।"

"आपको विश्वास है कि यह काम प्रताप का ही हो सकता है?"

"हां, कुंवरजी।" दीवान साहब ने धीरे से कहा—"इस बारे में और किसीको जानकारी नहीं। मुकदमेबाज़ी के दिनों इन कागज़ों को पाने के लिए प्रताप ने मुझे एक लाख रुपये का लालच भी दिया था।"

"लेकिन प्रताप के कदमों की आहट तो नीलू पहचानती है···

"वह कैसे ?"

समीर तुरन्त ही इस प्रश्न का उत्तर न दे सका। अभी वह सोच ही रहा था कि क्या उत्तर दे कि रानी मां कह उठीं—"तो जरूर उसने ये कागज़ किसीसे उड़वाए होंगे। अच्छा यह होगा कि इसकी रिपोर्ट पुलिस में कर दी जाए।"

"लेकिन रानी मा, एक मुसीबत से निकलकर हम दूसरी मुसीबत में पड़ जाएंगे। आप तो समझती हैं कि यह धन•••।"

"काले बाजार का है•••बस।" समीर ने दीवान साहब की बात काट दी और फिर दोनों को गहरी दृष्टि से देखते हुए बोला—"मुझे उस धन से कोई लगाव नहीं। चोर के स्थान पर सारा धन सरकार ले ले तो मुझे खुशी होगी।"

"यह तुम क्या कह रहे हो, बेटे! यह तो तुम्हारे पिता के परिश्रम का फल है•••।"

"जानता हूं मा, लेकिन उसका लाभ मैं उठाऊं•••शायद यह मेरे भाग्य में नहीं।" यह कहकर समीर ने रानी मा का मुह बन्द कर दिया। हर कोई चुपचाप एक-दूसरे को देखता रह गया। जुगनू अभी तक उनकी बातों को बाहर खड़ी-खड़ी सुन रही थी। उसे फिर अपना प्यार और भविष्य अंधकारमय दिखाई देने लगा।

१४

दिनभर कोहरा छाया रहा। पूरी वादी में वादल उमड़ते-घुड़मते रहे। हवा के तेज़ झोंके जब वादलों को चीरते हुए निकलते तब एक हल्की-सी सनसनाहट वातावरण में गूंजकर रह जाती···

एक ऐसी ही सनसनाहट नीलू के मस्तिष्क के तारों को झंझोड़ रही थी। वह न जाने कब से मन्दिर में अपने वालगोपाल के सामने वैठी अपने जीवन के वारे में सोच रही थी। उसके हृदय और मस्तिष्क के वीच एक द्वन्द्व छिड़ा हुआ था। जब कभी उसके हृदय का पलड़ा भारी हो जाता तब उसका मस्तिष्क उसकी भावनाओं को विखेर देता और उसे उस हवेली के उपकार याद आ जाते, जहां वह अब तक सुरक्षित रही थी। भावनाओं के इसी भंवर में वह चुप वैठी रही और वाहर जाने का साहस न कर सकी।

तभी एक आहट ने उसके विचारो की शृंखला तोड़ दी, किन्तु वह अपने स्थान से हिली नहीं। वह आने वाले को पहचान गई थी, फिर भी चुप रहना चाहती थी।

जुगनू उसकी ओर धीरे-धीरे वढ़ी आ रही थी। फिर अचानक ही वह थोड़ी दूरी पर रुक गई।

"आओ जुगनू, रुक क्यों गई?" जुगनू के रुकते ही नीलू कह उठी।

"मैं यह जानना चाहती थी कि तुम मेरी आहट को पहचानती हो या नहीं?" जुगनू वोली।

"वह तो पहचान गई।" नीलू ने पलटकर जुगनू की ओर देखा।

उसने जुगनू की कपकपाहट को भांप लिया और कहा—"मैं तो तुम्हारे मन मे छिपी बात भी जानती हूं।"

"वह क्या ?" कहते हुए जुगनू के होठ थरथरा उठे।

"तुम यह जानने के लिए आई हो कि मैंने चोर की आहट को क्यों नही पहचाना !"

"यानी तुम कहना चाहती हो कि चोरी मैंने की है···?"

"कोई सदेह है इसमे ?"

"ठीक है, चोरी मैंने की है···जाकर कह दो रानी मां से।" जुगनू ने भुंझलाकर कहा—"जाओ, अभी बता दो उनको।"

नीलू ने देखा कि जुगनू के चेहरे को भय की छाया ने घेर लिया है। जुगनू जानती थी कि नीलू अधी है, फिर भी वह उसकी दृष्टि का मामना न कर सकी और मुंह फेरकर खड़ी हो गई।

"कहना होता तो तभी कह देती···।"

"तो अब मुझे क्यो बता रही हो ?"

"*किसीको न बताने की कीमत-मांगना* चाहती हूं तुमसे।"

"मैं जानती हूं कि तुम क्या मागोगी ··।"

"अच्छा बताओ···।"

"मेरा प्यार···समीर···।"

"नहीं जुगनू, नही ··।" नीलू ने कहा—"मैं तो तुमसे केवल एक वचन चाहती हूं, जो तुम्हारे और कुवरजी के प्यार को सीचता रहेगा।"

"कैसा वचन ?" जुगनू आश्चर्यचकित-सी बोली।

"मुझे गलत मत समझो, जुगनू ! वचन दो कि इस हवेली की आन पर कभी कलक न लगाओगी।"

"मैंने कोई कलक नही लगाया···।"

"तो जाओ, उस लिफाफे को ले आओ।" नीलू ने सुझाव रखा—"मामला पुलिस तक पहुच गया तो सब गडबड हो जाएगा। प्रताप भी शायद अभी तक न गया हो···।"

जुगनू उसकी बात सुनकर स्तब्ध रह गई और पथराई दृष्टि से नीलू की ओर देखने लगी। फिर वह उसके बिल्कुल पास चली गई और संशयपूर्ण स्वर में बोली :

"नीलू, कहीं तुम्हें दिखाई तो नहीं देने लगा?"

"क्यों अंधी से मजाक करती हो!"

"फिर तुम्हें कैसे पता चला कि लिफाफा प्रताप ले गया है?"

"आहट से।"

"लेकिन तुमने तो कभी प्रताप को देखा नहीं···।"

"देखा है···उस दिन डाकबंगले में कुंवरजी ने मुझे प्रताप के ही पंजे से छुड़ाया था।"

"ओह! तो वह प्रताप था···लेकिन समीर ने मुझे क्यों नहीं बताया?"

"अपने खानदान के सम्मान की रक्षा के लिए न बताया होगा।"

"मुझसे भूल हो गई नीलू। कहीं ऐसा न हो कि वह दगाबाज़ अपने-आपको बचा ले और मुझे कानून के फंदे में फंसा दे।" जुगनू घबराकर बोली—"जानती हो, उसने मुझसे क्या कहा था? उसने कहा था कि बचपन में तुम्हारा विवाह हो चुका है।"

"हां, यह झूठ नहीं।"

"तो क्या···!"

"वह यह तो जानता है कि बचपन में मेरा विवाह हुआ था और मेरे पति ने मेरी आंखों का प्रकाश जाते ही मेरा गौना कराने से इनकार कर दिया था, लेकिन वह यह नहीं जानता कि अब वह इस संसार में नहीं है।"

"यानी वह मर गया?"

"हां, आठ साल पहले···और मैंने तो उसकी सूरत भी नहीं देखी···।"

"अब क्या होगा नीलू?"

"क्या बात है बेटी ?"

"कुछ पता चला ?"

"नहीं। पांव के निशान कोहरे के कारण धुंधले हो गए। उनसे ह पहचानना कठिन है कि वहां कौन आया था ?"

"पुलिस का क्या विचार है ?"

"पुलिस को सबूत चाहिए···यों शक में प्रताप का नाम लिखवा दिया है। लेकिन पता चला है कि वह पिछले तीन दिनों से शहर में हीं है।"

"डैडी···!" वह कांपते स्वर में कुछ कहते-कहते रुक गई।

"कहो ना, क्या कहना चाहती हो ?"

"क्या ऐसा नहीं हो सकता कि पुलिस प्रताप के यहां न जाए ?"

"क्यों ?"

"इसलिए कि यह चोरी उसीने की है।"

"तुम्हें कैसे पता ?" दीवान साहब ने एकदम पूछा।

"क्योंकि इस चोरी में मैंने उसका साथ दिया है···।"

यह सुनते ही दीवान साहब आगबबूला हो उठे। अपनी बेटी से उन्हें ऐसी आशा न थी कि वह स्वयं ही अपने भविष्य को बिगाड़ लेगी। वह थोड़ी देर तक अपनी नादान बेटी की ओर देखते रहे और क्रोध पर काबू पाने का प्रयास करते रहे, किन्तु जब काबू न पा सके तो आगे बढ़कर उन्होंने जुगनू के गाल पर कसकर एक तमाचा जड़ दिया।

वह वहीं जड़वत् खड़ी रह गई और अपने पिता की ओर पथराई दृष्टि से देखने लगी। आज पहली बार उन्होंने उसपर हाथ उठाया था। फिर जब वह और अधिक उनका सामना न कर सकी तो अपने कमरे की ओर भाग गई।

जुगनू की बात सुनकर दीवान साहब बेहद परेशान हो उठे थे। परेशानी के साथ-साथ उन्हें यह भय भी सताने लगा कि प्रताप के पकड़े जाने पर उनकी बेटी की भी बदनामी होगी और इससे उनकी

हस्ताक्षर और उन हस्ताक्षरों को देखकर स्वयं ही चक्कर खा गया और सोचने लगा कि किसे असली समझे और किसे नकली ? वह अपनी इस सफलता पर मन ही मन मुसकरा उठा। सामने रखी बोतल से उसने एक जाम और बनाया और धीरे-धीरे पीने लगा।

तभी दरवाज़े के बाहर कोई आहट हुई तो वह चौंक उठा। उसने बैंक के कागज़ों को जल्दी से खुले सूटकेस में छिपा दिया और फिर पलटकर दरवाज़े की ओर देखने लगा। कोई वहां आकर चोरों की तरह रुक गया था। प्रताप ने जेब में रखी पिस्तौल को उंगलियों से टटोला और एक ही घूंट में जाम को खाली कर दिया।

फिर वह दरवाज़े के निकट जा पहुंचा और शीशे की धुंधली सतह पर पड़ रहे प्रतिबिम्ब को पहचानने का प्रयत्न करने लगा। तभी आने वाले ने दरवाज़े को खटखटाया। प्रताप अपने स्थान पर संभल गया और 'की-होल' में से बाहर झांकने लगा। वह वहां माया को देखकर चौंक पड़ा और कुछ सोचकर उसने तुरन्त दरवाज़ा खोल दिया। दरवाज़ा खुलते ही माया एकदम अन्दर आ गई और अन्दर आते ही उसने दरवाज़ा बन्द कर दिया। माया सर्दी से कांप रही थी और उसके हाथ में एक अटैची थी। प्रताप ने उसकी कंपकंपी और घबराहट को लक्ष्य किया और पूछा—"इतनी रात गए··· अचानक···?"

"तुमसे मिलने आई हूं।"

"चलो, अन्दर चलो।" कहते हुए प्रताप ने उसकी अटैची को एक ओर रख दिया। माया ने आगे बढ़कर शराब की बोतल को थाम लिया और जल्दी से एक जाम बना डाला। इससे पूर्व कि प्रताप उससे कोई और प्रश्न पूछता, वह जाम को एक ही घूंट में गटागट पी गई।

फिर जैसे ही उसकी दृष्टि प्रताप के बंधे हुए सामान पर पड़ी, वह पूछ उठी—"कहीं जा रहे हो क्या ?" उसके स्वर में आश्चर्य का पुट था।

"तुम्हारा अनुमान ग़लत नहीं, डार्लिंग।"

"कहां?"

"जहा के सपने तुम हमेशा देखती आई हो।"

"लन्दन···?"

"हा।"

"लेकिन तुमने तो वचन दिया था कि हम एकसाथ चलेंगे···।"

"वचन निभाने को तो मैं अब भी तैयार हूं।" प्रताप ने मुसकराकर कहा—"चलो, सुबह के जहाज से···।"

"लेकिन···।"

"लेकिन-वेकिन कुछ नहीं। जब मैं धीरज से काम लेने की बात कहता था तब तुमने नाक में दम कर रखा था, और अब मैं जाने का निर्णय कर चुका हूं तो तुम टालमटोल कर रही हो।" कहकर प्रताप तनिक रुका, फिर बोला—"देखो, माया डीयर, मैं तो रुक नही सकता। फिर न कहना कि मैंने साथ नही दिया···।"

"मैं मजबूर हूं, प्रताप···।"

"मजबूरी यही है ना कि अभी तक मकान का सौदा नही हुआ, बीमे की रकम मिलने मे देर है और···मेरी बात मानो जो माल जिस दाम मे बिके, बेच दो और मेरे साथ चल दो। प्यार मे व्यापार नही किया करते। एक-दो दिन बेरुत में मैं तुम्हारी राह देख सकता हूं।"

"मैं तुम्हारे साथ ही चलूगी···।"

"वह बीमे की रकम?"

"मैंने वसूल कर ली है।"

"वडरफुल! फिर इन्तज़ार किसका है?"

"तुम्हारी बाहों के सहारे का···।"

"लो, हाजिर है।" कहते हुए प्रताप उसकी ओर बढा।

"लेकिन हमें एक काम करना होगा।"

"क्या?"

"यह रात हमें किसी होटल में काटनी होगी।"

"क्यों?"

"ताकि कोई यह न जान पाए कि हम कहां हैं। फिर सुबह होते ही हम भारत छोड़ देंगे।"

"तुम्हें किसीका डर है, माया?"

"हां, मुझे अपने पति से डर लगता है।" कहते हुए उसके होंठ थरथरा उठे।

"तुम्हारा मतलब है···बलराज!" वह चौंक उठा। सहसा ही वह उसकी बात पर विश्वास न कर सका और उसकी ओर घूरकर देखने लगा।

"वह जीवित है।" माया ने उस मौन को भंग किया।

"लेकिन वह तो···!"

"वह उस जहाज़ में नहीं था, जो दुर्घटना का शिकार हुआ।"

"ओह! तो क्या वह तुम्हारे इरादों को जानता है?"

"हां। उसने तुम्हारे साथ जाने की आज्ञा भी दे दी है; लेकिन एक शर्त पर···।"

"क्या है वह शर्त?"

"सारा धन उसके हवाले करना होगा।"

"धन कहां है?"

"मकान को छोड़कर बाकी सब मैं कैश कर चुकी हूं और धन लन्दन भिजवा दिया है।"

"यू आर रीअली स्मार्ट!" प्रताप ने अपने होंठों पर भद्दी मुस्कराहट बिखेरते हुए माया के गाल पर चुटकी भरी और उसे खींचकर अपनी बांहों में जकड़ लिया।

"बट यू आर स्मार्टर!" माया ने प्रत्युत्तर में कहा।

थोड़ी ही देर में दोनों ने मिलकर जाने की तैयारी आरम्भ कर दी। माया ने प्रताप के कपड़ों को संवारकर रखना शुरू किया तो प्रताप नहाने के लिए बाथरूम में चला गया। शेष रात अब वह हवाई अड्डे

रेस्तरां में बिताना चाहता था। वह सोचता था कि वहां शायद बलराज की गिद्ध-दृष्टि न पड़ सके!

बाथरूम से लगातार प्रताप का स्वर सुनाई दे रहा था। वह फव्वारे के नीचे नहाता हुआ किसी न किसी वस्तु के बारे मे बताता जा रहा था, जिसे वह अपने साथ ले जाना चाहता था। बाथरूम के शीशों पर धुंध-सी जम गई थी। माया ने उसे बाहर की सर्दी के बारे मे कहा तो वह चिल्लाकर बोला—"बाहर तुम्हारे प्यार की गरमी जो रहेगी!" यह कहकर वह थोड़ा हंस दिया और फिर बच्चों की तरह एक अंग्रेज़ी धुन गाने लगा। उसकी बात सुनकर माया थोड़ी देर के लिए अपने भय को भूल गई।

अचानक फव्वारे का स्वर तेज़ हो गया और प्रताप का स्वर उस ओर मे घुटकर रह गया। और फिर वह बिलकुल शांत हो गया। माया चुपचाप उसका सामान ठीक करती रही।

तभी उसकी दृष्टि उन कागजो पर पडी, जो प्रताप के पिता के नाम थे। उसने जल्दी-जल्दी उन्हें पढा। इस जानकारी ने उसकी आंखों की चमक को बढा दिया। उसके दिल मे गुदगुदी-सी होने लगी। फिर उसने उन कागजो को कपडो की तह मे जमा दिया।

अभी वह सूटकेस बन्द कर ही रही थी कि एक आहट ने उसे चौंका दिया। वह भयभीत-सी इधर-उधर देखने लगी। किन्तु वहां कोई न था। वह यह सोचकर कि बाहर कोई जगली जानवर होगा, दुबारा काम में व्यस्त हो गई। फिर नजर उठाकर उसने बाथरूम की ओर देखा। फव्वारे का स्वर बहुत देर पहले थम चुका था। माया ने प्रताप के कपड़े बाथरूम के बाहर रख दिए। तभी वह एक विचित्र-सी आवाज सुनकर उछल पड़ी। उसे लगा जैसे प्रताप की सांस पानी मे घुटी जा रही हो। 'शराब के नशे में कहीं वह अभी तक टब मे न पडा हो,' सोचकर उसने प्रताप को पुकारा। लेकिन उसे कोई उत्तर न मिला। माया एकाएक भयभीत हो उठी। उसने बाथरूम के दरवाजे को ज़ोर से खटखटाया और जब इसका भी

कोई प्रभाव न हुआ तो वह एकदम कांप उठी।

कई बार पुकारने पर भी प्रताप ने कोई उत्तर न दिया तो माया ने बौखलाकर अंगीठी के पास रखी सलाख को उठा लिया और उससे बाथरूम के शीशों को तोड़ डाला। फिर तेज़ी से अन्दर की चटखनी खोलने के लिए उसने हाथ बढ़ाया।

इससे पहले कि वह चटखनी खोल पाती, किसीने चटखनी को खोला और धीरे-धीरे दरवाज़े को भी सरकाने लगा। यह देखकर माया आश्चर्यचकित-सी खड़ी रह गई। फिर यह सोचकर कि शायद प्रताप मज़ाक कर रहा है, उसका सारा भय जाता रहा। दरवाजा खुलते ही वह आगे की ओर लपकी, किन्तु एक चीख मारकर वहीं की वहीं खड़ी रह गई।

दरवाज़े में प्रताप के बजाय बलराज खड़ा था। उसकी आंखों में उबलती शैतानियत और होंठों पर फैली विषैली मुस्कान ने माया के शरीर को बर्फ कर दिया। बलराज चुपचाप अपनी पत्नी की ओर बढ़ा और पूरे ज़ोर से उसके गाल पर एक तमाचा जड़ दिया।

"मक्कार, हरामजादी, कुतिया···स्त्री-धर्म को तूने अपनी बेवफाई से कलंकित कर दिया और अब व्यापार में भी धोखा देना चाहती है!"

"प्रताप!" माया ने अपनी रक्षा के लिए प्रताप को पुकारा। किन्तु कोई उत्तर न पाकर वह बाहर की ओर लपकी। तभी बलराज ने झपटकर उसे पकड़ लिया और उसके बालों को खींचता हुआ उसे बाथरूम में ले गया और फिर उसे टब की ओर धकेल दिया। टब में प्रताप की लाश पड़ी थी और पानी के बुलबुले अन्तिम सांसों की तरह धीरे-धीरे बहे जा रहे थे। सुनसान रात में बुलबुलों की आवाज़ मौत के नक्कारे की तरह माया के मस्तिष्क को झंझोड़ने लगी।

वह चुपचाप कभी अपने पति को और कभी प्रताप की लाश को देख रही थी। प्रताप, जो कुछ देर पहले बच्चों की तरह थिरक

रहा था, टब में निर्जीव पड़ा था।

"यह तुमने क्या कर दिया, बलराज ?" माया ने कांपती आवाज़ में कहा।

"गुनाह की उन परछाइयों को हमेशा के लिए मिटा दिया, जो हमारे बीच दीवार बनकर खड़ी थीं।"

"अब···अब क्या होगा ?"

"डरो नहीं। तुम्हारे इरादों में कोई रुकावट न आएगी। तुम कल सुबह के हवाई जहाज़ से ही लन्दन जाओगी। अन्तर केवल इतना रहेगा कि प्रताप के स्थान पर बलराज तुम्हारे साथ होगा।"

वह अपने पति की यह बात सुनकर झेंप गई और जब दृष्टि उठाकर उसने उसकी ओर देखा तो बलराज के होंठों पर मुस्कान थिरक रही थी। आशाओं की लाली ने उसके चेहरे की भयानकता को थोड़ा कम कर दिया था। माया धीरे-धीरे बलराज की बांहों में समा गई।

बाहर हवा की सनसनाहट प्रति क्षण बढ़ती जा रही थी।

१५

सारा घर छान डालने पर भी नीलू न मिली तो समीर ने जुगनू से पूछा—"नीलू कहां है ?"

"मुझको नहीं पता।"

"घर के सब नौकर भी यही कहते हैं कि उन्होंने नीलू को कहीं नहीं देखा। शाम से वह गायब है। आखिर किसीको तो पता होना चाहिए कि वह कहां गई !" समीर ने झुंझलाकर कहा।

"बस्ती की ओर···माली कह रहा था।" दीवान साहब ने आते हुए कहा।

"और क्या कहा है उसने ?"

"बस इतना कि शाम को उसने उस अंधी को बस्ती की ओर जाते देखा था।"

"लेकिन इतनी ठंड में वह गई क्यों ?" कहते हुए समीर परेशान हो उठा।

दीवान साहब और उनकी बेटी ने उसकी व्याकुलता को अनुभव किया। वे अभी समीर के बारे में सोच ही रहे थे कि सामने पूजाघर से रानी मां बाहर निकलीं। उन्हें देखते ही समीर उनके निकट जा पहुंचा और बोला—"मां, नीलू कहीं नहीं दिखाई दे रही।"

"वह चली गई।" रानी मां ने तनिक रुककर कहा।

"कहां ?"

"अपने पति के यहां।"

रानी मां का उत्तर सुनते ही समीर पर जैसे बिजली गिर

पड़ी। हृदय की धड़कन जैसे रुक गई। वह पथराई ग्राखों से रानी मा की ओर देखने लगा। रानी मा ने यह कहकर जैसे उसकी ग्रभिलाषाग्रों के महल को धराशायी कर दिया था। किन्तु समीर को ग्रभी तक उनकी बात पर विश्वास न ग्रा रहा था।

दीवान साहब और जुगनू भी अब उनके निकट ग्रा गए।

"नहीं मां, कह दो कि यह झूठ है।" वह एकदम चिल्ला उठा।

"रात को दिन कहने से वह दिन नहीं हो जाता, समीर!" रानी मा ने शांत स्वर में कहा—"नीलू का विवाह बचपन में ही हो चुका था, लेकिन उसका ग्रन्धापन उसकी राह में ग्रा गया ग्रौर उसका घर न बस सका। आज वह अपने घर लौट गई। शायद उसे विश्वास हो गया है कि अब वह कभी नहीं देख सकेगी।"

"लेकिन उसने यह बात हमसे छिपाई क्यों?"

"ताकि हमारी निगाहों से गिर न जाए।" रानी मा ने कहा—"वह तो ग्राज तक इसी ग्राशा में जी रही थी कि अगर ग्राखों को प्रकाश मिल गया तो अपने पति के चरणों की धूल बन जाएगी।"

"हां, यह बात तो उसने मुझसे भी कही थी।" जुगनू ने झिझकते हुए धीरे से कहा।

समीर ने पलटकर उसकी ओर देखा ग्रौर चिल्लाकर कह उठा—"तुमने तो मुझसे कभी नहीं कहा था।"

"डरती थी कि तुम मुझे गलत न समझ बैठो।"

"तुम चाहती हो कि ग्राज मैं तुम्हारी बात पर विश्वास कर लूं। मुझे तो ऐसा लगता है कि मा को भी तुम्हीं ने पट्टी पढ़ाई है।"

"नहीं समीर, इसको दोष मत दो।" रानी मा ने जुगनू का बचाव करते हुए कहा—"यह तो हमेशा उसका ध्यान रखा करती थी।"

समीर सोच नहीं पाया कि रानी मा से कहे तो क्या कहे।

"उसे भूल जाओ, समीर!" उसे चुप देखकर दीवान साहब ने

कहा—"तुमने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया और राजा साहब के पाप का प्रायश्चित्त भी हो गया। भगवान ने शायद तुम्हारी सुन ली जो आज अन्धी नीलू को उसके पति ने स्वीकार कर लिया।"

किन्तु समीर उन सबकी बातों पर विश्वास न कर सका और उस अंधेरी रात में नीलू को ढूंढ़ने के लिए बस्ती की ओर चल पड़ा। रानी मां और दीवान साहब के लाख समझाने पर भी वह न रुका। उसे उनकी बातों में धोखे की गंध आ रही थी।

बड़ी देर तक वह नीलू को बस्ती में इधर-उधर खोजता रहा, लेकिन वह उसे कहीं भी दिखाई न दी। आधी रात बीते जब वह घर लौटा तब सभी जाग रहे थे। रानी मां ने उससे कुछ कहना चाहा, किन्तु कुछ सोचकर चुप रह गईं। समीर निराश-सा अपने कमरे की ओर चला गया।

रात पहले की तरह खामोश हो चुकी थी। कोहरा धीरे-धीरे छंट रहा था। चांद की किरणों ने वातावरण को प्रकाश से भर दिया था और हर चीज़ निखरी हुई दिखाई दे रही थी।

सरदी की उस सुनसान रात में नीलू उसी पत्थर पर बैठी आस-पास के दृश्य को बड़े गौर से देख रही थी। पहले उस दृश्य को वह कल्पना की आंखों से देखा करती थी। आज भी उसे समीर की पहली मुलाकात याद थी, जब वह अंधी थी। तब समीर उसके कितना निकट था, और आज जब वह देख सकती थी तब वह उससे कितना दूर हो गया था!

वह हवेली को सदा के लिए अलविदा कह आई थी। वह यह अच्छी तरह जानती थी कि ऐसा करके उसने किसीके विश्वास को ठेस पहुंचाई है, किसीकी भावनाओं का गला घोंटकर उसके हृदय में पीड़ा भर दी है। लेकिन वह लाचार थी। अपने प्यार के लिए वह हवेली के उपकार को भूल जाने के लिए तैयार न थी। आज वह अपनी भावनाओं और आशाओं को समाप्त करने का निर्णय

करके ही हवेली से वाहर निकली थी।

किन्तु वह इस उत्पीड़न के साथ जीना भी न चाहती थी। वह अपने जीवन को समाप्त कर देना चाहती थी। और इसीलिए वह अपने-आपको उस झील मे समा देने के लिए वहां आ पहुची थी।

चांद के झिलमिलाते प्रकाश मे एक वार फिर उसने उस झील को गौर से देखा। दूर-दूर तक एक भयानक सन्नाटा छाया हुआ था। सभी कुछ वीरान था, ठीक उसके जीवन की तरह। झील की गहराई भी जैसे आज उसे भयभीत करने की कोशिश कर रही थी—मानो वह उसके इरादो को पहले से ही भाप गई हो।

नीलू अभी इन्ही विचारों मे डूबी हुई थी कि समीप की झाड़ियो में खड़-खड़ की आवाज हुई। वह उस आवाज को सुनकर तुरन्त एक पेड के पीछे छिप गई और आने वाले का इतजार करने लगी। वह आवाज सूखे पत्तो को रौंदती हुई झील की ओर वढ रही थी। थोडी देर के वाद उसे एक छाया दिखाई दी, जो झील के किनारे आकर रुक गई।

उस छाया को देखकर नीलू के हृदय की धडकनें वढ गईं; किन्तु वह सास रोके खडी रही और आने वाले को पहचानने का प्रयत्न करने लगी। तभी उसके मानस-पटल पर एक आकृति उभरी। वह माया को पहचान गई। माया को उसने प्रताप के साथ देखा था। माया वहा चुपचाप खडी चोर निगाहो से इधर-उधर देख रही थी। इतनी रात गए माया को वहां देखकर नीलू के हाथ-पैर कांपने लगे। वह सोचने लगी कि क्या माया भी उसकी तरह···तभी माया ने हाथ हिलाकर सकेत किया तो नीलू चौक पड़ी। झाडियो के पीछे फिर खडखडाहट हुई और एक और छाया वाहर निकली। माया ने आगे वढकर उसको सहारा दिया। आने वाला कोई मर्द था, जो अपने कधो पर एक वोझा उठाए हुए था। नीलू ने गौर से देखा तो उसे लगा कि उसके कधो पर कोई वेहोश आदमी है। वह उनकी ओर आते

फाड़-फाड़कर देखने लगी।

नीलू का शरीर बुरी तरह कांप रहा था, लेकिन वह चुपचाप उनकी गतिविधियों को देखे जा रही थी। वे एक-दूसरे को संकेतों से कुछ समझा रहे थे। नीलू पेड़ों की छाया में उनसे दूर जाने के लिए मुड़ी, पर पत्तों की आवाज़ होते ही वहीं रुक गई।

उन दोनों को जब विश्वास हो गया कि आसपास कोई प्राणी नहीं है तो वह अजनबी उस बेहोश आदमी को उठाए झील की ओर बढ़ा। माया भी उसे सहारा देती हुई आगे बढ़ने लगी। थोड़ी दूर जाकर अचानक दोनों रुक गए। निखरी चांदनी में दोनों की सूरतें अब स्पष्ट दिखाई दे रही थीं। उस व्यक्ति को नीलू ने आज से पहले कभी न देखा था, किन्तु वह उसे पहचानने का असफल प्रयास करने लगी।

तभी माया ने आगे बढ़कर उसका बोझ हल्का करने का प्रयत्न किया। दोनों ने मिलकर उस बेहोश आदमी को अपनी बांहों का सहारा दिया और झील में उतर गए।

यह देखते ही नीलू के मुंह से एक हल्की-सी चीख निकल गई। नीलू की चीख सुनकर उन लोगों के कदम डगमगाए और वह बेहोश शरीर उनके हाथों से फिसल गया। किन्तु नीलू की तेज़ निगाह से उसका चेहरा न छिप सका। नीलू ने उसे पहचान लिया। वह शरीर प्रताप का था।

अब नीलू वहां खड़ी न रह सकी। उसने भागना शुरू कर दिया। किसीको भागते देखकर वह अजनबी उसका पीछा करने लगा। झाड़ियों से टकराती हुई नीलू बस्ती की ओर भाग रही थी। पीछे-पीछे वे दोनों भी भागे आ रहे थे। कुछ ही देर में उस अजनबी ने नीलू को आ दबोचा। एक भोलीभाली लड़की को देखकर पहले तो उसे आश्चर्य हुआ, फिर वह उसे और भी मज़बूती से पकड़ते हुए चिल्लाया—"कौन हो तुम?"

"एक लड़की।"

"यह तो मैं भी देख रहा हूं। नाम क्या है?"

"नीलू।"

"यहां क्या कर रही हो?"

"कुछ नहीं, बस···योंही···।" कहते-कहते अचानक वह रुक गई। उसने अपनी आंखों को पथरा लिया और माया की ओर देखने लगी, जो अभी-अभी आकर उसके सामने खड़ी हो गई थी।

उसे पहचानते ही माया कह उठी—"अरे, यह तो अंधी है!"

"हां, बीबीजी, मैं ही हूं···अंधी नीलू···।"

"तू अंधी है तो हमे देखकर चीखी क्यों?" अजनबी ने पकड़ ढीली करते हुए प्रश्न किया।

"हां, बता, तू चीखी क्यों?" माया ने भी पूछा।

"मुझे लगा···मुझे लगा कि कोई···।"

"हां, हां बोल।"

"ऐसा लगा कि कोई आत्महत्या करने के लिए झील में कूद पड़ा है···बस मेरे मुंह से चीख निकल गई!" नीलू ने बात बनाई।

यह सुनते ही माया के चेहरे की गम्भीरता दूर हो गई और वह खिलखिलाकर हंस पड़ी। नीलू उसकी इस हंसी का कोई अर्थ न निकाल सकी तो पथराई दृष्टि से उसकी ओर देखने लगी। माया ने नीलू के चेहरे पर सरक आई लट को संवारते हुए कहा—"तू डर गई थी, क्यों? अरी पगली, वह तो मैंने पत्थर फेंका था झील में।"

"तो वह पत्थर था! आप कहती हैं तो मान लेती हूं, बीबी जी!" कहते-कहते नीलू भी तनिक हंस दी—"अंधी हूं, इसीलिए···!" फिर वह पलटकर उस पगडंडी की ओर हो ली, जो बस्ती की ओर जाती थी।

वे दोनों थोड़ी देर तक उसे जाते हुए देखते रहे। कुछ ही देर में नीलू उनकी दृष्टि से ओझल हो गई तो माया बोली—"मैं तो डर ही गई थी, बलराज!"

बलराज के चेहरे पर अभी भी भय की परछाई मंडरा रही थी।

"उसकी चीख सुनकर तो मैं भी घबरा गया था।" वह बोला।

"बेचारी अंधी है।"

"कहीं ऐसा तो नहीं, माया, वह हमें बना रही हो?"

"नहीं, मैं उसे जानती हूं। प्रताप के भाई समीर के टुकड़ों पर पलती है। आजकल समीर की मंगेतर की आंखों का कांटा बनी हुई है।"

"क्यों?"

"वह इस अंधी से प्यार कर बैठा है।"

"तुमसे किसने कहा?"

"उसीने, जिसके प्यार को तुमने सदा के लिए झील में सुला दिया है।"

बलराज को अपनी पत्नी की इस बात पर क्रोध तो बहुत आया, किन्तु वह चुप रह गया। उसने माया की ओर उखड़ी-उखड़ी दृष्टि से देखा और फिर झील की ओर मुड़ गया। माया भी उसके पीछे चल दी।

झील में उतरकर बलराज ने प्रताप की लाश को झील की गहराई के सुपुर्द कर दिया। वहां फिर पहले जैसा सन्नाटा छा गया।

झील की गहराई में एक पापी समा गया, किन्तु नीलू के मस्तिष्क पर अभी तक उसकी आकृति छाई हुई थी। थोड़ी ही दूरी पर पत्थरों की ओट में छिपी वह झील की ओर देख रही थी, जिसमें प्रताप की लाश को डुबो दिया गया था।

वह भयभीत थी और सोच नहीं पा रही थी कि क्या

करे। एक बार उसके मन में आया कि हवेली में लौट जाए और रानी मां को इस सम्बन्ध में बता दे, किन्तु अपनी लाचारियों का ध्यान आते ही वह ऐसा करने से रुक गई। वह अपनी आंखों के रहस्य को प्रकट करने के लिए तैयार न थी। फिर उसने सोचा कि जाकर तमाम बस्ती को जगा दे और हत्यारों को पकड़वा दे, किन्तु यह साहस भी वह न कर सकी। उसकी लाचारी उसके पांव में बेड़ी बनकर रह गई और वह अपने कर्तव्य का पालन न कर सकी।

अचानक ही उसे डाक्टर टंडन का ध्यान आ गया जो उसकी आंखों के रहस्य से परिचित था। 'शायद वह इस गुत्थी को सुलझा दें।' नीलू ने मन ही मन सोचा और डाक्टर टंडन के यहां जाने के लिए उत्सुक हो उठी। वह जानती थी कि प्रताप और समीर के बीच दुश्मनी थी और प्रताप की हत्या का दोष समीर पर भी लग सकता था। यह सोचते ही वह कांप गई और निर्जन रात में ही शहर की ओर चल पड़ी।

जब वह डाक्टर टंडन के यहां पहुंची तब रात अपनी आखिरी सांसें ले रही थी। नीलू ने डरते-डरते अस्पताल में कदम रखा। वह डाक्टर की आदतों से परिचित थी। सूरज निकलने से पहले जाग जाना और फिर बाग में जाकर फूल-पौधों को पानी देना डाक्टर का दैनिक क्रम था। इसका ध्यान आते ही वह सीधी बाग की ओर चल दी।

नीलू ने ठीक ही सोचा था। डाक्टर साहब पौधों को पानी दे रहे थे। उनकी दृष्टि जैसे ही नीलू पर पड़ी, वह चकित-से खड़े रह गए। फिर जल्दी से उन्होंने नल बंद किया और नीलू की ओर बढ़े। उसके चेहरे की थकान और घबराहट को भांपते ही उन्होंने कहा—"क्या बात है, नीलू ··· अचानक यहां कैसे ?"

किन्तु नीलू कोई उत्तर नहीं दे पाई। उसके पैर लड़खड़ाए और वह बेहोश हो गई। डाक्टर टंडन ने लपककर उसे संभाल लिया

और बांहों में उठाकर अंदर ले गए।

नीलू को जब होश आया तब भी वह बड़ी परेशान दिखाई दे रही थी। कुछ कहने के लिए बार-बार उसके होंठ खुलते और फिर बन्द हो जाते।

"घबराओ नहीं नीलू, बताओ बात क्या है ?" डाक्टर ने उसका साहस बढ़ाने का प्रयत्न किया।

"डाक्टर साहब···" कहते-कहते नीलू के माथे पर पसीने की बूंदें उभर आईं।

"डाक्टर टंडन ने उसके माथे का पसीना पोंछा और कहा—"डरो नहीं। बताओ, हुआ क्या है ?"

"वही तो नहीं कह सकती, डाक्टर साहब !"

"क्यों ?"

"मजबूरी जो है।"

"कैसी मजबूरी ?"

"यही कि मैं देख सकती हूं, लेकिन किसीसे कह नहीं सकती कि मैंने क्या देखा···।"

"तो इसमें परेशानी क्या है, मैं आज ही यह सच्चाई प्रकट कर देता हूं।" डाक्टर ने कहा।

"नहीं डाक्टर साहब, इससे मेरी कठिन तपस्या भंग हो जाएगी।"

"ऐसी तपस्या का क्या लाभ जो शांति के स्थान पर पीड़ा भर दे जीवन में···!"

"आप नहीं समझेंगे डाक्टर साहब !" नीलू कांपती हुई बोली—"रात जो कुछ मेरी आंखों ने देखा, कहा नहीं जा सकता।"

"क्यों ?"

"क्योंकि वह एक लाश थी···झील में तैरती हुई···।"

"लाश ! किसकी ?"

"प्रताप की, कुंवरजी के सौतेले भाई की···।" फिर नीलू ने सब कुछ विस्तारपूर्वक बता दिया। डाक्टर टंडन चुपचाप उसकी बातों को सुनते रहे।

"लेकिन इसमें परेशान होने की क्या बात है ?" नीलू के चुप होने पर डाक्टर टंडन ने पूछा।

"मैं परेशान हूं कुंवरजी के लिए···दोनों के बीच दुश्मनी चल रही थी···मामला पुलिस में दिया जा चुका है···प्रताप की मौत कहीं···।"

"तुम्हारा मतलब है कि···।"

"कहीं उनके सम्मान पर कलंक न लग जाए।"

"लेकिन वे लोग थे कौन ?"

"एक औरत और एक मर्द···।"

"पहचान सकती हो उन्हें ?"

"औरत को पहचानती हूं।"

"कौन थी वह ?"

"अक्सर प्रताप के साथ रहती थी। कुंवरजी भी उसे पहचानते हैं।"

"कौन हो सकती है वह ?" पूछते हुए डाक्टर टंडन के माथे पर परेशानी के चिह्न उभर आए। फिर उन्होंने टेलीफोन का रिसीवर उठा लिया और पुलिस का नम्बर घुमाने लगे। तभी नीलू ने उठकर कनेक्शन काट दिया और बोली—"क्या पुलिस को जरूर बताना होगा ?"

"हां, हमें यह बात छिपानी नहीं चाहिए।"

"तो वचन दीजिए, आप इसमें मेरा नाम नहीं आने देंगे···अनर्थ हो जाएगा।"

"लेकिन यह कैसे हो सकता है ?"

"यह मैं नहीं जानती।" नीलू ने मुंह फेरकर कहा—"अगर पुलिस को बताना होता तो मैं आपके पास ही क्यों आती !"

डाक्टर टंडन ने रिसीवर रख दिया और सोच में डूब गए। वह नीलू की लाचारी को भी समझते थे और अपने कर्तव्य को भी। वह जानते थे कि यह बात पुलिस की आंखों से अधिक देर तक न छिपी रहेगी। उन्होंने जेब से सिगरेट का पैकिट निकाला और एक सिगरेट सुलगाकर लम्बे-लम्बे कश लेने लगे।

तभी नीलू की दृष्टि सामने टंगे एक चित्र पर पड़ी। वह अचम्भित-सी उस चित्र को देखने लगी। फिर बोली—"ये लोग कौन हैं?"

डाक्टर टंडन ने चौंककर इधर-उधर देखा और कहा—"कहां?"

"चित्र में···।"

"मेरा भतीजा और उसकी बीवी···।" कहकर डाक्टर टंडन तनिक रुके, फिर बोले—"कुछ दिन पहले मेरे भतीजे की मृत्यु हो गई एक हवाई दुर्घटना में।"

"फिर यह कैसे हो सकता है कि···!'

"क्या?"

"आपके भतीजे की बीवी प्रताप की हत्या में कैसे शामिल हो सकती है!"

"यह चित्र उनसे···"

"एकदम मिलता है।"

यह सुनते ही डाक्टर टंडन के हाथ से सिगरेट छूट गई और वह माया के बारे में सोचते ही परेशान हो उठे। माया की भोली आकृति उनके मानस-पटल पर उभरी और मिट गई।

"तुम्हें विश्वास है कि यह वही औरत है?"

"हां, डाक्टर साहब···।"

"और वह मर्द?"

"मैं उसे अच्छी तरह नहीं देख पाई।" नीलू ने कहा—"लेकिन उसका चेहरा भी इस चित्र से बहुत मिलता है।"

"लेकिन वह तो मर चुका है।" डाक्टर टंडन एक प्रकार से चीख उठे।

उनकी चीख सुनकर नीलू भयभीत हो गई और उन घटनाओं का परिणाम सोचकर कांप उठी।

नीलू की बात ने डाक्टर टंडन के मस्तिष्क में एक हलचल-सी पैदा कर दी थी। वह विश्वास नहीं कर पा रहे थे कि माया वहां हो सकती थी। अगर माया थी भी तो बलराज कहां से आ गया? फिर बलराज नहीं था तो वह मर्द कौन था ?

१६

सूर्य की किरणों ने कंगन घाटी को अभी छुआ ही था कि सारी वस्ती में एक खलवली-सी मच गई।

प्रताप की मौत ने विचित्र हलचल पैदा कर दी थी। हर जगह इसी बात की चर्चा थी। लोग अनुमान लगा रहे थे कि प्रताप ने नशे की अवस्था में झील में कूदकर आत्महत्या कर ली होगी। प्रताप की लाश के आसपास भीड़ जमा थी। लाश को एक सफेद चादर से ढककर झील के किनारे रख दिया गया था। पुलिस के सिपाही वहां पहरा दे रहे थे और भीड़ को उससे दूर रखने का असफल प्रयत्न कर रहे थे।

समीर जब दीवान साहब के साथ वहां पहुंचा तब भीड़ के कारण लाश तक पहुंचने में उसे थोड़ा समय लगा। वह प्रताप की लाश को देखकर दुखित हो उठा। प्रताप कितना भी बुरा था, लेकिन था तो उसका भाई ही। वह पलभर के लिए मूर्तिवत् खड़ा रह गया। ठाकुर वंश का वह पुत्र, जो कभी इस घाटी में हुकूमत किया करता था, आज वस्ती वालों की दृष्टि में एक तमाशा बना हुआ झील के किनारे निर्जीव पड़ा था। यह सोचकर समीर की आंखें गीली हो गईं। अंदर ही अंदर जैसे कोई उसके हृदय को मथने लगा। वह अधिक देर तक वहां खड़ा न रह सका। दीवान साहब ने उसके हृदय की दशा को भांपा तो दूसरी ओर ले गए।

थोड़ी ही देर में पुलिस की गाड़ी आ गई। जब समीर को यह पता चला कि लाश को पोस्टमार्टम के लिए भेजा जा रहा है, तब उसने दीवान साहब से कहा कि वह इस बात का प्रयत्न करें कि

[illegible] न हो और वह उन लोगों को शीघ्र से शीघ्र गिरफ्तार [illegible] विधिपूर्वक हो सके।

"मैं पुलिस के साथ जा रहा हूं और कोशिश करूंगा कि…"

"कोशिश नहीं, पूरी-पूरी कोशिश…।" समीर ने बीच में ही कहा।

"लेकिन प्रताप…?"

"आप मेरी चिन्ता न करें…जब कार्यवाही पूरी हो जाए तब मुझे सूचित कर दें। इससे पहले नहीं…।"

"ओह, मैं समझ गया।" दीवान साहब यह कहते हुए चले गए। पुलिस की गाड़ी प्रताप की लाश को ले गई। बस्ती वालों की भीड़ धीरे-धीरे छंटने लगी। हर किसीको प्रताप की असामयिक मौत पर दुख था और समीर के पास आकर दुख प्रकट करते और चले जाते। समीर से अधिक सहन न हुआ तो वह वहां से हट गया और चुपचाप झील के किनारे-किनारे चलने लगा।

सुबह की सुनहरी धूप झील की सतह को छू रही थी। धुएं के बादल वातावरण में फैलने लगे थे। समीर को लगा जैसे शान्त झील भी प्रताप की मौत पर दुख प्रकट कर रही हो। उसकी दृष्टि प्रताप के टैंक पर पड़ी तो उसके हृदय को एक धक्का-सा लगा। जिस जगह को वह कभी खाली न करना चाहता था, आज उसे वह एक हारे हुए सिपाही की तरह छोड़कर चला गया था। वह उसे अधिक देर तक न देख सका और पलटकर जाने लगा तो उसके कदम वहीं रुक गए। सामने डाक्टर टंडन खड़े थे। समीर से उनकी दृष्टि मिली तो वह चुपचाप उसके निकट चले आए।

"डाक्टर…!" समीर बोझिल स्वर में कह उठा।

"मुझे दुख है समीर, मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि प्रताप की मौत इस तरह होगी…।"

"जिन्दगी और मौत पर किसीका वश नहीं।" समीर ने अपनी आंखों में उमड़ आए आंसुओं को पोंछते हुए कहा—"लेकिन [illegible]

दुश्मनी के कारण हमारी बदनामी हो रही है, डाक्टर···!"

"वह क्यों ?"

"हर जगह बस एक ही चर्चा है कि मैंने उसकी जायदाद छीन ली थी इसीलिए प्रताप ने दुखी होकर आत्महत्या कर ली।"

"कौन कहता है कि उसने आत्महत्या की है ?"

"हर कोई।"

"लेकिन यह आत्महत्या नहीं, हत्या का मामला है।"

"डाक्टर···!" समीर चौंककर बोला।

"हां समीर, प्रताप ने आत्महत्या नहीं की। किसीने उसकी हत्या की है।"

"नहीं डाक्टर, ऐसा नहीं हो सकता।"

"क्यों नहीं हो सकता ?" डाक्टर टंडन ने उसे गहरी दृष्टि से देखते हुए कहा—"मेरे पास गवाह है इस बात का।"

यह सुनकर समीर के शरीर में एक थरथराहट-सी उत्पन्न हुई और वह चीखता हुआ पूछ उठा—"कौन है प्रताप का हत्यारा ?"

"बलराज···।"

"लेकिन वह तो मर चुका है।"

"वह एक धोखा था। वह अभी तक जीवित है।"

"कहां है वह ?"

"पुलिस की हिरासत में।" डाक्टर ने बताया—"उसके साथ माया भी है। जब दोनों भाग रहे थे तब पकड़े गए। हवाई जहाज से जा रहे थे।"

"और इस बात का गवाह कौन है ?"

"पुलिस को मैंने ही बलराज और माया के बारे में सूचना दी थी।" डाक्टर ने समीर के प्रश्न को उड़ाते हुए कहा—"अगर थोड़ी-सी देर हो जाती तो अपराधी भाग निकलते।"

"डाक्टर, आपका यह एहसान मैं जीवन-भर नहीं भूलूंगा।"

"यह एहसान मेरा नहीं, समीर !"

"तो फिर ?"

"एक लड़की का है।"

"कौन है वह ?"

"नीलू।"

नीलू का नाम सुनते ही समीर ने अनुभव किया जैसे किसीने उसके घाव को कुरेद दिया हो। वह पीड़ा से कराह उठा।

"प्रताप की लाश को जब उन दोनों ने मिलकर झील में फेंका तब नीलू छिपकर देख रही थी।" डाक्टर टंडन ने आगे बताया।

"लेकिन वह तो देख नहीं सकती। वह अंधी है···।"

"नहीं समीर, वह देख सकती है।"

यह सुनते ही समीर चकरा गया। उसे लगा, डाक्टर टंडन उसके साथ मज़ाक कर रहे हैं। वह विस्मित नेत्रों से उनकी ओर देखने लगा।

"क्या यह सच है, डाक्टर ?"

"हां, आपरेशन सफल था। नीलू तभी से सब कुछ देखती आ रही है।"

"फिर उसने इतना बड़ा झूठ क्यों बोला, डाक्टर ?"

"किसीके जीवन को आबाद देखने के लिए।"

"अब कहां है वह ?"

"वह हमेशा के लिए यह बस्ती छोड़कर चली गई है।"

"नहीं, डाक्टर, नहीं !" वह झुंझलाकर डाक्टर से उलझ बैठा। उसके हृदय में डाक्टर की यह बात नश्तर की तरह उतर गई।

उसकी चीख ने उसके विचारों की शृंखला को तोड़ दिया। जब उसकी दृष्टि उठी तब वह डाक्टर टंडन के बजाय चट्टान से

उलझ रहा था, जो निर्जीव होकर भी जैसे अतीत को दुहरा रही थी।

झील भी एकदम निस्तब्ध थी। सुनहरी धूप से उसकी सतह और भी चमकीली हो उठी थी। घाटी में छाए कोहरे के बादल हवा में तैरते हुए दूर चले जा रहे थे। उसके आंसुओं ने चट्टान पर जैसे मोती बिखेर दिए थे। वातावरण में एक विचित्र-सा सन्नाटा व्याप्त था। दूर-दूर तक कोई भी दिखाई नहीं दे रहा था।

नीलू की कल्पना और स्मृतियों के कोहरे के अतिरिक्त वहां कुछ भी न था। तभी समीर की दृष्टि उस पगडंडी की ओर उठ गई, जिसपर कभी नीलू के कदम पड़ा करते थे।

अचानक पेड़ों के पीछे से एक शोर उठा—बच्चों के मिले-जुले कहकहे और एक सुरीला स्वर। उसे लगा, जैसे सैकड़ों बांसुरियां एकसाथ गूंज उठी हों। तभी कहकहे शांत हो गए। वातावरण में फिर सन्नाटा छा गया। किन्तु थोड़ी देर बाद फिर एक सुरीली धुन ने उस खामोशी को भंग कर दिया। कोई बड़ी तन्मयता से दिलरुबा बजा रहा था।

समीर ने चारों ओर घूमकर देखा। लेकिन वहां कोई नहीं था। फिर वह धीरे-धीरे पेड़ों के झुंड की ओर चल दिया, जहां से दिलरुबा की आवाज़ आ रही थी। वह जैसे-जैसे निकट पहुंचता गया, वह धुन उसके हृदय में समाती गई। उसके रोंगटे खड़े हो गए। यह वही धुन थी, जिसे नीलू अक्सर बजाया करती थी।

वह जल्दी से उस पगडंडी को पार कर गया। दिलरुबा का स्वर और निकट आ गया। वह घास पर बिछी शबनम को पैरों तले रौंदता हुआ पेड़ों के झुंड से बाहर निकल आया। धुन का जादू उसे अपनी ओर खींचे चला जा रहा था।

तभी उसके कदम रुक गए। वह चुपचाप खड़ा उस लड़की को गौर से देखने लगा, जो एक गिरे हुए पेड़ के तने पर बैठी दिलरुबा बजा रही थी। कुछ बच्चों ने उसे चारों ओर से घेर रखा था। वे सब उस धुन को सुनने में तल्लीन थे। श्वेत साड़ी में लिपटी हुई वह

लड़की उस हरियाली में एक नर्गिस की कली की तरह खिल रही थी।

समीर कुछ देर तक उसे टकटकी बांधे देखता रहा और फिर बिना आहट किए उसकी ओर बढ़ा। उसके हृदय की धड़कन बेकाबू हुई जा रही थी। उसने अनुभव किया कि उसके हृदय में बरसों से दबी हुई चिनगारियां दहक उठी हैं।

किसी की आहट सुनते ही लड़की ने पलटकर समीर की ओर देखा। उसे देखते ही उसके हाथ थम गए और दिलरुबा की धुन टूट गई। पलभर में ही वहां एक सन्नाटा छा गया। दोनों एक-दूसरे की ओर देखते ही रह गए। नीलू को देखकर समीर ठगा-सा खड़ा था।

सुबह की निखरी हुई धूप में समीर ने नीलू के चेहरे को गौर से देखा, जिसपर पहले जैसी ताजगी विद्यमान थी, किन्तु बालों की एक सफेद लट आयु को प्रकट कर रही थी। नीलू के हाथों से दिलरुबा खिसककर नीचे जा गिरा। वह बड़ी मुश्किल से संभली और खड़ी हो गई।

"कुंवरजी!" उसके होंठ थरथराए।

"नीलू!"

अचानक सात बरसों के बाद अपने प्रियतम को सामने देखकर नीलू के हृदय की धड़कनें तेज हो गईं।

समीर दो कदम और आगे बढ़ गया। नीलू ने पलटकर उन भोले चेहरों को देखा, जो उस अजनबी को बड़े आश्चर्य से देख रहे थे। नीलू ने संकेत किया तो बच्चे तितर-बितर हो गए। वातावरण में उनकी चहचहाहट का एक शोर गूंज उठा।

"तुम···नीलू ही हो ना?" समीर ने पूछा तो नीलू के होंठों पर एक मुस्कान उभर आई।

"हां, मैं नीलू ही हूं।" वह बोली।

"और ये बच्चे······?"

"पिकनिक मना रहे हैं।" नीलू ने अपनी सांसों पर काबू पाते हुए कहा—"मैं एक स्कूल में बच्चों को संगीत सिखाती हूं और हर

बरस जाड़े के दिनों में बच्चों को साथ लेकर यहां आ जाती हूं···!"

"हर बरस ?"

"हां, हर बरस···अतीत के सपने देखने···"

"सच, नीलू ?"

"हां, कुंवरजी ! लेकिन आप तो यहां कभी नहीं आए। हर बार मैंने हवेली को सुनसान ही देखा···।"

"तुम्हारे जाने के बाद तो सभी कुछ सुनसान हो गया, नीलू !" कहकर वह एक अव्यक्त पीड़ा से कराह उठा।

"ऐसा मत सोचिए···!"

"तो तुमने मुझसे झूठ क्यों कहा ? अपने प्यार को इस तरह शोलों के हवाले क्यों कर दिया ?" समीर ने पूछा।

"और क्या करती ? यह भी सम्भव नहीं था कि मैं जुगनू के जीवन में अंधेरा भर देती···वह आपसे प्यार करती थी।"

"और तुम ?"

यह प्रश्न सुनते ही नीलू का शरीर थरथरा उठा। यह पूछकर समीर ने प्यार की दबी हुई आग को भड़का दिया था। वह अपने-आपमें सिमटकर रह गई। उसने समीर के प्रश्न का कोई उत्तर न दिया और दूर आकाश से मिलती हुई पगडंडी की ओर देखने लगी।

"बताओ नीलू, तुमने ऐसा क्यों किया ?"

"ऐसा न करती तो लोग मुझपर कलंक लगाते। वे कहते कि बस्ती की एक साधारण लड़की ने अंधी बनकर कुंवरजी की हमदर्दी पाई और फिर उन्हें अपने प्यार के जाल में फांस लिया···उनकी दौलत के लिए।" यह कहते-कहते उसका स्वर बोझिल हो उठा और वह अपने आंसुओं को पीने का असफल प्रयत्न करने लगी।

"नीलू, जुगनू ने तुमसे तुम्हारा प्यार तो छीन लिया, किन्तु पा न सकी। उसको मुझसे नहीं, बल्कि मेरी दौलत से प्यार था।" कहकर समीर रुका और नीलू की आंखों में झांकने लगा—"मां की इच्छा पूरी करने के लिए मैंने जुगनू को हवेली की बहू बना

दिया। एक अच्छे पति की तरह उसे हर सुख देने का प्रयास किया। तुम्हे भुलाकर उसे प्यार करने का प्रयत्न किया, लेकिन…।"

"लेकिन क्या ?"

"मैं प्यार को निभा न सका…।"

"कहा है जुगनू ?"

"जहा से कोई लौटकर नही आता।"

"……"

"हां, नीलू। वह एक बच्चों को जन्म देकर थोड़े दिनो बाद ही मौत के गले लग गई। इस बात को दो बरस बीत गए।"

यह सुनते ही नीलू के दिल मे एक हूक-सी उठी और फिर उसने अपनी पलकों को बन्द कर लिया। आसुओ की लड़िया उसके गालों पर फिसलने लगी।

समीर ने उसके दिल मे उमड़ते दर्द का अनुभव करते हुए उसके कापते शरीर को अपनी बाहों का सहारा दिया तो वह चौंक उठी। फिर अपनी भीगी पलकों को उठाकर समीर की ओर देखने लगी और उसे अनुभव हुआ कि समीर की आखो मे अभी तक उसके लिए प्यार की ज्योति जल रही है।

"कितना मुश्किल है नीलू, बिना चाहत के किसीको चाहते रहना…इसान जीवन मे बस एक बार ही तो प्यार कर सकता है!" समीर ने अचानक कहा।

यह सुनते ही नीलू बच्चों की तरह फूट-फूटकर रोने लगी। उसमे और सहन करने की शक्ति न रही और उसने लड़खड़ाकर समीर के कधे पर अपना सिर रख दिया।

नीलू समीर की बांहों मे सिमटी हुई अपनी उखड़ी हुई सासों पर काबू पाने का प्रयत्न कर रही थी और समीर अपनी पुरानी स्मृतियों मे डूबा हुआ न जाने क्या कुछ सोच रहा था। तभी हवा मे तैरते हुए कोहरे के एक बादल ने उन्हे ढक लिया।

"जानती हो, मैं उस बस्ती मे क्यों आया था ?" समीर ने

कहा।

नीलू ने समीर की ओर देखा।

"अपनी हवेली नीलाम करने।" समीर ने आगे कहा—"ताकि स्मृतियों की परछाइयां मस्तिष्क से सदा के लिए मिट जाएं।"

"और अब ?"

"अब जीवन-भर यहीं रहने का निर्णय कर लिया है मैंने।"

"क्यों ?"

"तुम्हारे दिलरुबा पर जो धुन थरथराती है, उसे अपने हृदय की धड़कनों में बसाने के लिए...।"

उसके दिल की धड़कन, जो आज तक एक तड़प बनी हुई थी, एकाएक शान्त हो गई। वृक्षों की डालियां मदमाती-सी झूम उठीं। वर्षों से शांत झील का पानी भी लहरें लेने लगा।

तभी नीलू ने अपना दिलरुबा उठा लिया और उसकी सुरीली धुन बर्फीली चोटियों से टकराकर घाटी में गूंजने लगी।

○ ○

मुद्रक : शिक्षा भारती प्रेस, शाहदरा, दिल्ली—३२

चांदी का घाव २·००
कार्निवाल २·००
एक वायलिन समन्दर के किनारे २·००
सितारों से आगे २·००
गंगा वहे न रात २·००
एक गधे की आत्मकथा १·००
ग़द्दार १·००
सपनों का क़ैदी १·००
प्यास १·००
यादों के चिनार १·००
मिट्टी के सनम १·००

ख्वाजा अहमद अब्बास

सात हिन्दुस्तानी २·००
बम्बई रात की बांहों में २·००

ए० हमीद

सपनों की बांहें २·००
डाक बंगला २·००
मैं फिर आऊंगी २·००
पीला उदास चांद २·००
पतझड़ के बाद २·००
फूल उदास हैं २·००
तूफान की रात २·००

इस्मत चुगताई

जंगली कबूतर २·००
दिल की दुनिया १·००

महेन्द्रनाथ

रात अंधेरी है २·००

मुल्कराज आनन्द

सात समुन्दर पार
शहीद

भवानी भट्टाचार्य

लद्दाख की छाया

नानकसिंह

कलाकार का प्रेम

राजेन्द्रसिंह बेदी

एक चादर मैली सी

कर्त्तारसिंह दुग्गल

सुवीरा

बलवंतसिंह

काले कोस
बासी फूल
सूना आसमान

बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्या

आनन्द मठ
चन्द्रशेखर
पाप की छाया
दुर्गेशनन्दिनी
रजनी

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

आंख की किरकिरी (सम्पूर्ण)
रवीन्द्र की श्रेष्ठ कहानियां
दो बहनें (सम्पूर्ण)
जुदाई की शाम

१'००

बहूरानी १'००

काबुलीवाला १'००

शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय

शरत् की श्रेष्ठ

कहानियां २'००

काशीनाथ २'००

दोराहा २'००

देवदास १'००

चरित्रहीन १'००

विराज बहू १ ००

गृहदाह १ ००

मझली दीदी :

बड़ी दीदी १'००

परिणीता १ ००

शुभदा १'००

पथ के दावेदार १'००

ब्राह्मण की बेटी १'००

देहाती दुनिया १'००

ताराशंकर वन्द्योपाध्याय

वेगम २'००

विभूतिभूषण वन्द्योपाध्याय

पथेर पांचाली २'००

टॉलसटॉय

नाच के बाद २ ००

प्रेम या वासना

(बड़ा संस्करण) २'५०

गोर्की

वे तीन २ ००

अर्नेस्ट हेमिंग्वे

पागल (कहानी-संग्रह) १ ००

शोलोखोव

दोन के किनारे २ ००

पियरे लुई

यौवन की आंधी २ ००

जार्ज आरवेल

१९८४ २ ००

आस्कर वाइल्ड

अपनी छाया २ ००

जीवनोपयोगी

मानसहंस

अमरवाणी

(बड़ा संस्करण) २'००

अनमोल मोती २'००

संतराम बी० ए०

सफलता के सूत्र १'००

जेम्स ऐलन

सफलता के ८ साधन

स्वेट मार्डेन

जैसा चाहो वैसा वनो (वड़ा संस्करण) २.००

सफल कैसे हों ? १.००

प्रभावशाली व्यक्तित्व १.००

सफलता का रहस्य १.००

ए० पी० परेरा

तीस दिन में सफलता १.००

उन्नति के उपाय

ठा० राजवहादुरसिंह

गांधीजी की सूक्तियां

हेलेन एलमिरा वेट

अंधेरे में उजाला

आचार्य विष्णुशर्मा

पंचतन्त्र (वड़ा संस्करण)

जीवनी : संस्मरण

जवाहरलाल नेहरू

मेरी कहानी ३.००

हिन्दुस्तान की कहानी ३.००

मिरियम गिलवर्ट

मोटरकार-निर्माता हेनरी फोर्ड १.००

यशपाल जैन

सावरमती का संत २.००

मन्मथनाथ गुप्त

भारत के क्रांतिकारी २.००

वे अमर क्रांतिकारी २.००

यशपाल

फांसी के फंदे तक २.००

वे तूफानी दिन २.००

महावीर [illegible]

लालवहादुर [illegible]

डॉ० [illegible]

युग-पुरुष नेहरू

वीर सावरकर

१८५७ का स्वत[illegible] संग्राम

काला पानी

विजयचन्द

प्रसिद्ध व्यक्तियों [illegible] प्रेम-पत्र

खान अब्दुल [illegible]

आत्मकथा

स्वेट मार्डेन		उन्नति के उपाय	१·००
जैसा चाहो वैसा बनो		ठा० राजबहादुरसिंह	
(बड़ा संस्करण)	२·००	गांधीजी की सूक्तियां	१·००
सफल कैसे हों ?	१·००	हेलेन एलमिरा वेट	
प्रभावशाली व्यक्तित्व	१·००	अंधेरे में उजाला	१·००
सफलता का रहस्य	१·००	आचार्य विष्णुशर्मा	
ए० पी० परेरा		पंचतन्त्र	
तीस दिन में सफलता	१·००	(बड़ा संस्करण)	२·००

जीवनी : संस्मरण

		महावीर अधिकारी	
[जव]ाहरलाल नेहरू		लालबहादुर शास्त्री	
[मे]री कहानी	३·००	डॉ० गोविन्ददास	
[हि]न्दुस्तान की कहानी	३·००	युग-पुरुष नेहरू	
[व]िरियम गिलबर्ट		वीर सावरकर	
मोटरकार-निर्माता		१८५७ का स्वतंत्रता-	
हेनरी फोर्ड	१·००	संग्राम	
यशपाल जैन		काला पानी	
साबरमती का संत	२·००	विजयचन्द	
मन्मथनाथ गुप्त		प्रसिद्ध व्यक्तियों के	
भारत के क्रांतिकारी	२·००	प्रेम-पत्र	
वे अमर क्रांतिकारी	२·००	खान अब्दुल गफ़्फ़ा[र]	
यशपाल		अ[illegible]	
[फ]ांसी के फंदे तक	२·००		
	२·००		

जासूसी : रोमांचकारी

कर्नल रंजीत

हत्यारे का हत्यारा	२·००
मौत का जाल	२·००
समार के प्रसिद्ध जासूस और उनके कारनामे	२·००
भयकर मूर्ति	२·००
वह कौन था	२·००
खून के छींटे	२·००
मौत के व्यापारी	२·००
विचित्र हत्यारा	२·००
टेढ़ी उंगलिया	२·००
खूनी कगन	२·००
सांप की बेटी	२·००
भयानक बदला	२·००
शैतान की आंखें	२·००
नीले निशान	२·००
जिन्दा लाशें	२·००
चिड़िया का गुलाम	२·००
पीले विच्छू	२·००
हत्या का रहस्य	२·००
छः लाशें	१·००
तीसरा खून	१·००
अंधेरा बंगला	१·००

चन्दर

नीले फीते का जहर	२·००
फरार	२·००
तरगों के प्रेत	२·००
पीकिंग की पतग	२·००
चीनी षड्यन्त्र	२·००
चीनी सुन्दरी	२·००
मौत की घाटी मे	२·००

रामकुमार भ्रमर

चम्बल के हत्यारे	२·००
पुतली बाई	२·००
डाकुओं के बीच	१·००

हरिमोहन शर्मा

राजनैतिक हत्याए	२·००

सत्यदेवनारायण सिन्हा

ये जासूस महिलाए	२·००

कुदन चन्दर

हागकांग की हसीना	१·००

प्रकाश पंडित

प्रेम और हत्या के रहस्यमय मुकदमे (बड़ा सस्करण)	२·००

स्वेट मार्डेन

जैसा चाहो वैसा वनो (वड़ा संस्करण) २·००

सफल कैसे हों ? १·००

प्रभावशाली व्यक्तित्व १·००

सफलता का रहस्य १·००

ए० पी० परेरा

तीस दिन में सफलता १·००

उन्नति के उपाय १·००

ठा० राजवहादुरसिंह

गांधीजी की सूक्तियां १·००

हेलेन एलमिरा वेट

अंधेरे में उजाला १·००

आचार्य विष्णुशर्मा

पंचतन्त्र (वड़ा संस्करण) २·००

जीवनी : संस्मरण

जवाहरलाल नेहरू

मेरी कहानी ३·००

[illegible]दुस्तान की कहानी ३·००

[illegible] गिलवर्ट

मोटरकार-निर्माता हेनरी फोर्ड १·००

यशपाल जैन

सावरमती का संत २·००

मन्मथनाथ गुप्त

भारत के क्रांतिकारी २·००

वे अमर क्रांतिकारी २·००

यशपाल

फांसी के फंदे तक २·००

वे तूफानी दिन २·००

महावीर अधिकारी

लालवहादुर शास्त्री १·००

डॉ० गोविन्ददास

युग-पुरुष नेहरू १·००

वीर सावरकर

१८५७ का स्वतंत्रता-संग्राम २·००

काला पानी २·००

विजयचन्द

प्रसिद्ध व्यक्तियों के प्रेम-पत्र २·००

खान अब्दुल ग़फ़्फ़ार खां

आत्मकथा २·०

जासूसी : रोमांचकारी

कर्नल रंजीत

हत्यारे का हत्यारा	२·००
मौत का जाल	२·००
समार के प्रसिद्ध जासूस ग्रौर उनके कारनामे	२·००
भयकर मूर्ति	२·००
वह कौन था	२·००
खून के छींटे	२·००
मौत के व्यापारी	२·००
विचित्र हत्यारा	२·००
टेढ़ी उंगलियां	२ ००
खूनी कगन	२·००
साप की वेटी	२ ००
भयानक वदला	२·००
शैतान की आंखें	२·००
नीले निशान	२ ००
जिन्दा लाशें	२·००
चिड़िया का गुलाम	२·००
पीले विच्छू	२·००
हत्या का रहस्य	२·००
छः लाशें	१·००
तीसरा खून	१·००
अंधेरा बंगला	१·००

चन्दर

नीले फीते का जहर	२·००
फरार	२·००
तरंगों के प्रेत	२·००
पीकिंग की पतंग	२·००
चीनी षड्यंत्र	२ ००
चीनी सुन्दरी	२·००
मौत की घाटी मे	२·००

रामकुमार भ्रमर

चम्बल के हत्यारे	२ ००
पुतली वाई	२ ००
डाकुओं के बीच	१·००

हरिमोहन शर्मा

राजनैतिक हत्याए	२ ००

सत्यदेवनारायण सिन्हा

ये जासूस महिलाए	२ ००

कृश्न चन्दर

हागकांग की हसीना	१·००

प्रकाश पंडित

प्रेम और हत्या के रहस्यमय मुकदमे (बड़ा संस्करण)	२·००

सेक्स : स्वास्थ्य

डॉ० लक्ष्मीनारायण शर्मा

वर्थ-कंट्रोल
(वड़ा संस्करण) २·००

स्त्री-पुरुष २·००

पति-पत्नी
(वड़ा संस्करण) २·००

सेक्स की समस्याएं २·००

विवाह के वाद
(वड़ा संस्करण) २·००

यौवन और स्वास्थ्य २·००

डाक्टर के आने से पहले
(वड़ा संस्करण) २·५०

सरल प्राकृतिक
चिकित्सा २·००

योगासन और स्वास्थ्य १·००

धर्मचन्द सरावगी

प्राकृतिक इलाज २·००

सातवलेकर

योग के आसन २·०

नाटक

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

वांसुरी १·००

कालिदास

शकुन्तला १·००

टेनेसी विलियम्स

यूजीन ओ'नील

कांच के खिलौने २·

ज्ञान-विज्ञान

पॉकेट अंग्रेज़ी-हिन्दी
कोश (पृष्ठ सं० ४००) ३·००

व्यावहारिक हिन्दी
शब्दकोश ३·००

विलियम एच० क्राउस

विज्ञान जगत १·००

अनु० अजय

कल क्या होगा? १

सावित्रीदेवी वर्मा

पकाइये-खाइये १

उदयनाराण तिवारी

जर्मनी : देश और निवासी

प्राणनाथ सेठ
न्यूयार्क से होनोलूलू २·००

प्रकाश दीक्षित
हस्त-रेखाएं १·००
भाग्य-रेखाएं १·००

विराज एम० ए०
सरल पत्र-व्यवहार २·००

रोजर बर्लिंगेम
विज्ञान के महारथी १·००

काव्य : शायरी

बच्चन
मधुशाला १·००
बच्चन के लोकप्रिय गीत १·००
निशा निमंत्रण १·००

महादेवी वर्मा
महादेवी के लोकप्रिय गीत १·००

सं० नीरज
फिर दीप जलेगा २·००
तुम्हारे लिए २·००
कारवां गुज़र गया १·००
नीरज के लोकप्रिय गीत १·००

सं० क्षेमचन्द्र 'सुमन'
हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ प्रेमगीत १·००
हिन्दी कवयित्रियों के प्रेमगीत १·००

सं० राबिन शॉ पुष्प
हिन्दी की लोकप्रिय हास्य-कविताएं १·००

रवीन्द्रनाथ ठाकुर
गीतांजलि १·००

कालिदास
मेघदूत १·००

साहिर लुधियानवी
गाता जाए बंजारा १·००
मेरे गीत तुम्हारे हैं १·००

फ़िराक़ गोरखपुरी
फूल और अंगारे १·००

सं० प्रकाश पंडित
शकील की ग़ज़लें २·००
शे'र-ओ-शायरी २·००
मयख़ाना २·००
हुस्न-ओ-इश्क़ २·००
सोज़-ओ-साज़ २·००
दीवान-ए-ग़ालिब २·००
उर्दू ग़ज़ल के नये रंग २·००
आज की उर्दू शायरी १·००
पाकिस्तान की उर्दू शायरी १·००
१९६६ की उर्दू शायरी १·००

पूरा विवरण अगले पृष्ठों पर——

हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा० लि० द्वारा संचालित 'घरेलू लाइब्रेरी योजना' की विशेषताएं

१—भारत के सर्वप्रथम बुक-क्लब, हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा० लि० द्वारा संचालित 'घरेलू लाइब्रेरी योजना' की स्थापना १९६२ में हुई थी।

२—पिछले आठ वर्षों में घरेलू लाइब्रेरी योजना ने दो लाख से अधिक अपने सम्मानित सदस्यों को कम मूल्य में सत्साहित्य उनके घर पहुंचाकर सन्तोषजनक सेवा की है। यह एक ऐसी योजना है जो न केवल हिन्दी बल्कि उर्दू तथा अन्य प्रादेशिक भाषाओं के लेखकों की रचनाएं और साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय लेखकों की चुनी हुई पुस्तकें हिन्दी में अपने सदस्यों को प्रतिमास उपलब्ध कराती है।

३—अन्य लाइब्रेरी योजनाएं केवल किस्से-कहानी आदि की पुस्तकें ही देती हैं, परन्तु हिन्द पॉकेट बुक्स द्वारा संचालित घरेलू लाइब्रेरी योजना उपन्यास, कहानी के अतिरिक्त जीवनोपयोगी पचास अलग-अलग विषयों की एक हज़ार से अधिक पुस्तकें पाठकों के चुनाव के लिए प्रस्तुत करती है। हिन्दी का ऐसा कोई प्रसिद्ध लेखक न होगा जिसकी उत्कृष्ट रचनाएं इस योजना द्वारा आप कम मूल्य में प्राप्त न कर सकें।

कृपया आज ही संलग्न कूपन काटकर

भेजिए और योजना के सदस्य बनिए

ये सारी सुविधाएं और लाभ 'घरेलू लाइब्रेरी योजना' के सदस्यों के लिए हैं—

हर महीने के पहले सप्ताह में सदस्यों को नौ रुपये मूल्य की उनकी मनपसन्द पुस्तकें केवल आठ रुपये की वी० पी० से भेजी जाती हैं। इस प्रकार प्रति मास एक रुपये का लाभ मिलता है।

ग्यारह महीने नियमित रूप से पुस्तकें मगाने पर बारहवी किस्त में आप चार रुपये मूल्य की अपनी पसन्द की अतिरिक्त पुस्तकें उपहार के रूप में बिना मूल्य लेने के अधिकारी होंगे। इस प्रकार वर्ष के अन्त में चार रुपये की पुस्तकों का अतिरिक्त लाभ।

प्रति मास लोकप्रिय सचित्र मासिक पत्र 'साहित्य संगम' निःशुल्क (अन्यथा 'साहित्य संगम' का वार्षिक चंदा ६ रुपये है)।

प्रति मास पैकिंग तथा डाक-खर्च सवा दो रुपये आता है। यह खर्च हम करेंगे। इस प्रकार एक वर्ष में सत्ताइस रुपये डाक-खर्च की आपको बचत होगी।

पहले महीने प्लास्टिक का बना हुआ एक रुपये मूल्य का पारदर्शक पुस्तक-रक्षक कवर बिना मूल्य।

अब आप स्वयं देखिए कि 'घरेलू लाइब्रेरी योजना' आपके लिए कितनी लाभप्रद है। आज ही सदस्य बनिए। प्रति मास नई से नई पुस्तकें, घर बैठे मंगवाइए।

कूपन के लिए कृपया यह पृष्ठ पलटिए→

दायीं ओर का कूपन काटें

• सदस्य कैसे बनें ?

आप दायीं ओर दिए कूपन पर अपना नाम, पूरा पता और अपनी पसंद की नौ रुपये मूल्य की पुस्तकों के नाम लिखकर भेज दें। पुस्तकों का चुनाव कूपन के पीछे दी हुई सूची में से कीजिए। यह कूपन हमारे यहां पहुंचते ही आप 'घरेलू लाइब्रेरी योजना' के सदस्य बन जाएंगे। हम आपको पहले पैकेट में नौ रुपये मूल्य की पुस्तकें, एक रुपये मूल्य का प्लास्टिक का पारदर्शक पुस्तक-रक्षक कवर, 'साहित्य संगम', बड़ी पुस्तक-सूची, सदस्यता-प्रमाणपत्र आदि सभी कुछ आठ रुपये में भेजेंगे। केवल पहली वी० पी० में सदस्यता-शुल्क के दो रुपये जोड़े जाएंगे। (ये दो रुपये आपकी अमानत के रूप में हमारे पास जमा रहेंगे।) इस प्रकार पहला पैकेट आपको दस रुपये देकर छुड़ाना होगा। उसके बाद, हर मास नौ रुपये की पुस्तकें केवल आठ रुपये की वी० पी० से भेजी जाएंगी।

कृपया पुस्तकों का चुनाव इस कूपन के पीछे दी हुई सूची में से करें—

सदस्यता कूपन

व्यवस्थापक,
घरेलू लाइब्रेरी योजना,
जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२

प्रिय महोदय,

मुझे घरेलू लाइब्रेरी योजना (पुस्तकालय) का सदस्य बना लें।

नीचे लिखी मेरी पसंद की नौ रुपये की पुस्तकें केवल आठ रुपये में भिजवा दें। वी० पी० में सदस्यता-शुल्क के दो रुपये भी जोड़ लें—कुल दस रुपये की वी० पी० भेजें। पहले पैकेट में 'साहित्य संगम', पुस्तक-सूची, सदस्यता-प्रमाणपत्र भी बिना मूल्य भेजें। वी० पी० आते ही छुड़ा ली जाएगी।

१..................................
२..................................
३..................................

केवल इस बार निम्नलिखित पुस्तकों में से अपनी पसन्द की नौ रुपये मूल्य की पुस्तकें चुनिए। भविष्य के लिए १,००० के लगभग उत्कृष्ट पुस्तकों की सूची तथा हर मास नई पुस्तकों की सूचना आपको मिलती रहेगी।

उपन्यास

एक रुपया सीरीज़

निर्मला — प्रेमचन्द
मैली चांदनी — गुलशन नंदा

दो रुपये सीरीज़

रेत का महल — कृश्न चन्दर
एक थी अनीता — अमृता प्रीतम
मैला आंचल — फणीश्वरनाथ रेणु
न जाने रीत — अश्क
दादा कामरेड — यशपाल
सुखदा — जैनेन्द्रकुमार
सुहाग के नूपुर — अमृतलाल नागर
ससुराल — शौकत थानवी
प्रायश्चित्त — आदिल रशीद
पर्दे की रानी — इलाचन्द्र जोशी

तीन रुपये सीरीज़

गोली — आचार्य चतुरसेन
मृगनयनी — वृन्दावनलाल वर्मा
धूप-छांव — गुरुदत्त
कटी पतंग — गुलशन नन्दा
कोई शिकायत नहीं — दत्त भारती

चार रुपये सीरीज़

वयं रक्षामः — आचार्य चतुरसेन
सोना और खून — आचार्य चतुरसेन

जासूसी उपन्यास

प्रत्येक का मूल्य दो रुपये

खून के छींटे — कर्नल रंजीत
चीनी सुन्दरी — चन्दर

कविता-शायरी

प्रत्येक का मूल्य दो रुपये

गीतांजलि — टैगोर
हुस्न-ओ-इश्क — प्रकाश पण्डित

विविध

प्रत्येक का मूल्य दो रुपये

आत्मकथा — अब्दुल ग़फ़्फ़ार खां
फांसी के फंदे तक — यशपाल
सफलता के आठ साधन — ऐलन
बर्थ-कंट्रोल — डा० लक्ष्मीनारायण

ऊपर दी हुई पुस्तकों में से अपनी मनपसंद नौ रुपये मूल्य की पुस्तकें चुनकर पीछे दिए कूपन में भर दें तथा उसे काटकर हमें भेज दें।